जीवन की रंगीन रेखाएँ

लेखक एवं सम्पादकः—

साहित्यरत्न श्री मनोहर मुनिजी महाराज

प्रकाशकः—

श्री धर्मदास जैन मित्र मण्डल, रतलाम.

श्री धर्मदास जैन मित्र मण्डल, खाचरौंद

प्रतियां १००० | अमूल्य | सं. २०२० सन् १९६३

अनुक्रमणिका
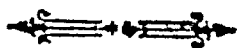
१ श्रद्धांजलि —मुनि श्री सुशीलकुमारजी म. …
२ जीवन की रंगीन रेखाएँ—साहित्य रत्न श्री मनोहर मु. म. १
३ एक मधुर स्मृति—श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री साहित्य रत्न ३६
४ मिष्ट वचनी मंत्री पं… —श्री समीरमुनि सुधाकर ४०
५ एक महकता पुष्प—श्री ललितकुमारीजी म. साहित्य रत्न ४५
६ जीवन के महान कलाकार—श्री हीरामुनिजी म. ५१
७ श्रद्धा के दो शब्द—श्री गणेशीलालजी म. सिद्धांत प्रभाकर ५४
८ मैं श्रद्धा के सुमन चढ़ाता (कविता)—श्री गणेशमुनिजी म. ५६
९ कृष्णमुनि इसलिये स्वर्ग सिधायो है (कविता) पं. श्री पुष्कर मुनिजी म. ५७
१० कृष्णलालाष्टकम्—बहुश्रुत पं. रत्न श्री घासीलालजी म. ५८
११ सुखद वे मुनि कृष्ण कहाँ गये—श्री उमेश मुनिजी म. अणु ६०
१२ कुण्डलियाँ—श्री मरुधर केसरी पं. मिश्रीमलजी म. ६२
१३ छन्द छप्पय आदि—मुनि श्री रूपचन्द्रजी म. ६३
१४ गुरुजी म्हारा… …हीरालाल त्रंबकलाल बोटाद ६५
१५ श्रद्धाञ्जलियाँ— … … … ६७
१६ प्रशस्ति— …. … …. ११४

द्रव्य सहायकों की शुभ नामावली

२००)	सेठ घासीलालजी पांचुलालजी	उज्जैन
१००)	,, भंडारी मोतीलालजी वापुलालजी	रायपुरिया
५०)	,, माणकलालजी हरकचंदजी रांका	उज्जैन
५१)	,, जड़ावचन्दजी सा. गांधी	रतलाम
५१)	,, मांगीलालजी लोढ़ा	रतलाम
३१)	,, मोयाचंदजी चांदमलजी खिवेसरा	खाचरौद
५१)	,, गुमानजी लखमीचंदजी नवलखा	,,
५१)	,, घंडारिया मीयाचन्दजी कस्तुरचंदजी	,,
५१)	,, रूपक्या चंपालालजी नगाजी	,,
२१)	,, खेमसरा हस्तीमलजी हीराचंदजी	,,
११)	,, भागीरथजी धानासुथा वाला	,,
१५)	,, नवलखा छोगमलजी	,,
११)	,, दलाल वालचंदजी	,,
७१)	,, रांका प्यारचंदजी मिश्रीमलजी	,,
११)	,, चोरड़िया नंदरामजी	,,
११)	,, वकील साहब बद्रीलालजी	,,
११)	,, सोभागमलजी वरखेड़ा वाला	,,
११)	,, कटारिया भेरुलालजी	,,

स्व. मंत्री मुनि श्री किशनलालजी म. सा.

श्रद्धांजलि

—••◈••—

श्रद्धेय मंत्री मुनि श्री किशनलालजी महाराज के संबंध में यह जान कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि उनका एक जीवन चरित्र प्रकाशित किया जा रहा है। यह तो स्वाभाविक है कि उनके जीवन के संबंध में कुछ संस्मरण लिखने के लिये मुझे पत्र लिखा जाय, मेरे और मंत्री मुनि श्रीजी महाराज के बीच में कैसे संबंध थे, और मेरे चिदाकाश पर आत्मीयता की जो गहरी बदलियें घिरी हुई हैं, उनको मैं श्रद्धांजलि के रूप में उपस्थित कर सकूं, उसके लिये इस पत्र को पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

सन् १९५५ की बात है, सबसे पहला परिचय महाराजजी के साथ मेरा उज्जैन में हुआ था। महाराजजी का सुन्दर शरीर, स्निग्ध-दृष्टि, भव्य-मुख, और लावण्यमय मुख मण्डल की आभा किसी भी नवागंतुक को अपनी ओर आकृष्ट करने में अत्यन्त समर्थ थी। उनका सहज और सरल-स्नेह गंभीर एवं मर्मभेदी चुटकियें और बातचीत के दौरान में व्यंगोक्तियां, एक आनन्द के वातावरण को उत्सृष्ट कर दिया करती थीं। मुझे आठ महीने उनकी सेवा-साहचर्य का और स्नेह-सानिध्य का अवसर प्राप्त हुआ है। मातृ एवं पितृ स्नेह का अमित वात्सल्य गरीयान गौरव और गंभीर विचारणा उनके जीवन की अपनी विशेषतायें थीं। प्रेम की थपकियों में जब वे कभी २ सीख दिया करते, वे उस समय शास्त्रीय चर्चा, सामाजिक संगठन, साधु-सेवा और विश्व की विचित्र व्यवस्था ही प्रायः उनके विषय रहा करते थे। सैद्धान्तिक और आध्यात्मिक तत्वों पर जो विचार-बिन्दु बरसाया करते थे वे आज मेरे जीवन की अमूल्य निधि बन गये हैं।

अल्हड़ जवानी को अनकल्पन के रंग में हर आदमी रंग सकता है, लेकिन बुढ़ापे को मस्ती के रंग में रंग देना यह किसी विशिष्ट चित्रकार का ही काम होता है। जीवन कला का पारखी ही इस उलझन भरे जिन्दगी के आधारों को आनन्द के रंगों से संजो सकता है। उन्होंने अपने आपको बच्चों सी मुस्कान और वृद्धों से अनुभव के मध्य बिन्दु से कभी हिलने नहीं दिया है। यह उनकी अलौकिकता थी कि कोई शोकमग्न व्यक्ति उनके नजदीक जाने के बाद अपने विषाद को प्रमोद में प्रवृत्त किए बिना नहीं रह सकता था। मन में तो यह आता है कि आठ महीने का जो हमारा सानिध्य रहा और जो हम उनसे ले सके उसे व्यवस्थित रूप से भाषा का रूप दे दें लेकिन यह संभव हो सकेगा या नहीं, कह नहीं सकता। किन्तु मैं यह जानता हूँ कि रतलाम में जब मैं उनसे विदा मांगने गया तो उनके नेत्रों से प्रेम-आंसू छलक आए। माता सी ममता और गुरु सा आदेश उनकी वाणी में प्रतिध्वनित हो रहा था। मुझे वे दो शब्द याद है-कि-"सुशील मुनि, तुम्हें मैं अलग जाने तो दे रहा हूँ, लेकिन मेरा मन नहीं मानता है। मुझे विश्वास है कि तुम समाज में रोशनी बन कर चमकोगे। इसलिये कभी भी निराश मत होना। पर आकांक्षा के पीछे दौड़ना मत, पद की लालसा मत रखना। और आत्म दर्शन के लक्ष्य से अलग मत होना।" आज मेरे जीवन के सामने यही स्वर्ण-सूत्र हर समय चमकते हैं। उनका आशीर्वाद ही मेरे जीवन का सबसे बड़ा संबल है। उनके आदेश ही मेरे लिये सूत्र बोध हैं।

उनकी मृत्यु से मुझे गहरे दुख की अनुभूति हुई है। संतों का सरल-स्नेह तो मुझे अवश्य मिलेगा किन्तु उन जैसी आत्मीयता और ममता का दर्शन होना दुर्लभ है।

नई दिल्ली
१५-१०-१९६२

उन्हीं की याद में
मुनि सुशीलकुमार

परम श्रद्धेय गुरुदेव शान्त मूर्ति पं. रत्न मंत्री श्री किशनलालजी म०

के

जीवन की रंगीन रेखाएं

जीवन एक सरिता है जो समाज की समभूमि में बहती है। कभी विशाल चट्टानें उसकी गति को रोकती हैं तो कहीं गहरे गड्ढे उसकी जल राशि को पी जाने के लिये आकुल रहते हैं। गड्ढों को भरती और चट्टानों को चीरती हुई जीवनधारा बहती है। जिस ओर वह बह निकलती है वहाँ की भूमि में नया प्राण आ जाता है। आसपास खड़े वृक्षों में तारुण्य की खुमारी आ जाती है सभी मुस्करा उठते हैं। दूसरे के जीवन में माधुर्य घोलकर मनुष्य ऊपर उठकर महापुरुष बन जाता है।

(२)

मंझला कद, गौर वर्ण, भरा बदन, उन्नत ललाट और चेहरे पर सदा खिलती रहने वाली मुस्कान सबने मिलकर एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण किया था कि आगंतुक को पहले ही क्षण में अपनी ओर खींच लेता था। जिसे हम श्रद्धेय गुरुदेव मंत्री श्री किशनलालजी म० के नाम से पहचानते हैं। व्यक्तित्व में आकर्षण या तो मालव की मिट्टी ने कोमल

हाथों से जीवन घड़ा था उसमें कोमलता थी। ग्राम्य जीवन के सहज भोलापन की सहज सरलता ने जीवन को तरल बना दिया था। उस मिट्टी का आर्द्रता ने जीवन को ऐसा स्निग्ध बना दिया था कि कठोरता वहां पहुँचने का साहस नहीं कर पाई।

(३)

मध्यम वर्ग हमेशा ही आर्थिक चक्की में पिसता आया है। दो हाथ कमाने वाले और दस मुंह खाने वाले यही तो सबसे बड़ी समस्या हैं। मध्यम वर्ग की उसी समस्या से संघर्ष करते श्री किशनलालजी खाचरौद आ गये थे। पिता का हाथ तो कभी से सिर से उठ गया था हां माता की ममतामयी गोद ने पिता के अभाव को खटकने न दिया, पर विधि के मन यह भी नहीं भाया तो माता भी छोड़कर चल बसी। इधर आर्थिक मुसीबत की टक्करों ने उन्हें अपनी जन्म भूमि छोड़ देने को विवश कर दिया। खाचरौद में सेठ के घर रहे। परिवार के सदस्य सा ही प्रेम मिला। उसमें द्वैत घुल गया अब वे उसी घर के हो गये। आम की बहार थी। मां ने एक रुपया देते हुए कहा जाओ आम ले आओ। थैली लेकर बाजार पहुँचे एक बुढ़िया मालिन आमका टोकरा लिये बैठी थी। आते हुए नये ग्राहक से बोली आम खरीदना है ? हाँ उसने कहा, हाँ खरीदने के लिये तो आया हूं पर भाव क्या होगा ? वह बोली ! 'एक रुपये के पचास'। नहीं यह तो बहुत महंगे है, नया ग्राहक बोला। 'अच्छा तो पचहतर ले ले' ग्राहक को रोकते हुए मालिन बोली ! 'नहीं, ये भी महंगे हैं। अच्छा तो सौ ले ले। अब तो पैर ठिठक गये। उन दिनों सौ के एक सौ छत्तीस होते थे। आम से पूरा झोला भर गया रुपया दिया और घर की ओर लौट चले। मन में उमंग थी। घर जाते ही भरा थैला मां को देते बोले पूरे एक सौ छत्तीस हैं। मां के उमंग भरे हाथ आगे बढ़े। थैला लिया। उसमें से आम निकाला पर वह दागी निकला दूसरा निकाला वह भी पहले का भाई था। पूरा थैला उलट दिया एक

भी नाम ऐसा न निकला जो बेदाग हो। अब तो सभी ठहाका मारकर हँस पड़े। माँ भी अपने मेहमान की अबोधता पर मुस्करायी।

(४)

आचार्य श्री नन्दलालजी म० एक शान्त मूर्ति आगमज्ञ आचार्य थे। उनकी सौम्य और शान्त मुद्रा बड़े बड़े प्रतिवादियों को एक क्षण में स्तब्ध कर देती थी, उन दिनों उनकी आध्यात्मिक प्रतिमा से बड़े बड़े श्रुतधर अंजित थे। अपने आचार के लिये जितने कठोर थे उतने ही दूसरों के लिये भी मृदु थे। सीमित वस्त्र पात्र अल्पउपधि के द्वारा वे अपने संयम पथ पर गतिशील थे। समाज में उनका बड़ा प्रभाव था। जिस ओर चल पड़ते लोग उनके स्वागत में पलक पांवड़े बिछा देते थे। सांप्रदायिक संघर्षों से अलग रहकर, स्वात्म-परिणति और स्वाध्याय में लीन रहने वाले ये प्रतिभा संपन्न आचार्य जब खाचरौद पधारे तो सारे नगर में एक तहलका मच गया। दर्शनों के लिये नर-नारी उमड़ पड़े।

ऐसे तो आप खाचरौद के ही थे और संयम पथ में आने के लिये आपको बहुत कुछ सहना पड़ा था। पिता का प्रेम और माँ की ममता उन्हें संसार के बंधनों में जकड़े रखना चाहती थी पर जब मन में वैराग्य की धारा उमड़ी तो वह कब बंधन मानकर चलने वाली थी। जब उन्होंने अपना संकल्प पिता के सामने रखा तो गद्गद् हो पिता बोल पड़े बेटा यहाँ कौनसी कमी है जो तुम साधु बनने की सोच रहे हो हम तो तुम्हारे लिये नववधू लाने के स्वप्न देख रहे हैं।

पुत्र ने धीमे स्वर में कहा आपके स्नेह की शीतल छाया में दुःख की दुपहरी का अनुभव नहीं हो सकता फिर भी दोपहरी को भुलाया नहीं जा सकता और उसके लिये मुझे घर का मोह तो छोड़ना होगा। पिता ने देखा सीधे रूप में यह मानने वाला नहीं है तो मोह ने कठोर कदम उठाये, लाख समझाने पर भी जब वह मानने को तैयार न हुए तो

पिता ने अपने परिचित थानेदार के सामने अपनी समस्या रखी। उसने नन्दलालजी को बुलाया उनको धमकाया तब भी वे न माने तो उसने उन्हें जेठ की दुपहरी में नंगे पांव और नंगे सिर खड़ा किया फिर पूछा अब क्या इच्छा है ? बोले जो इच्छा है मैं पहले ही बता चुका हूं। थानेदार ने एक बड़ा सा पत्थर मंगवाया और उसके सिर पर रख दिया। प्राणों को सेंक देने वाली उस धूप में पत्थर उठाकर आधे घंटे तक वे निश्चल खड़े रहे फिर पूछा तो भी उत्तर वही मिला तो थानेदार हैरान हो गया, उसने नंदलालजी के पिता को बुलाकर कहा सभी परीक्षाओं में यह उत्तीर्ण है अब यह तुम्हारे घर रहने वाला नहीं है।

आखिर मोह झुका त्याग ने विजय पाई और श्री नन्दलालजी आचार्य श्री गिरधारीलालजी म० के पास दीक्षित हुए। आगम के अध्ययन और प्रतिभा के बल पर वे चमके। समाज ने उन्हें अपना आचार्य चुना। खाचरोद में उनके आगमन के समाचार श्री किशनलालजी के कानों ने सुने तो वे भी चल पड़े। आचार्य श्री की शान्ति और सौम्यता ने उन्हें खींचा। प्रवचन की धारा में संसार की आसक्ति घुल गई। उनके निकट दीक्षित होने की भावना जाग उठी। सेठ केशरीमलजी के सामने उन्होंने अपनी भावना प्रदर्शित की, वर्षों के परिचय और प्रेम ने उनके भीतर जो आत्मीयता जगादी थी उसने रोकने की चेष्टा की पर वैराग्य का रंग इतना कच्चा न था कि सेठ या माँ के आंसुओं में घुल जाय। आखिर उन्हें अनुमति देनी पड़ी और श्री कृष्णलालजी सं० १९५८ श्रावण शुक्ला १२ को रतलाम में आचार्य श्री नंदलालजी म० के पास दीक्षित हो गये।

(५)

अध्ययन संयम का प्राण है। ज्ञान के अभाव में संयम साधना नहीं हो सकती। ... आचार्य की प्रेरणा पाकर मुनि श्री किशन-लालजी म० ... प्रवृत्त हुए। ग्राह्य शक्ति और

बुद्धि की पटुता के कारण आपने शीघ्र ही आगमों का गहरा अध्ययन कर लिया। आगमिक रहस्य आपसे अछूते न रह सके। आपके प्रवचनों में भी आगम का ज्ञान बोलता था। आपके आगमिक शैली के प्रवचन इतने सरल एवं सुरुचिपूर्ण होते थे कि श्रोता अघाता ही नहीं था। आपका शास्त्र पाठ का वांचन इतना मधुर होता था कि श्रोता झूम उठता था। लोग बोल उठते आगमों का ऐसा वांचन अपने कानों से पहली बार ही सुना।

अध्ययन के साथ बौद्धिक प्रतिभा और विचक्षणता भी काफी थी। यद्यपि वाद विवाद आपके स्वभाव के अनुकूल नहीं था और विवाद से आप सदैव बचते रहते किन्तु जब कभी सत्य का प्रश्न आता आप कभी पीछे नहीं रहते। किशनगढ़ में ऐसा ही एक प्रसंग उपस्थित हो गया। जिसमें न चाहते हुए भी आपको चर्चा में उतरना पड़ा। प्रतिवादी के प्रश्नों का इस ढंग से आपने हल किया कि सब एक क्षण के लिये चकित रह गये किन्तु जब आपने एक प्रश्न रखा तो प्रतिपक्षी बगलें झांकने लगे। एक के बाद एक नया प्रश्न रखते गये कि उनके मुंह पर हवाइयाँ उड़ने लगी। वास्तव में उस दिन पता चला कि आप में तर्क करने की शक्ति कितनी प्रबल है। और उस तर्क में कितना प्राण रहता है। वे तिनके का स्तंभ नहीं थे कि फूंक;देते उड़ जाते। प्रतिपक्षी के पास उस सबका कोई उत्तर नही था। अन्त में विजय आपके पक्ष में रही। विशाल सभा में जयनाद के साथ आपको विजय को वधा लिया।

(६)

अपने शिष्य समुदाय के साथ पं० मुनि श्री किशनलाल म० एक बार मेवाड़ की ओर चल पड़े। संध्या के चार बज रहे होंगे काफी लम्बा विहार करके आ रहे थे। पैरों ने भी जवाब दे दिया एक छोटा गांव दिखाई दिया सभी वहां पहुंचे। ठहरने का स्थान नहीं मिल रहा था।

छोटा सा गांव, न मंदिर का पता था न धर्मशाला ही थी। आखिर एक व्यक्ति बोला पास में किसान का घर है वह बाहर गया है आप इसके बरामदे में ठहर जाइये। उसकी अनुमति लेकर ठहर गये। आधे घंटे के बाद वही किसान आगया जिसका कि मकान था। आते ही बोला, क्यों ठहरे यहां? किसने कहा है?

महाराज बोले भाई साधु हैं दूर से चलकर आये हैं थक गये थे, यहां न धर्मशाला है न मन्दिर ही पड़ोसी ने कहा और हम ठहर गये इसमें कोई जुल्म तो नहीं हो गया। हम कोई मकान की गठरी बांधकर ले तो नहीं जायेंगे रात भर रहकर सुबह चल देंगे।

नहीं महाराज यह नहीं चलने का। मैं अपने घर पर तुम्हें सोने नहीं दूंगा क्योंकि तुम बनिये के गुरू रात को रोटी नहीं खाते तो मैं अपने आंगन में किसी को भूखे नहीं सोने देता। रात के दस बजे मेरे यहां गरम मक्की के रोट बनेंगे वे तुम खाते हो तो तुम ठहर सकते हो।

महाराज ने सोचा यह अच्छी आफत आई। बोले भाई भूख तो फड़ाके की लगी हुई है। दस मील से चलकर आ रहे हैं पर रात को तो हर्गिज नहीं खायेंगे भले कुछ भी हो जाय। हां यदि अभी तेरे घर में कुछ हो तो दे दे।

महाराज! अभी हम किसानों के घर क्या मिलेगा? "कुछ घाट[1] वाट तो होगी न।" महाराज ने पूछा। हां महाराज! यह तुमने अच्छी याद दिलाई। घाटका तो हंडा भरा है चलो। पात्र लेकर महाराज पहुंचे उसने पूरा पात्र भर दिया और एक पात्रे में छाछ उंडेल दी। भूख तो थी। भूख ने मकाई की घाट को बदाम का हलुआ बना दिया। कभी कभी गुरुदेव अपने प्रवचन में इस घटना का उल्लेख करते थे

---

१ मकाई के दलिये की बनाई हुई चीज जो मेवाड़ में छाछ के साथ खाई जाती है।

और कहते थे बड़े बड़े सेठों ने मिठाइयां और बादाम का हलुआ भी बहराया होगा वे तो याद नहीं रहे पर वह घाट तो आजभी याद है।

(७)

कानोड़ में एक बार महाराज श्री प्रातः बाहर जा रहे थे एक भाई ज्वर में तप रहा था बोला महाराज मांगलिक सुना दीजिये। महाराज श्री ने प्रभु पार्श्वनाथ का छंद और मंगलिक सुनाई तीन घंटे में ज्वर उतर गया। उन दिनों कानोड़ में यह हवा फैली हुई थी घर घर में लोग बीमार पड़े थे। मांगलिक से जहां एक स्वस्थ हुआ उसने दूसरे के कानों बात पहुंचाई दूसरे ने तीसरे के कानों पर धीरे २ बात फैल गई अब तो प्रातः और सायं जिस ओर महाराज के बाहर जाने का रास्ता था भीड़ लगी रहती। जाते ही लोग घेर लेते गुरूजी तीन दिन से बीमार हूँ बुखार ने हड्डी ढीली करदी एक छन्द सुनादो। महाराज छन्द और मांगलिक सुनाये बिना आगे नहीं बढ़ पाते। कभी जल्दी में मांगलिक ही सुना देते तो लोग कहते नहीं गुरूजी छन्द सुनाइये आपको कष्ट तो होगा पर मेरा रोग दूर हो जायगा।

मांगलिक सुनकर जो स्वस्थ हो जाता वह आता गुरूदेव के चरणों में वन्दना कर कहता गुरूजी आपने मुझे अच्छा कर दिया। गुरूदेव कहते भाई यह तो तुम्हारे साता वेदनीय कर्म का उदय हुआ और तुम अच्छे हो गये उसमें मेरा क्या है ?

भावुक भक्त तो यही कहते हमको दुःख से छुड़ाने वाले आप हो और हम कुछ नहीं जानते।

(८)

छोटा सा गांव था। किसानों के सौ घर होंगे। घूमते हुए महाराज भी उस गांव में पहुंचे। सभी साधुओं को भूख तो लग रही थी

किन्तु अजैनों के यहां गोचरी करने में जरा साहस चाहिये। वहाँ जैन घर तो था नहीं कि श्रद्धा और भक्ति के साथ आहार मिल सके। पं० श्री किशनलालजी म० बोले मैं जाता हूं देखूंगा जहां प्रासुक मिलेगा और उसकी भावना होगी तो ले आऊंगा।

पात्र लेकर चल पड़े। पूरे गांव में घूम लिये पर किसी ने आधा रोटा भी नहीं दिया। वापिस लौट रहे थे बीच में देखा पति पत्नी बुरी तरह लड़ रहे हैं। महाराज ने कहा भाई रोटी बोटी हैं? पर उस लड़ाई में महाराज की बात कौन सुनता। उधर लड़ाई पूरे जोश में थी दोनों ओर से गालियों की बौछार हो रही थी। पति का दिमाग जरा ठंडा हो रहा था कि पत्नी की लम्बी जीभ ने एक ही शब्द ऐसा बोल दिया कि बुझती आग में घी पड़ गया। अब तो पति के हाथ उठे कि तभी महाराज बीच में खड़े हो गये। आदमी चौंक गया। महाराज बोले मर्द होकर औरत पर हाथ उठाते हो! वह बोला महाराज यह ऐसी है इससे मैं परेशान हो गया इसकी जीभ कैंची सी चला करती है।

उस समय उस व्यक्ति की बगल में सुन्दर सलोना बालक था महाराज ने उसकी ओर इशारा करते कहा यह देवी न होती तो यह हीरा जैसा बच्चा कहां से आता यह इस देवी का ही प्रताप है।

हाँ महाराज बात तो तुम्हारी सच्ची हैं और बालक के हंसते चेहरे को देखकर पति पत्नी दोनों खिलखिला पड़े।

क्रोध को हंसी में बदल देने की भी एक कला होती है। दो लड़ते हुओं को आप एकदम रोक नहीं सकते ऐसा करना चाहिए कि दोनों की लड़ाई कुश्ती में बदल जाए और कुश्ती खेल में। फिर आप हल्के हाथों उन्हें हास्य नदी के किनारे ले आवें फिर देखेंगे क्रोध कहीं गायब हो गया है और दोनों खिलखिला रहे हैं।

गुरुदेव इस कला के सच्चे कलाकार थे। दोनों किसान दंपति जो दो क्षण पहले क्रोध में भूत बन रहे थे दोनों खिल उठे। क्रोध का शैतान कभी का विदा ले चुका था। महाराज जाने लगे तो उसने पूछा कुछ चाहिये ? महाराज बोले इसीलिये तो आया हूं। किसान ने पत्नी से कहा जा जा महाराज को दो रोटें दे और महाराज दो रोटे लेकर लौट आये।

(९)

सोना आग में चमकता है ज्वाला में उसके तेज में निखार आता जबकि घास आग से डरती है क्योंकि आग में पड़कर वह राख होती है। मानव जहां कष्टों की आग से डरता है भागने की कोशिश करता है वहां महा मानव उससे खेलता है। कष्टों की ज्वाला में उसके व्यक्तित्व को निखार मिलता है। एक शायर बोलता है:—

> रंग लाती है हिना पत्थर पे घिस जाने के बाद,
> सुर्खरू होता है इन्सां आफतें आने के बाद।

आपत्ति आई है उससे डरेंगे तो आपके सिर पर वह सवार हो जाएगी। डरिये नहीं डटके मुकाबला कीजिये उससे आंखों से आंखें मिलाइये उससे हाथ मिलाइये अब वह आपकी परिचित मित्र बन जाएगी और आसानी से आप उस पर विजय पा सकेंगे। एक इंग्लिश विचारक ने कहा है:–

Difficulties are like waves. They can't hurt you if you face them and as they come nearer you will find your self lifted up to meat them.

कठिनाइयाँ लहरें हैं यदि तुम उनके सामने हो गये तो ये तुम्हें कोई हानि नहीं पहुंचा सकती। जैसे ही वे निकट आवें तुम ऊपर उठ कर उनसे मिलो।

विपत्तियों से मुकाबला करने में गुरुदेव दक्ष थे। वास्तव में वे उनसे मुकाबला नहीं करते वरन् खेलते थे। एक बार विचरण करते हुए गिरिराज आबू जा रहे थे। तलहटी में छोटेगांव में रात को विश्राम किया। सूर्य की प्रथम किरण के साथ विहार यात्रा शुरू हो गई। किसी से पूछ लिया कितना दूर होगा यहां से ? उसने कह दिया यही ६ मील के करीब है। सभी चल पड़े सोचा अभी दो घटे में पहुंच जाते हैं। साथ में प्रवर्तक श्री ताराचन्दजी म० भी थे जो कि वयोवृद्ध थे। इधर कुछ देर हो गई फिर चढ़ाई थी, ६ मील पहुंचते ग्यारह बज गये। धूप चढ़ आई। सूर्य सिर पर था प्यास के मारे कंठ सूखने लगे पहाड़ी रास्ता सिर ढकने को एक वृक्ष भी नहीं। सभी पसीने में नहा रहे थे। फिर भी हिम्मत थी अभी पहुँचते हैं। जब ६ मील पार हो चुके तब तो आकुलता बढ़ने लगी। उस ओर एक भील आ रहा था उससे पूछा भाई मंदिर कहां है चढ़ाई कितनी बाकी है ? उसने कहा महाराज अभी तो ६ मील बाकी है। ६ मील और ? ऐसी आग बरस रही है। पास में पानी का एक बून्द नहीं कंठ सूख रहे हैं मंजिल कैसे तय होगी ?

बड़े महाराज बोल उठे अब तो मेरी हिम्मत काम नहीं देती। छोटे वृक्ष के नीचे वे बैठ गये बोले मैं तो संथारा करता हूं जिससे चला जाय वह आगे बढ़े और प्राण बचाए। गर्मी के मारे उनकी आवाज नहीं निकल रही थी। गुरूदेव श्री किशनलालजी म. बोले इतनें घबराइयें नहीं जरा हिम्मत से काम लें तो ये ६ मील अभीं पूरे हो सकते हैं। पर मेरे से तो एकदम नहीं चला जाता यह कहकर वयोवृद्ध ताराचन्दजी म. वृक्ष की छाया में बैठ गये। सभी के मुख पर चिन्ता की रेखाएं दौड़ने लगी। किन्तु पं० श्री कृष्णलालजी म० के मन में उत्साह का प्रवाह था वे बोले घबराहट मंजिल को दूनी बना देती है। थोडी विश्रान्ति ले लें फिर आगे बढ़ते है। मन में उत्साह हैं तो मंजिल हमारे कदमों में हैं।

जरा आगे बढ़े तो वृक्ष के नीचे कुछ बहिनें बैठी हुई दिखलाई दी। गुरुदेव को आते देखा तो वे सभी खडी हो गई और वन्दन करती हुई बोली महराज आप अभी यहां कहां ? ऐसी धूप में कैसे पहुँचेगे ? महाराज श्री ने कहा यही समस्या तो हमारे सामने है। प्यास के मारे प्राण कंठों में आबसे हैं, बड़े महाराज श्री से तो चला भी नहीं जाता।

हमारे पास पानी है आप चिन्ता न करें ! बहिनें बोली !

यह कच्चा पानी हमारे उपयोग में कैसे आ सकता है महाराज ने कहा।

नहीं महाराज, हमारे पास गरम पानी हैं। ओली चल रही है हम सबको आयंबिल व्रत हैं इसीलिये गरम पानी की गगरियां भरकर हम चलीं हैं।

फिर महाराज ने पानी लिया प्यासे कंठ में पानी पहुंचा तो उसने नई ताजगी लादी। बहिनें फिर बोली महाराज आप भूखे भी तो होंगे। हमारे पास कुछ खाद्य पदार्थ भी है। मन्हें मुन्नों के लिये लाये है और काफी ज्यादा है थोड़ा उसमें से भी लेना होगा। महाराज श्री उनके आग्रह को टाल न सके और थोड़ा आहार भी लिया।

जिन सूनी पहाड़ियों में जल की एक बूंद का पाना कठिन हो वहां प्रासुक आहार और पानी मिल जाना चमत्कार नहीं तो क्या था ?

(१०)

ऐसी ही एक घटना निमाड़ में घटी थी। प्रवर्तिनी श्री गुलाब कुंवरजी के पास करीकस्बा में एक बहिन मोहनबाई ने दीक्षा की भावना व्यक्त की। सतीजी की इच्छा थी दीक्षा विधि गुरुदेव के हाथों से संपन्न हो। महाराज श्री उस समय इन्दौर थे। सतीजी का आग्रह विशेष था

और महाराज श्री चल पड़े। मालव से निमाड पहुंचने के लिये विंध्याचल पार करना होता हैं। उसे पार करती हुई सडक भी जा रही थी पर भावुक भक्तों की सलाह थी सडक चक्कर बहुत काटती है। कच्चा रास्ता ले लें तो दस मील का रास्ता छः मील में कट जायगा। मानव का मन भी कुछ ऐसा होता हैं जल्दी पहुचने के लोभ में आराम प्रद मार्ग छोड़ नन्हीं पगडंडी अपना लेता है। गुरूदेव ने स्वीकार कर लिया साथ में एक मार्गदर्शक भी था। अतः सभी निश्चित होकर चल रहे थे। चलाचली में ग्यारह बज गये। सूर्य सिर पर चढ़ आया। महाराज ने मार्ग दर्शक से कहा कितने लम्बे हैं तेरे छः मील ! छः बजे से चले है और अब सूर्य सिर पर चढ़ आया क्या अभी तक छः मील पूरे नहीं हुए ?

"मैं तो रास्ता भूल गया महाराज !" मार्गदर्शक ने कहा। मार्ग-दर्शक ही मार्ग भूल जाए तब कैसी विडम्बना होती है यह उस दिन पता चला। गलत मार्गदर्शक रास्ते को दूना कर देता है। क्योंकि चलने वाला तो उसी पर विश्वास रखकर चल पड़ता है।

सभी के पैरों ने जबाब दे दिया उधर सूर्य की तीखी किरणें गले को सूखा रही थी। वयोवृद्ध प्रवर्तक श्री ताराचन्दजी म० की प्राणशक्ति सीमा को छू रही थी। वही आबू का दृश्य सामने आ गया। वे ही पहाड़ियां और वही भीषण ग्रीष्म। वे वृक्ष के नीचे बैठ गये बोले जिसको रास्ता मिले चल पड़ो, मेरी आशा न रखना। अब किसके पैर उठते। फिर गुरुदेव बोले आपके इन शब्दों से तो सबका धैर्य समाप्त होता है जरा साहस रखकर इस घाटी को पार करदें घाटी के नीचे ही एक झोपड़ा दिखाई दे रहा है।

साहस भरे शब्दों ने सब मुनियों के दिल में नई चेतना का संचार कर दिया। आधे घंटे में घाटी पार हो गयी, तभी पीछे से आवाज

आयी ठहरिये ! ठहरिये ! महाराज ने मुड़कर देखा तो कुछ श्रावक दौड़े आ रहे थे। महाराज रुक गये। श्रावक निकट आये तो बोले महाराज उधर किधर जा रहे है। हम प्रातः सात बजे से निकले हैं अब तक आपका पता नहीं। मालूम होता है आप रास्ता भूल गये ! गुरुदेव ने कहा बात सही है हमारा मार्ग दर्शक ही मार्ग भूल गया है। इस कठिनाई से हम पार हो रहे है कि एक कदम आगे रखना दूभर हो गया है। श्रावक बोले यहां से एक फर्लांग पर छोटा सा गांव है वहां पधारिये। संभव है वहां प्रासुक पानी का भी जोग लग जाएगा। महाराज उधर मुड़ गये। गांव में पहुंचे। एक घर से पानी का जोग लगा उस दिन अनुभव हुआ पानी को जीवन क्यों कहा गया है ? श्रावक लोगों ने कहा महाराज थोड़ा आहार भी मिल जाएगा। महाराज ने कहा नहीं भाई अभी तो पानी ही अमृत है।

(११)

बहती जीवन की चदरिया उजले और काले धागों से बनी हुई है। कभी उजले धागों की चमक है तो दूसरे क्षण काला धागा आकर उसकी सफेदी को ढक देता है। जीवन कभी यथाई लीक पर कभी नहीं चला है। यह सदा समरूप में बहने वाली नदी नहीं है यह तो पहाड़ी नदी है पत्थर और गड्ढे उसके मार्ग में है। उन सबको पार करना है और आगे बढ़ना है। हर मनुष्य के जीवन में जीवन धारा के पत्थर आते हैं पर वे कहकर तो नहीं आते। यह क्षण मधुर है आनंद की मधुर लहरियों में हम उसके दूसरे पक्ष को भूल जाते हैं किन्तु यह दूसरा क्षण कितना भयानक भी हो सकता है यह हमारी कल्पना के बाहर होता है।

एक बार गुरुदेव और उनके विद्वान् शिष्य-रत्न प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म० आदि मुनिवर रतलाम से विहार कर डूंगर प्रांत

की ओर पधार रहे थे। साथ में एक भाई मोतीलालजी भी थे। पहाड़ी रास्ता था चलते चलते संध्या होने आई। महाराज ने भाई से कहा अब तो ठहर जाना चाहिये। मोतीलालजी बोले थोडी सी दूर एक गांव है। वहां भील मेरे आसामी है वहां स्थान भी अच्छा मिल जाएगा। पर भीलों के गांव ऐसे कि सारे गांव में घूम जाएं तब भी पता नहीं लगेगा कि गांव कहां है। दो चार झोंपड़े इस ओर दो उस ओर। दो मील तक झोंपडे बिखरे रहते हैं वह दो मील का एरिया गांव कहलाता है। गांव में चलते चलते पैर भी थक गये। व्योम मंडल की यात्रा पर थके हारे भगवान भास्कर भी अस्तचल पर विश्राम के लिये आ गये थे। महाराज बोले अब तो बताओ मुकाम कहां करना है।

भाई ने कहा यह टेकरी है उसी पर जो झोंपड़े हैं उसमें मेरे आसामी हैं वहीं चलना है। वहां पहुँचे किन्तु झोंपड़े में एक चिड़िया भी नहीं थी। भीतर चूल्हा जल रहा था एक रोटी चूल्हे पर थी, दूसरी नीचे, थोड़ा आटा भी था किन्तु न रोटी बनाने वाले का पता था न खाने वाला का। साथ के भाई ने आवाज भी लगाई पर पहाड़ियों से टकराकर आवाज खाली लौट आई किन्तु कोई आया नहीं। थोड़ी प्रतीक्षा के बाद वह भाई बोला महाराज आप चिन्ता न करें मेरे ग्राहक हैं हमेशा आते हैं माल ले जाते हैं अतः मेरी आज्ञा है आप विश्राम करें।

महाराज ने सामान रखा। एक वृक्ष के नीचे आसन जमाया। प्रतिक्रमण का टाइम था। प्रतिक्रमण किया और थकी आंखें झपकियां लेने लगी, सभी सो गये। भाई मोतीलालजी को नींद नहीं आ रही थी। अभी एक घंटा भी न बीता होगा कि पत्तों की खड़खड़ाहट हुई। मोतीलालजी ने चौंककर पूछा कौन है ? अंधेरे में एक छाया सी हिलती हुई प्रतीत हुई उन्होंने फिर पूछा कौन हैं ? अबकी बार उधर से आवाज आई तू कौन है ? वह बोला मुझे नहीं पहचाना "मैं हूँ मोतीलाल"

कौन "मोतीलाल बाण्या" ? यहां क्यों आया ? हां हां मैं हूं मेरे गुरु आये हैं उनके साथ आया हूं।

ये तेरे गुरु हैं। फिर ये वे नहीं हैं। हां हां मुझे भी शंका हो रही है। जरा जाकर देखो पहले एक व्यक्ति जाओ। यदि कुछ गड़बड़ी हो तो वहां से आवाज लगाना फिर हम एक साथ धावा बोल देंगे। आपस में सलाह कर रहे थे। फिर उनमें से एक धीरे धीरे निकट आया।

इस गड़बड़ में महाराज की आँखें खुल चुकी थी। उन्होंने पूछा क्या बात है ? मोतीलालजी बोले तड़वी (भील) आया है। इतने में वह भी निकट आ गया था। उसने पूछा मोती बाण्या ये कौन हैं ? उसने कहा ये मेरे गुरु महाराज हैं। जैन साधु हैं, ये किसी को सताते नहीं। अच्छा तो इनके पास यह लम्बी लम्बी क्या चीज है। (ओघे की ओर ईशारा करते हुए भील ने पूछा।) "यह ओघा है।" छोटी चींटी भी मर न जाए इसलिये रखा है। रास्ते में चींटी चल रही हो तो इससे अलग हटाकर फिर चलते हैं।

"और ये गोल गोल क्या है ?" पात्र की ओर इशारा करते हुए भील ने पूछा। महाराज ने बताया ये लकड़ के पात्र हैं। हम धातु की कोई चीज पास में नहीं रखते। हमारा खाना पीना इसी में होता है।

अच्छा खोलके बताओ। अब भी उसे पूरा विश्वास नहीं आया था महाराज ने पात्रे खोले। तब देखे कुछ संतोष हुआ। और ये क्या है डब्बे की ओर इशारा करते हुए भील ने पूछा।

महाराज बोले ये डब्बे हैं इनमें धर्मशास्त्र रहते हैं। अच्छा खोलो तो। महाराज श्री ने वे भी खोलके बता दिये। अब उसे पूरा संतोष था। उसने अपने साथियों को आवाज लगाई आजाओ कोई डर नहीं है। सब आ गये।

महाराज ने पूछा भाई बात क्या है रात को हमको परेशान क्यों किया ?

भील बोला महाराज आज तो तुम भी मरते और हम भी मरते। गजब हो जाता। यह देखो ये तीर कामठी (धनुष्य बाण) लेकर ही हम आये थे। हम तीर छोड़ते वाले ही थे कि वह मोती बाण्या बोल दिया।

"गुरुदेव ने पूछा भाई बात क्या हुई। हमने ऐसा क्या बिगाड़ा कि तुम हमें मारने आगये ?"

वह बोला बात ऐसी हुई जब तुम घाटी चढ़ रहे थे दूर से हमने तुम्हें देखा जिन्दगी में पहली बार तुम लोगों को देखा। हमें तो भ्रम हो गया यह खुफिया पुलिस आई है और हमें पकड़ेगी। इसीलिये हम तो प्राण लेकर दौड़े। आदमी औरतें बाल बच्चे सभी भगे। रोटी चूल्हे पर जलती छोड़ दी क्योंकि प्राण बचाना था। फिर हम इधर उधर लुक छिप कर देखते रहे कब जावें किन्तु तुमने तो डेरा लगा दिया। फिर हमने सोचा ये छोड़ने वाले नहीं है अभी नहीं तो सुबह पकड़ेंगे। इसलिये हमने सोचा ये हमको पकड़े इसके पहले हमी इनको साफ न करदें। और इसीलिये हम सब मिलकर आये। यह तो पत्ते बजे और मोतीलालजी की नींद खुली इन्होंने आवाज दी तब हमने सोचा आवाज तो मोती वाण्या की है और वह तो हमारा सेठ है वह हमें पकड़ाने के लिये खुफिया पुलिस लाये ऐसा लगता नहीं है। इसलिये हमने छानबीन की पर महाराज तुम किस्मत वाले थे। यदि यह नहीं बोलता तो एक मिनिट में तुम सबको एक साथ बींध देतें। तुम तो मरते साथ में हम भी मरते क्योंकि फिर पुलिस हमको छोड़ती काहे को ?

महाराज ने कहानी सुनी, देखा मौत चार गज ही दूर थी फिर भी जीवन की डोर मजबूत थो बच गये नहीं तो सभी की जीवन लीला समाप्त थी।

फिर वे बोले महाराज ! अब आप तो सो जाइये हम रात भर पहरा देगें क्योंकि सुफिया पुलिस की बात दूर-दूर तक फैल गई है। जैसे हम गिरोह बनाकर आये ऐसा दूसरा गिरोह आगया तब भी कठिनाई। उन्होंने सारी रात पहरा दिया। फिर दूसरा गिरोह आया या नहीं कह नहीं सकते। क्योंकि सभी महाराज भीलों के विश्वास में गहरी नींद ले रहे थे।

भील जाति कितनी ही शंकाशील हो पर एक बार विश्वास जम जाने के बाद वह अपना प्राण भी आपके लिये दे देगी। प्रस्तुत घटना मुनि-विहार-पथ की लोमहर्षक घटना है। जब कि विहार पथ में मारणान्तिक परीषह (कष्ट) उपस्थित हो जाते हैं किन्तु मृत्युंजयी मुनि उन सबका स्वागत करता है।

(१३)

गुरुदेव ने हजारों मील विहार किया। मद्रास में सर्वप्रथम चातुर्मास आपका ही हुआ। मद्रास संघ विनंती के लिये आया। मद्रास प्रान्त का भयंकर ताप, आहार विहार की प्रतिकूलताएं सभी सामने थी किन्तु फिर भी महाराज ने उसे ओर आने की स्वीकृति दे दी। उस समय प्रवर्तक श्री ताराचन्द्रजी म०, पूज्य गुरुदेव पं० किशनलालजी म०, प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म०, वयोवृद्ध वच्छराजजी म०, कवि श्री सूर्यमलजी म०, आदि १४ मुनिवर साथ थे। अपरिचित प्रदेश आहार पानी की प्रतिकूलता और दुर्लभता सभी कठिनाइयां सामने थी। फिर भी महाराज श्री मुनिवृन्द के साथ चल पड़े। मद्रास की दो मोटरे रहती, करीब दो मास तक यह क्रम चलता रहा। सेठ मोहनमलजी चोरड़िया आदि साथ में थे आहार पानी के लिये उनका काफी आग्रह था फिर भी महाराज श्री ने कहा साथ रहे व्यक्तियों से हम आहार नहीं ले सकते। पश्चात् मोटरों द्वारा वे आगे पहुंच जाते और यक्षाल जाति जो कि उधर की एक मात्र निरामिष जाति हैं उन्हीं लोगों को मुनि मर्यादा के नियम समझाकर आहार पानी की योगवाई लगवाते थे।

इधर उन्होंने तैलगू भाषा में मुनि जीवन के नियमोपनियम छपवा लिये थे और गांवों और शहरों में पर्चे बांटे जाते थे। उन्हें पढ़कर वहां के निवासियों को इतना आश्चर्य होता था कि वे समझते थे कि ऐसे नियम पालने वाले मानव नहीं, भगवान ही हैं और जिस मार्ग से महाराज गुजरते उधर सैंकड़ों की तादाद में कतार बद्ध खडे हो जाते थे। मुनि समुदाय को देखकर वे हर्षित हो नमस्कार करते। कोइ वहिन भी चरण छूने जाती तो उसे समझा दिया जाता कि जैन मुनि स्त्री को नहीं छूते। उधर के निवासियों में वहुत भावुकता है। इसीलिये कोई खरबूजा तरबूजा लिये इसलिये चले आते कि गुरूजी को भेंट करेंगे तो कोई आम लेकर आते। जब वे भेंट करने लगते तो महाराज श्री बोलते यह हमारा नियम नहीं है। साथ रहे गृहस्थ उन्हे तेलगू में समझाते तो वे बोलते गुरूजी को नहीं चलता तुम्हें तो चलता है तुम ले लो। लाख इन्कार करने पर वे देकर ही जाते।

महाराज श्री के सर्व प्रथम पदार्पण से मद्रास प्रान्त में जैन धर्म का प्रचार कार्य काफी सुन्दर ढंग से हुआ। साथ में मद्रासी भाषा का विद्वान भी रखा गया था। महाराज श्री प्रवचन देते वह उन्हें मद्रासी भाषा में अनुवाद करता था इसलिये वहां की जनता भी जैन धर्म और जैन साधु के सम्बन्ध में जानने लगी थी।

जिस दिन महाराज श्री ने मद्रास शहर में प्रवेश किया सारे शहर में उत्साह छा गया। मद्रासवासी मारवाड़ी भाइयों के हृदय में हर्ष समा नहीं रहा था क्योंकि मद्रास के इतिहास में पहली बार उन्होंने अपने गुरूदेव को मद्रास शहर में देखे थे। इतनी कष्ट साधना की सफलता का वह दिन था। हजारों की संख्या मे नर नारी उपस्थित थे। जिस ओर जूलूस जाता उधर की ट्राम मोटर गाडियाँ बन्द हो जाती। बाजार के दोनों ओर मद्रासवासी हजारों की संख्या में कतारबद्ध खड़े

थे। भवनों की खिड़कियां और छतें भी लद रही थी। प्रेस प्रतिनिधि भी फोटो लेने के लिये खड़े थे। मारवाड़ी बहनें स्वागत गीतों की झंकार से बाजार गुंजा रही थी उनके आभूषणों की प्रदर्शनी को देख अगले दिन एक पत्रकार ने टिप्पणी भी की थी। मद्रास शहर में पहली बार मारवाड़ी समाज के गुरु आये हैं उनके स्वागत में मारवाड़ी बहनों ने इतने गहने पहने हैं कि गहनों की ऐसी प्रदर्शनी कभी नहीं देखी गई।

इसके बाद मद्रास वासियों में धार्मिक भावना की जो लहर आई उसने सारे मद्रास प्रान्त में जिन शासन का जयनाद गुंजित कर दिया। मद्रास के तत्कालीन पब्लिक वर्क मिनिस्टर मौलाना याकुब हुसेन महाराज श्री के प्रवचन में आये थे। गुरुदेव के प्रमुख शिष्य प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म० के समन्वयात्मक प्रवचनों से वे काफी प्रभावित हुए। प्रवचन समाप्ति के पश्चात् महाराज श्री की प्रशंसा करते हुए आपने कहा ये प्रवचन जीवन में उतरे तभी आत्म कल्याण हो सकता है। आपने आगे बोलते हुए कहा अहिंसा का सिद्धान्त सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त है। उसी का यह प्रभाव है कि आज तक जैन और मुसलमान भाई भाई की तरह रहते हैं आज तक मैंने नहीं सुना कि जैनों और मुसलमानों में कभी झगड़ा हुआ हो।

अन्त में उन्होंने कहा कि आप मुनिगण हजारों मील पैदल चल कर आये हैं और अहिंसा का इतना विचार रखते हैं कि उसके लिये (रजोहरण की ओर इशारा करते हुए) यह सदैव साथ रखते हैं। मैं मद्रास शहर की ओर से आपका अभिनंदन करता हूं।

वयोवृद्ध प्रवर्त्तक श्री ताराचन्दजी म०, पं. शास्त्री श्री किशनलालजी म., प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म., कवि सूर्यमलजी म. आदि चौदह मुनिश्वरों की उपस्थिति में ता० १०-६-३७ को आलन्दूर (मद्रास) में सेठ विजयराजजी मेहता के सज्जन विलास उद्यान में विराट

सभा का आयोजन किया गया जिसमें तत्कालीन मद्रास कांग्रेस के सर्वोत्तम नेता श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी तथा अन्य प्रसिद्ध कांग्रेस वर्कर (कार्यकर्ता) भी उपस्थित हुए। उस समय प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म० ने ओजस्वी शैली में राष्ट्र धर्म पर प्रवचन दिया। अहिंसा प्रधान जैनधर्म की मौलिक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए एकता राष्ट्र भाषा के प्रति प्रेम, नशैली वस्तुओं का परित्याग, अछूतोद्धार आदि विषयों को स्पर्श करते हुए राष्ट्र धर्म की सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की। पश्चात् जनता के आग्रह से महान तार्किक आचार्य राजगोपालाचारी ने तामिल भाषा में प्रवचन देते हुए जैनधर्म की अहिंसा और जैन मुनियों की कठिन साधना की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया। इसके साथ शतावधानी केवल मुनिजी म० के मनोनिग्रह के प्रतीक अवधान प्रयोगों ने जनता के मानस को हिला दिया। जैन संस्कृति और जैन मुनियों की गहरी छाया अंकि कर दी। इस प्रकार महाराज का प्रथम चातुर्मास मद्रास के इतिहास में नयापृष्ठ जोड़ने वाला सिद्ध हुआ। दक्षिण भारत जो कि जैनधर्म और भगवान महावीर के संदेशों को भूल चुका था मुनिवरों के आगमन ने उसे नव जागृति प्रदान की।

इसी प्रकार हैद्राबाद (दक्षिण) में भी महाराज श्री के यशस्वी चातुर्मास हुए। वहां भी महाराज श्री ने अपने ओजस्वी प्रवचनों के द्वारा हजारों अजैन वैष्णव भाइयों को जैन धर्म के प्रेमी बनाया। आज भी वे लोग महाराज श्री को याद करते हैं।

बेंगलोर का चातुर्मास भी शानदार रहा। सेठ छगनलालजी मूथा ने अति आग्रह पूर्वक चातुर्मास करवाया और आगंतुकों के स्वागत में हजारों का खर्च किया।

दक्षिण में विचरते हुए महाराज श्री मुनिवृन्द के साथ मैसूर पधारे। वहां भी प्रवचनों और अवधान प्रयोगों के द्वारा बड़े बड़े अजैन

विद्वान जैन धर्म की ओर आकर्षित हुए। जो विद्वान बोलते थे आज के युग में एकपाठी विद्वान् हो नहीं सकता। राजा भोज के युग में एक पाठी द्विपाठी विद्वान थे जो कि एक बार या दो बार सुनकर याद रख लेते थे किन्तु जब शतावधानी केवलमुनिजी म० ने उनके कठिनतम श्लोक को एक बार व्युत्क्रम से सुनकर याद रख लिया और पुनः सुना दिया तो वह चकित रह गये। जब महाराज ने कहा उल्टा सुनादूं आप कहें वैसा सुना सकता हूं और जब महाराज ने व्युत्क्रम से सुना दिया तो वह आश्चर्य चकित हो गुरुदेव के चरणों में झुक गये।

एक बार राज प्रासाद में व्याख्यान रखा गया। विशाल सभा भवन पूरा भरा हुआ था। मैसूर नरेश भी एकाग्र होकर प्रवचन सुन रहे थे। प्रवचन समाप्ति के पश्चात् गुरुदेव ने कहा महाराज पूर्व संचित पुण्यों का यह मधुर प्रतिफल आपको प्राप्त हुआ है। मुस्कुराते हुए महाराजा बोले सच्चा पुण्य तो आपका है कि आप स्वतंत्रता से प्रभु के पथ में घूम रहे हैं। मैं तो बंधनों में जकड़ा हुआ हूं। चाहता तो मैं भी हूं कि आपकी तरह बन्धनमुक्त बनूं पर अभी इतनी तैयारी नहीं है। महाराज श्री ने गृहस्थ रूप में रहकर भी बन्धनमुक्ति का स्वरूप समझाया परिग्रह के कीचड़ में रहकर भी जल कमलवत् रहने की प्रेरणा दी। गुरुदेव के प्रेरणा संदेश से महाराजा अति प्रसन्न हुए और बोले,आपके बताये मार्ग पर चलने की कोशिश करूंगा।

इस तरह दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रचार कार्य सुन्दर रूप से संपन्न हुआ। ऐसे ही बम्बई क्षेत्र भी आपके उपकारों का ऋणी है। बम्बई और उसके उपनगरों में आपके नव चातुर्मास हुए। जब कभी बम्बई संघ को चातुर्मास के लिए दूसरे मुनि निकट में दिखाई नहीं देते तब वह आश लिये गुरुदेव की सेवा में पहुंच जाता। उसकी आग्रहकारी प्रार्थना को गुरुदेव टाल नही सकते थे और पांच सौ सात सौ माइल

दूर से भी वहां पहुंचते। एक बार तो आप नागपुर से बम्बई पधारे थे। एक बार सन् सैतालीस में बम्बई संघ चातुर्मास की विनंती के लिये आया। चातुर्मास का केवल ढाई महीना शेष था। भयंकर गर्मी, दुर्भिक्ष का वातावरण और हिन्दु मुस्लिम दंगों की आशंका, इन सब के बावजूद आप ६५ वर्ष की अवस्था में लघु शिष्यों के साथ चल पड़े। उस समय इन पंक्तियों का लेखक भी तेरह वर्षीय लघुशिष्य के रूप में गुरुदेव के साथ था।

इस कष्ट साधना का यह प्रभाव था कि बम्बई की चालीस हजार जैन जनता के दिल में आप बस चुके थ। बहुत से भावुक गृहस्थ तो आज भी आपके नाम की माला रटते हैं। वे बोलते हैं जब कभी कोई उलझन भरी समस्या हमारे सामने आजाती है तो गुरूदेव का स्मरण करते ही विकटतम समस्या एक मिनिट में हल हो जाती है। जब कभी उन्हें सफलता मिलती है तो वे बाल पड़ते है यह अपने गुरूदेव का प्रभाव है। कोट संघ के उपप्रमुख सेठ मगनभाई दोशी, सेठ वीरचन्द भाई उनके सुपुत्र मणिलाल भाई कान्दावाड़ी संघ के सेक्रेटरी श्री गिरधर भाई, सेठ रविचन्द भाई प्रमुख दादर संघ गंभीर भाई, प्रमुख माटुंगा संघ, सेठ हुक्मीचन्द भाई, सेठ नाथालाल भाई पारख आदि कार्यकर्त्ताओं को आप पर अनन्य श्रद्धा है। माटुंगा संघ के भूतपूर्व प्रमुख सेठ रामजी भाई जब मृत्यु शय्या पर थे तब माटुंगा संघ के सदस्य उनके पास पहुंचे और बोले कोई आज्ञा या इच्छा हो तो कहिये। वे बोले एक ही इच्छा है कि गुरूदेव मंत्री श्री किशनलालजी म० का एक चातुर्मास माटुंगा में अवश्य करावें। ये उनके अन्तिम शब्द थे। कितनी श्रद्धा भरी थी इन शब्दों में।

(१४)

बम्बई ही नहीं गुजरात सौराष्ट्र में भी आपका प्रभावपूर्ण विचरण रहा। सोनगढ़ी सिद्धान्त के प्रतिरोध के लिये राजकोट संघ

आपको इन्दौर से ले गया था। वही भीषण ग्रीष्म और तीन महीनों में पांच सौ मील काटे थे। वह चातुर्मास भी यशस्वी रहा। उसके बाद बढ़वाण संघ का अति आग्रह हुआ तो वहाँ भी आपको चातुर्मास करना पड़ा। यहां भी जनता में अति उत्साह था। मालव और सौराष्ट्रवासी भावुक भक्तों का यहां भी काफी प्रवाह उमड़ा। राजकोट की भांति बढ़वाण वासियों ने भी आगंतुकों का मुक्त हृदय से स्वागत किया।

एक बार प्रवचन के दौरान में गुरुदेव ने दशम पोषधव्रत (दया) का निरूपण करते हुए फरमाया यह एक दिन की मानों मुनि दीक्षा है। सौराष्ट्र में दया की परंपरा नहीं है। अतः बढ़वाण के भाइयों में दया के प्रति काफी उत्सुकता दिखाई दी। पर दया का तरीका उन्हें ज्ञात नहीं था। अतः जब गुरुदेव ने उन्हें बताया दया में चौवीस घंटे संवर में बिताने चाहिये, उपाश्रय में रहना चाहिये। पन्द्रह या ग्यारह सामायिक करना चाहिये। एक भाई ने पूछा फिर उसमें भोजन करना या नहीं ? गुरुदेव ने फरमाया हाँ हां उसमें उपवास नहीं करना पड़ेगा यह तो माल खाते हुए मुक्ति में जाने का तरीका है। यह सुनते ही सब खिल खिला पड़े। फिर गुरुदेव ने बताया दया में भोजन के तीन प्रकार हैं। पहला तरीका है बाजार से पूरी मिठाई आदि लेकर खा सकते हैं। दूसरा तरीका है अपने २ घरों से टिफिन लाकर खा सकते हैं। तीसरा तरीका है मुनि की भांति गोचरी लाकर खाना।

एक भाई ने फिर पूछा इनमें सबसे अच्छा तरीका कौनसा है ? गुरुदेव ने फरमाया सबसे अच्छा तो है घर घर से गोचरी लाना। पर यह आपसे शायद बनेगा नहीं। सभी बोल पड़े बनेगा क्यों नहीं हमें तो सबसे अच्छी दया करना है और दो सौ भाई तैयार हो गये। नियत दिन सभी भाई उपाश्रय में आ गये। सबने दशमव्रत लिया और प्रवचन सुना प्रवचन समाप्ति के पश्चात गुरुदेव के नेतृत्व में दो सौ भाई हाथ में

झोली लिये हुए गोचरी के लिये निकल पड़े। जिधर भी ये दयाव्रती निकल पड़ते जन समूह देखने के लिये उमड़ पड़ता। सभी कहते महा-राज ने जादू कर दिया। दो सौ भाइयों को साधु बना लिया। दया-व्रतियों में डाक्टर, वकील, ग्रेजूएट, लक्षाधिपति आदि भी श्रावक थे। इन पक्तियों का लेखक भी दीक्षार्थी के रूप में वहाँ उपस्थित था। वह दृश्य सचमुच देखते ही बनता था। जब एक लक्षाधिपति के घर पहुँचे और भिक्षा के लिये सेठ के पुत्र ने पीतल का पात्र आगे बढ़ाया और उसकी माता भिक्षा देने लगी तो उसके नेत्रों में आंसू उमड़ पड़ें। बडे उल्लास के साथ भिक्षाचरी का काम पूरा हुआ। उस दृश्य को देखकर उस युग की याद आ जाती थी जबकि पांच सौ मुनिवरों के साथ आचार्य विचरते थे। उसी का छोटा सा दृश्य यहां बन गया था। बड़े आनंद के साथ दशमव्रत संपन्न हुआ।

दूसरे दिन माताएं बोलीं हमने क्या पाप किया है? हम दया व्रत क्यों नहीं कर सकती? गुरूदेव ने कहा दयाव्रत में किसी के लिये इन्कार नहीं है। बस फिर क्या था। चार सौ बहिने तैयार हो गई। उन्होंने भी उस ढंग से गोचरी लाकर दशमव्रत किया। वह दृश्य आज भी बढ़वाणवासियों के स्मृति पट पर सजीव है।

बढ़वाण चातुर्मास की परिसमाप्ति के पश्चात दीक्षा प्रसंग को लेकर गुरूदेव मालव में पधारे। उस समय प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्य-मलजी म० कुछ अस्वस्थ थे और चिकित्सा के लिये देवास रुकना पडा चातुर्मास भी वहां करना पड़ा। प्रारंभ में कुछ सुस्ती भरा वातावरण रहा। फिर तो प्रवचनों की धारा ने अजैन जनता को आकर्षित कर लिया। प्रवचनों में मुसलमान बोहरे माली तक आते थे। उन्होंने प्रभा-वना तक बांटी। वहां भी गुरूदेव ने जब दया का प्रवचन दिया तो लोग तैयार हो गये। एक मुसलमान भाई जो प्रतिदिन तीन मील से प्रवचन

में आता या उसने कहा मेरे से कुछ लिया जाय तभी मैं कुछ खा सकता हूँ। उसकी बात मान ली गई और अजैन लोगों ने भी दया की।

श्रद्धेय गुरुदेव मं. श्री किशनलालजी म० ने सर्वत्र आध्यात्मिक और धार्मिक जागृति का शंख फूंक दिया। जहां गये वहां भौतिकता के स्थान पर आध्यात्मिकता की प्रतिष्ठा की। आपके दो शिष्य-रत्न हैं। प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म० आपके प्रतिभा संपन्न शिष्य हैं और लघु शिष्य प्रिय वक्ता श्री विनयचन्द्रजी म. सा. हैं। आपको प्रतिभा और मधुर प्रवचन शैली का वरदान प्राप्त है। आपकी दीक्षा भी बड़े मनोरंजक ढंग से हुई। गुरुदेव जब लीमड़ी (पंचमहाल) थे तब उन्होंने एक बार स्वप्न में नवपल्लवित और पुष्पित हरा भरा आम्रवृक्ष देखा और अगले ही दिन समाचार मिले कि बाबूलालजी मुनिवेश पहन कर आ रहे हैं। पर्युषण के दिनों में हजारों की उमड़ती भीड में जब नये मुनि के रूप में बाबूलालजी उपस्थित हुए तो जनता चकित रह गई। यद्यपि दीक्षा में पारिवारिक मोह काफी बाधक बना पर उस संघर्ष में आप डटे रहे अन्त में विजय आपके पक्ष में रही और बाबूलालजी (विनय मुनिजी म.) गुरुदेव के शिष्य बने। गुरुदेव के दोनों शिष्य उनके नाम को नक्षत्र की भांति चमका रहे हैं।

समाज के विकास में और संघ ऐक्य के कार्य में गुरुदेव का महत्वपूर्ण योग रहा। आजसे सताईस वर्ष पूर्व संघ ऐक्य के लिये उग्र विहार कर बम्बई से अजमेर पधारे। उस सम्मेलन की सफलता में आपका काफी योगदान रहा कान्फरन्स ने समाज में एक सूत्रता लाने के लिये एक प्रतिक्रमण और बीस लोगस्स की योजना रखी तब भी आपने संघ संगठन के लिये अपनी परम्परागत दो प्रतिक्रमण और चालीस लोगस्स की परम्परा त्याग कर कानफरेन्स की योजना स्वीकार करली। उसके बाद भी आपके संघ निर्माण के प्रयत्न चलते रहे।

वीर वर्धमान श्रमण संघ के निर्माण की बात चली तो आपने अपने प्रमुख शिष्य प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म० को ब्यावर भेजा। संप्रदाय और पद के विलीनकरण का प्रश्न आया तो आपने सर्व-प्रथम अपना प्रवर्तक पद त्याग दिया। और शेष चार संप्रदायों के विलीनी-करण के सुफल रूप में वीर वर्द्धमान श्रमण संघ मूर्तरूप ले सका।

जब सादड़ी सम्मेलन का आयोजन हुआ तब आप शिष्य समुदाय के साथ बम्बई थे। उस समय भी आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था फिर भी आपने संघ हित के लिये अपने प्रमुख शिष्य प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म०को बम्बई से सादड़ी भेजे। वहाँ वर्द्धमान श्रमण संघ की योजना को मूर्तरूप देने में उनका भी प्रमुख हाथ रहा। श्रमण संघ ने गुरूदेव को मालवा मंत्री का पद दिया। इधर सोजत सम्मेलन ने आपको महाराष्ट्र मंत्री का पद दिया। वयोवृद्ध होते हुए भी आपने कुशलता के साथ उस पद को निभाया और संघ की सेवा कर समाज के सामने एक आदर्श उपस्थित किया।

आप में शास्त्रीय ज्ञान की जितनी गहराई थी स्वभाव में उतना ही माधुर्य था। आपके वार्तालाप में हास्य का हल्का पुट रहता था। आगंतुक खिल उठता था। आगमिक शैली के प्रवचनों में भी श्रोता रस में डुबकी लगाता था तो चुटिले व्यंग भरे उदाहरणों से खिलखिला उठता था। बातचीत में भी कभी कभी ऐसा व्यंग छोड देते थे कि वह खिल उठता थो। इन्दौर की घटना है। एक बार एक सज्जन आये जो थे तो जैनेतर किन्तु जरा पड़ोसी संप्रदाय के चक्कर में थे। एक दिन भर्राये हुए थे। बातचीत में जरा उनका पारा चढ गया और वे बोल पड़े देखिये महाराज! मैं सौ गुन्डे का एक गुन्डा हूं। इन्दौर का मै पहले नम्बर का मव्वाली हूँ।

गुरुदेव जरा व्यंग कसते हुए बोल उठे! मैं तो समझता था आप बडे सज्जन हैं। इन्दौर में प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति हैं किन्तु आज

पता लगा कि आप गुण्डे हैं। यह सुनते ही सेठ सकपका गये और पैरों में गिर गये गुरुदेव मुझे माफ करो। मैं गल्ती पर था।

गुरुदेव की वाणी में जादू बरसता था। पुण्यवान् और गुणवान शब्द तो उनकी जीभ पर थे। कोई भी वन्दना करने आता उसे पुण्यवान के मधुर संबोधन से बुलाते थे। आगन्तुक के मन में प्रसन्नता के फोव्वारे छूट पड़ते थे। आगन्तुक ही नहीं लघुमुनियों के साथ भी उनका वही माधुर्य पूर्ण वर्ताव था। कोई भी काम होता बड़े प्रेम से कहते तूं बड़ा पुण्यवान् है, बड़ा कुलीन है। पानी भी पीना होता तो बड़े प्रेम से कहते ला एक पात्री पानी ला दे तुझे धर्म होगा। हम बोल पड़ते गुरुदेव आप यह न भी कहें तब भी पानी ले आवेंगे। वे फरमाते हां ले तो आओगे किन्तु ऐसा कहने से काम करने वाले के दिल में उत्साह रहता है।

सन्त जीवन की सबसे बड़ी विशेषता है अन्तर और बाह्य की एकता *जिसके मन में कुछ और है वाणी में कुछ और है और आचरण में तीसरी ही बात है वह सन्त नहीं हो सकता। जीभ और जीवन के बीच की खाई जितनी चौड़ी होती जाएगी सन्तवृति उतनी ही दूर होती जाएगी। जीभ और जीवन की समता में सद्वृत्ति जीती है। गुरुदेव एक महान सन्त थे और उनमें सन्त जीवन की सरलता साकार हो रही थी। छल छन्द को तो वे जानते ही नहीं थे। कभी उन्होंने अन्तर और बाह्य में द्वैत नहीं रखा। कभी किसी को कुछ कहा तो दूसरे को कुछ और कहा पूरे जीवन में कभी एक भी घटना ऐसी नहीं हुई। ज्यों ज्यों अवस्था ढलती गई, सरलता त्यों त्यों बढ़ती ही गई। नहीं तो ऐसा होता है बुढ़ापा आता है जीवन रस समाप्त हो जाता है और मनुष्य जीवन रस के अभाव में चिड़चिड़ा हो जाता है पर गुरुदेव उसके अपवाद थे। पहुंची हुई

---

*मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं हि महात्मनाम्।
मनस्यन्यद् वचस्यन्यद् कार्यमन्यद्धि दुरात्मनाम्॥

अवस्था, रोग की पीड़ा सब कुछ होते हुए भी स्वभाव की सरलता और माधुर्य में जरा भी कमी नहीं आई।

वह अनोखा दृश्य

ऐसे तो आप दस वर्षों से मधुमेह की व्याधि से पीड़ित थे। किन्तु अन्तिम दस माह में तो व्याधि ने जो उग्र रूप लिया कि शरीर के बल को धो डाला। फिर भी चेहरे पर अलौकिक शान्ति विराज रही थी। दिव्य तेज चेहरे पर खेल रहा था। पैर में गहरा घाव था। डाक्टर इंजेक्शन लगाते, चीरा देते तब भी ऊफ तक नहीं करते थे। जब भी आपसे पूछते तबियत कैसी है आप उसी शान्ति के साथ उत्तर देते 'अच्छी है।" कोई तकलीफ नहीं है। तब मैं विनोद में कह बैठता फिर हम विहार करें। मुस्कुराते हुए बोलते विहार तो नही हो सकता।

तन घुल रहा था पर मन तो समता और संयम के रस में डूब रहा था। पीड़ा कहाँ हो रही है क्यों हो रही है उसकी ओर लक्ष्य नहीं था। चातुर्मास में जब पीडा ने उग्र रूप लिया तब उनके प्रिय शिष्य प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म० ने कहा चतुर्विध संघ के साथ क्षमा-याचना करलें और उनके समक्ष आलोचना करलें। गुरुदेव ने सहर्ष स्वीकृति दे दी। खबर मिलते ही अगले दिन साधु साध्वी श्रावक और श्राविकाओं का समूह उमड़ आया। रतलाम, उज्जैन, खाचरोद आदि शहरों के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित थे। इन्दौर संघ के प्रमुख सेठ सुगनचन्दजी भंडारी, मंत्री राजमलजी माणकलालजी भँवरलालजी धाकड़ आदि भी उपस्थित थे। गुरुदेव की ओर से प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म० ने फरमाया कि 'मैंने श्रद्धेय गुरुदेव आचार्य श्री नन्दलालजी म० के पास चारित्र ग्रहण किया और यथाशक्य निरतिचार पालने का प्रयत्न किया जहां तक मुझे स्मरण होता हैं मुझे एक भी बड़े दोष के सेवन करने का प्रसंग उपस्थित नहीं हुआ। फिर भी मानव भूल का पात्र है।

अतः चारित्रपथ में स्खलना हुई हो और मधुमेह की बीमारी से विगत दस वर्षों से मैं पीड़ित हूँ। अतः उसके उपचार में साधारण दोषादि लगे हों उन सबके प्रायश्चित स्वरूप चतुर्विध संघ के समक्ष ६ मास का दीक्षाछेद स्वीकार करता हूं।' पं० श्री सौभाग्यमलजी म. ने पूछा आपको दीक्षा छेद स्वीकार है? गुरुदेव ने स्वीकृति सूचक मुद्रा में कहा हां खुशी से स्वीकार है। फिर उन्होंने कहा चतुर्विध संघ आपसे क्षमा याचना के लिये एकत्रित हुआ है। ये आपके शिष्य और पं० कवि श्री सूर्यमलजी म० प्रवर्तिनी श्री राजकुंवरजी म. आदि साध्वियांजी म० विराजे हैं और सैंकड़ों श्रावक और श्राविकाएं आपसे क्षमा मांगते हैं। अत्यन्त अशक्त अवस्था में भी हाथ जोड़कर गुरुदेव ने अत्यन्त धीमे स्वर में कहा सबको खमाता हूँ! प्रत्युत्तर में सबने सिर झुकाते हुए कहा हम आपसे क्षमा मांगते हैं। आप संघ के नायक हैं आपने हमको आध्यात्म का पथ दिखाया है। और यह कहते हुए सबकी आँखे भर आई। वह दृश्य सचमुच कोमल करुण दृश्य था।

तब भी आपका स्वास्थ्य इतना बिगड़ चुका था कि विश्वास नहीं होता था कि आज की रात्रि भी निकल सकेगी हम सबके सद्भाग्य से तबियत कुछ संभली और चातुर्मास समाप्त हो गया।

वह चातुर्मास हमारा बम्बई में था। गुरुदेव के बिगड़ते स्वास्थ्य के समाचार जब मिलते तो मन अज्ञात शंका से कांप उठता। विहार के लिए मन तड़प उठता पर चातुर्मासिक बन्धन दीवार की भांति सामने आ जाता था। सद्भाग्य से चातुर्मास समाप्त हुआ और श्रद्धेय पं० श्री नगीनचन्द्रजी म० प्रिय वक्ता श्री विनयचन्द्रजी म० और इन पंक्तियों का लेखक इन्दौर आने के लिये चल पड़े। पं० श्री नगीनचन्द्रजी म० का स्वास्थ्य कमजोर था। हार्ट की बीमारी थी। फिर भी प्रतिदिन दस और पन्द्रह मील का विहार कर डेढ़ माम में इन्दौर पहुंचे। गुरुदेव के दर्शन पाकर श्रम सफल हो गया। सफल क्या हो गया श्रम दूर हो गया। रास्ते

में भी जब कभी लोग बोलते आप चार दिन ठहरकर श्रम दूर कर लीजिये। तब हमारा एक ही उत्तर होता श्रम तो गुरुदेव के चरणों में ही दूर होगा और हुआ वही। इधर कवि रत्न श्री सूर्यमलजी म. गुरुदेव की आज्ञा से चातुर्मास में ही पधार चुके थे। संगीत प्रिय श्री सुरेन्द्र मुनिजी म. सेवाभावी श्री हुक्म मुनिजी म. उदार चेता श्री रूपेन्द्र मुनिजी, तरुण तपस्वी श्री उमेश मुनिजी म. व्याख्याता सेवाशील श्री जीवन मुनिजी आदि सभी मुनिवर सेवा में जुटे थे। रात्रि के जागरण की भी ड्यूटियां बन्धी हुई थी। सेवा का दृश्य भी अनोखा था। मुनियों की सेवा चरम सीमा पर थी तो गुरुदेव की समता भी चरम सीमा को छू रही थी।

इधर डा. मुखर्जी, डा. केलकर, डा. सिपैया, डा. कोठारी, डा. पोरवाल आदि इन्दौर के प्रमुख डाक्टर और वैद्य हरिश्चन्द्रजी निस्वार्थ सेवा दे रहे थे। इंदौर संघ और उनके प्रमुख कार्यकर्ता सेठ भंवरलालजी धाकड़ आदि की सेवा बराबर बनी हुई थी।

आखिर वह दिन भी आ पहुंचा। तारीख ३-१-६१ जब कि शीत के प्रबल दौरे ने प्रातः गुरुदेव को बैचेन कर दिया, तत्काल डाक्टर आये बोले केस गम्भीर है। तभी गुरुदेव को सागारी संथारा करा दिया। दोपहर को थोड़ी राहत मिली कि संध्या के ५-४५ पर सूर्यास्त के साथ जैन जगत का प्रभाव पूर्ण सूर्य भी अस्त हो गया।

तार और फोन से समाचार मिलते ही दूर दूर के लोग गुरुदेव के अन्तिम दर्शन पाने के लिये उमड़ पड़े। रात से ही लोगों का आवागमन शुरू हो गया। प्रातः ग्यारह बजने के साथ साथ बाहर के आगंतुकों की संख्या दो हजार तक पहुंच गई और साढ़े ग्यारह बजे से गुरुदेव के भौतिक देह को जरी निर्मित पालखी में बैठाया गया।

तीन तीन बैंडों के साथ झुकी गर्दन से अश्व चल रहे थे और गजराज पर आधा झु।। केशरिया और भजन मंडली के साथ १५ हजार

नरनारी भारी मन और भीनी आँखे लिये चले जा रहे थे। सड़क के दोनों और कतार बद्ध जनता गुरुदेव के भौतिक देह के दर्शनों के लिये खड़ी थी। सैंकड़ों की संख्या में जैन, अजैन, वैष्णव, मुसलमान बोहरे आदि अपने भवनों की खिड़कियों से दर्शन कर रहे थे। देखने वाले बड़े बूढ़ों के मूंह से निकल पड़ा ऐसी शवयात्रा इन बूढ़ी आँखों ने आजतक नहीं देखी।

चन्दन चिता ने गुरुदेव के भौतिक देह को समाप्त कर दिया। किन्तु उनका यशः शरीर मानव के स्मृतिपट पर अजर अमर है। उनका जीवन इतना पवित्र और सरल था कि शत्रु भी उनके चरित्र पर अंगुली उठाने का साहस नहीं कर सकते थे। वास्तव में उनका शत्रु कोई था ही नहीं। उन्होंने सर्वत्र मित्र बनाये। मित्र बनाने की कला उनसे ही सीख सकता था। गुरुदेव के मधुर संयमी जीवन ने श्रमण संस्कृति को दीप-शिखा को प्रज्वलित किया है और इसीलिये श्रमण संस्कृति के इतिहास में उन्होंने उज्ज्वल पृष्ठ जोड़ा है।

जिन्दगी ऐसी बना जिन्दा रहे दिल शाद तू।
जब न हो दुनियां में तो दुनियां को आये याद तू॥

जिनकी संस्मृति सदा रहेगी

(श्रद्धेय मन्त्री प्रवर किशनलालजी महाराज)

लेखक—श्री विजयमुनिजी म. 'साहित्यरत्न'

जिन युग-पुरुषों ने समाज का नव-निर्माण किया है तथा समाज के सांस्कृतिक विकास में योग-दान दिया है जन-चेतना उनको कभी भुला नहीं सकती। व्यक्ति भले ही अमर न रहे, परन्तु उसका व्यक्तित्व कभी मिटता नहीं है। व्यक्ति के व्यक्तित्व की महानता, उसके संयम, शील और सदाचार में है। जो व्यक्तित्व जन-चेतना पर अंकित हो जाता है, वह अजर-अमर होकर शाश्वत बन जाता है। इस अर्थ में श्रद्धेय मंत्री प्रवर किशनलालजी महाराज महान थे—निस्सन्देह महान थे। उनकी महानता को चुनौती देने की किसी में ताकत नहीं थी। एक युग-पुरुष में जिस दृढ़तम निश्चल वल की आवश्यकता होनी चाहिए, वह मंत्री प्रवर में थी। वे अध्यात्म शक्ति के अमित भण्डार थे।

एक युग पुरुष में जिन अनुकरणीय गुणों की भक्त-जन कल्पना कर सकते हैं वे सब-के-सब श्रद्धेय किशनलालजी महाराज में साकार होकर उभरे थे। अल्प-भाषण, अल्प-भोजन और अल्पशयन ये सद्गुण संत-जीवन की साधना की कसौटी है। स्पष्टवादिता और नैतिकता ये दोनों उनके जीवन के सर्वोच्च सद्गुण थे। अमर्यादा को वे उसी भांति सहन नहीं करते थे, जैसे सागर कभी अमर्यादित नहीं होता। श्रद्धेय किशनलालजी महाराज ज्ञान-साधना में सागर से भी अधिक गम्भीर थे और चारित्र-साधना में हिमालय से भी अधिक ऊँचे थे।

संयम में कठोर, व्यवहार में कोमल और वाणी में मधुर-यह त्रिवेणी सदा उनके जीवन में होकर प्रवाहित होती रही थी। श्रद्धेय किशनलालजी महाराज का जीवन समन्वय का संगम स्थल था। आचार में विचार; और विचार में आचार उनके जीवन की यह विशेषता थी। मंत्रीजी महाराज हृदय से सरल, मन से सुमना और बुद्धि से विवेकशील युग-पुरुष थ। विचारों में उदारता और जीवन में सादगी को वे पसन्द करते थे। दूसरों की निन्दा करने वाले को, दूसरों की कटु-आलोचना करने वालों को और दूसरे के अनुभव में दोष देखने वाले तुच्छ-बुद्धि लोगों को वे कभी पसन्द नहीं करते थे। उनका यह जीवन-सूत्र था कि दूसरों के दोष देखने की अपेक्षा यदि मनुष्य स्वयं ही अपने दोषों का परिमार्जन करे तो वह अपने जीवन को सरस, सुन्दर और मधुर बना सकता है

जैसा विचार, वैसा उच्चार और जैसा उच्चार वैसा आचार—संत जीवन की यह सच्ची कसौटी है, जिस पर श्रद्धेय किशनलालजी महाराज खरे-उतरे थे। उनकी वाणी में मधुरिमा थी, उनके विचार में गरिमा थी और उनके शील में महिमा थी। जो विचारा, वह कह दिया जो कह दिया, वह कर दिखाया यह उनके जीवन का एक मुख्य सिद्धान्त था। उस ज्योतिर्मय जीवन में सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश था, अन्धकार को वहां अवकाश नहीं था।

समाज के रंग-मंच पर उनके व्यक्तित्व का अभ्युदय उनकी जन-मन मोहिनी वक्तृत्व कला के चरम-विकास में से प्रादुर्भूत हुआ था। विचारों का वेगवान् प्रवाह, वाणी का ओजस और जन-चेतना के प्रसुप्त भावों को प्रबुद्ध करने की उनकी अपनी अभिव्यक्ति उनके साहसिक व्यक्तित्व गुण की विशेषता है। अपनी वाणी के वेगवान प्रवाह में वे जन-मन को इस प्रकार बहा ले जाते हैं जैसे वर्षाकालीन महानद अपने वेगशील प्रवाह में जड़-चेतनमय वस्तु-पुञ्ज को बहा ले जाता है। काश!

ऐसा प्रखर व्यक्तित्व हमारे मध्य में युग-युग तक बना रहता। किन्तु विधि को यह कहां स्वीकार था ? आज मंत्री प्रवर श्रद्धेय किशनलालजी महाराज भले ही भौतिक रूप में हमारे मध्य में विद्यमान न हों, फिर भी सदगुणों की दृष्टि से वे आज भी हैं और भविष्य में भी रहेंगे। भारतीय संस्कृति इसी–'न होकर भी होने वाले तत्व की उपासना करती हैं।'

श्रद्धेय मंत्रीजी महाराज इस दृश्यमान पंचभूतात्मक जगत् में आज विद्यमान नहीं हैं–यह पढ़कर और सुनकर मेरे मानस में किञ्चित् दुःखानुभूति अवश्य होती है, परन्तु उनके सदगुणों की महिमा सुनकर होने वाली सुखानुभति निश्चय ही उससे भी महान है। आपके परम-पवित्र दर्शनों का लाभ मुझे नहीं मिल सका–मन की बात मन में ही रह गई। परन्तु आपके महान् व्यक्तित्व के दो समुज्ज्वल प्रतीक–'सौभाग्य' और 'विनय' आज भी आपकी संस्मृति को ताजा बनाने के लिए पर्याप्त है। समाज को 'सौभाग्य' देकर और जीवन को 'विनय' देकर आप अपने कर्तव्य-भार से मुक्त होकर हमारे लिए एक महान आदर्श छोड़ गए है। सम्भवतः आपके जीवन की जीती-जागती सुन्दर कृति 'मनोहर' के रूप में अभिव्यक्त हुई है। यह जन-मन-भावन 'मनोहर' वस्तुतः मनोहर ही है–आपके जीवन की एक सुन्दर कला-कृति के रूप में समाज के लिए सुन्दर वरदान सिद्ध होगा। इसमें न शंका है और न सन्देह।

आपके जीवन की संपूर्ण देन की पवित्र परम्परा यहीं पर परि-समाप्त नहीं हो जाती। 'सज्जन' जैसा सती-रत्न समाज को देकर आपने उसे समृद्ध बना दिया है। आपकी परिवार वाटिका में 'पुष्प' की भीनी भीनी सुरभि आज भी महक रही है। जीवन की 'ललित' कला भी आपकी एक समाज को अपूर्व देन है। सर्व प्रकार से जीवन को 'रमणीक' बनाने में आप सिद्ध हस्त कलाकार थे। जब तक जीवन में 'रमणीकता

की अभिव्यक्ति न हो तब तक वह सफल नहीं कहा जा सकता। परन्तु आपका जीवन सफल ही नहीं, पूर्णतः सफल था। मानव-जीवन के विकास के लिए जिन सद्‌गुणों की आवश्यकता थी, वे सभी सदगुण साकार रूप में आपने समाज को सौंपे हैं। अतः आपका जीवन सफल है, कृत-कृत है, धन्य है।

एक मधुर स्मृति

लेखक—श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री, 'साहित्यरत्न'
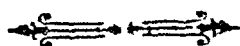
हा ! लेखनी, हृद् पत्र पर, लिखनी तुम्हें है वह व्यथा।
निज कालिमा में डूबकर, तैयार होजा सर्वथा ॥

'श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री किशनलालजी म० का इन्दौर में स्वर्गवास हो गया' ये दुःखद समाचार 'तरुण जैन' में पढ़ते ही कलेजा धक् हो गया। फिर कुछ क्षणों के पश्चात एक चित्र-विचित्रसी अनुभूति होने लगी, अनेक बातें दिमाग में आने लगीं और अन्य अनेक प्यारे सुहावने चित्र आंखों के सामन घूमने लगे।

यह एक निश्चित सिद्धान्त है कि जो आया है वह एक दिन अवश्य जायेगा। जो जन्मा है वह एक दिन अवश्य मरेगा। मंत्री मुनिश्रीजी चले गये हैं पर वे जीवन की स्नेह स्निग्ध मधुर स्मृतियाँ छोड़ कर गये हैं।

अतीत की स्मृतियाँ कितनी मधुर कितनी सुन्दर, और सरस होती हैं। मृत्यु के पश्चात् व्यक्ति नहीं रहता किन्तु उनकी स्नेह स्मृतियां ही शेप रहती हैं। भौतिक शरीर का अभाव स्मृतियों में और भी अधिक मधुरता व सरसता का संचार कर देता है।

मंत्री मुनि श्री की स्मृतियां मृत आत्मा की स्मृतियां नहीं है। वे इतनी सजीव और ताजा है कि जिससे यह आभास हो रहा था कि

वे अभी जीवित हैं, कौन कहता है उनका स्वर्गवास हो गया। भले ही उनका भौतिक देह हमारे से पृथक् हो गया किन्तु यशः शरीर से वे आज भी हैं, और कल भी रहेंगे। देखिए शायर भी तो यही कह रहा है–

जिन्दगी ऐसी बना, जिन्दा रहे दिल शाद तू।
जब न हो दुनिया में तो दुनिया को आये याद तू॥

"कृष्ण" शब्द में कविता का मिठास है, समुद्र की गहराई है, फूल की कोमलता है, गंगा की पवित्रता है और है इतिहास की पुण्य गाथा! और 'मुनि' में है भारत की सर्वोच्च संस्कृति, त्याग और वैराग्य का, संयम और साधनाका, अहिंसा और अनेकान्त का, क्षमा और सरलता का प्रतिनिधित्व करने वाला गुण। दोनों के सुमेल से जिसका नामकरण हुआ वह सन्त कितना महान होगा, कितना लुभावना होगा।

नाम ही न , शरीर भी सुन्दर था, सुहावना था। गेहूँ वर्ण की देह में देदीप्यमान कंचन की सी काया, मझला कद, एकहरा और सुन्दर शरीर, चिकना और चमकता हुआ ललाट, उन्नत नासिका, अनुभवशील चमचमाती हुई सतेज आंखें, सजग कर्ण, अधरों पर खेलती हुई मधुर मुस्कान, विरल रूप में शोभित सिर पर श्वेत केशराशि और गजानन सा लम्बा उदर दर्शकों के नेत्रों को ही आकर्षित नहीं करता किन्तु उनके चित्त को भी चुरा लेता था।

तन से जितने सुन्दर थे, उससे भी अधिक मन से मृदु थे। विचारों से उदार बुद्धि से विवेकशील थे और हृदय से भावुक थे। वस्तुतः वे सरलता और सौम्यता के देवता थे। जो मन में सो वाणी में और जो वाणी में सो कर्म में। जो अन्दर वही बाहर। उनकी मति सरल थी, कथनी और करनी सरल थी व्यवहार सरल था। आचार्य की यह वाणी ही उनके जीवन का सही रूप था–

"सरल मतिः सरल गतिः सरलात्मा, सरल शील सम्पन्नः
सर्वं पश्यति सरलं, सरलः सरलेन भावेन"

उनका व्यक्तित्व एक उच्च कोटि के सन्तुलित विचारक और भारतीय संस्कृति की अत्युच्च परम्पराओं से प्रभावित था। क्रान्तदर्शी ही नहीं अपितु शान्तदर्शी भी थे। अतिशयता, अधैर्यता, असन्तुलन, व्यग्रता और अव्यवहारिकता न उनके कार्य में थी और न उनके व्यवहार में ही। निश्चित क्रम ही उनकी कार्य विधि का अनूठा गुण था।

वे तन से वृद्ध हो चले थे, किन्तु मन से नौजवान थे। जवानी के प्रतीक उभरे गाल, सुघर बाहें, सुघड़ शरीर और काले कजराले बाल नहीं थे किन्तु मन इतना तेज तर्रार था कि नौजवान भी पीछे बैठ जाते थे। निष्क्रिय बैठे रहना उन्हें पसन्द नहीं था। वास्तव में जीवन का आनन्द वही लूट सकता है जिसक दिल में जोश है, कार्य करने का उत्साह है। जीवन की आंख मिचौनी के एक दशक पूर्व मैंने उनके दर्शन किये थे इन्दौर, नासिक और इगतपुरी में, तब मैंने अपनी आंखों देखा था वृद्ध तन में नौजवानों सा उत्साह था।

वे मधुर वक्ता थे। लच्छेदार भाषा में भाषण देने वाले अनेक वक्ता मिलेगें किन्तु किशनलालजी म० जैसा मधुर प्रवक्ता ढूंढे नहीं मिलेगा। उनकी वाणी मिश्री के समान मीठी, कोयल के समान मधुर थी, वे बोलते थे तो ऐसा प्रतीत होता मानों फूल ही बिखर रहे हो। उनकी भाषण शैली बड़ी ही मोहक थी, श्रोताओं के हृदय को चुम्बक की तरह सहज ही आकृष्ट कर लेती थी।

वे विनोदी और हँसमुख थे, गमगीन रहना, सुस्त रहना और मुहर्रमी सूरत बनाये रखना उन्हें कतई पसन्द नहीं था। स्नेह-सिक्त मधुर मुस्कान उनकें आनन पर सर्वदा दीप्त रहती थी। गुलाब की तरह उनका मुखड़ा सदा खिला रहता था। वे अपने विनोदी स्वभाव से गंभीर और गमगीन वातावरण को भी हँसी खुशी में बदल देते थे। उनके मुख की मुस्कान सब को प्रसन्न कर देती थी एक शब्द में कहा जाय तो उनके जीवन की सफलता का महान् रहस्य ही प्रसन्नता और उल्लास था।

वे लघु पुस्तिकाओं से अत्यधिक प्रेम करते थे। यदि यह कहा जाय कि उन्हें लघु पुस्तिकाएँ जीवन से भी अधिक प्यारी थी तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। खुरदेह अवस्ता, गीता पंचरत्नादि और कुराने शरीफ के अतिरिक्त अन्य अनेक लघु पुस्तकों का संग्रह मैंने उनके पास देखा। वे उन्हें बड़ी ही सावधानी से रखते थे। अवलोकनार्थ देते समय भी उन्हें यह सतत ध्यान रहता था कि कहीं वे खराब न करदें।

वे सहृदयी और पर दुःख कातर थे। दुःखी व्यक्ति को उनके चरणारविन्दों में आकर वही सान्त्वना और सहायता प्राप्त होती थी जो समुद्र पर उड़ने वाले और किनारा न पा सकने वाले पक्षी को जहाज का मस्तूल देखकर मिलती है।

वे संगठन प्रेमी थे, "अखण्ड-रहे यह संघ हमारा" यही उनके जीवन का अन्तिम स्वर था। वृद्धावस्था के कारण सादड़ी, सोजत और भीनासर के सम्मेलन में वे स्वयं उपस्थित नहीं हो सके किन्तु उन्होंने अपने प्रतिनिधि अपने प्रिय शिष्य प्रसिद्ध वक्ता सौभाग्यमलजी म. को प्रेषित किये। जिस समय सम्प्रदायवाद का स्वर मुखरित था उस समय भी उनका अन्तर मानस सम्प्रदायवाद के दल-दल से ऊपर उठा हुआ था। उनकी संगठन निष्ठा अपूर्व थी। वे श्रमण संघ का आचार और विचार की दृष्टि से विकास चाहते थे।

इस प्रकार श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री में अनेक गुण थे, आज भी मानस पट पर चल चित्रों की तरह वे संस्मरण चमक रहे हैं। भविष्य में भी चमकते रहेंगे उनकी स्मृतियाँ हमारे जीवन को उन्नत बनावें, उनके सद्गुणों के प्रति मैं अपनी ओर से श्रद्धा के सुमन समर्पित करता हूँ।

मरने वाले मरते हैं, लेकिन फना होते नहीं
ये हकीकत में कभी हमसे जुदा होते नहीं,

मिष्ट वचनी मन्त्री पं. श्री किशनलालजी म. सा.

लें०—श्री समीर मुनि 'सुधाकर'

सर्व प्रथम सौराष्ट्र के बोटाद गाँव में मझले कद के हंस मुखी पं. कवि श्री कृष्णचन्द्रजी म. अपर नाम श्री किशनलालजी म. के दर्शन हुए। उसके बाद लीमड़ी (पंचमहाल), झाबुआ व छायण में कुछ दिन-न दूर न नजदीक रहने का अवसर प्राप्त हुआ। उन दिनों मैंने इतना ही पहचाना था कि ये पं० श्री किशनलालजी म. है, इससे विशेष परिचय न हो सका। क्योंकि वह सम्प्रदायवादी युग था।

सं. २००९ में सादड़ी सम्मेलन हुआ और वहाँ सम्प्रदायवाद का व्यूह खत्म होने से असाम्प्रदायिक वृत्ति वाले मुनियों का मानस शुद्ध-सरल होने से वे बहुत नजदीक आये। साथ रहना, सहयोग भाव आदि बढा। सम्मेलन के बाद मालवे के डुँगर प्रान्त में तथा इन्दौर अध्ययन के लिये दो तीन वर्ष रहा, तब पूज्य श्री धर्मदासजी म. सा. के परिवार कें मुनियों के साथ ही रहा। कवि पं. श्री सूर्यमुनिजी म. व उनके शिष्यों के साथ रहा तब परस्पर सहृदय भाव इतना बढ़ गया कि जाने हम एक ही परिवार के है। इन्दौर श्री पार्श्व मुनि की दीक्षा हुई तब और थान्दला श्री उमेश मुनि 'अणु' के दीक्षा प्रसंग पर सभी मुनियों तथा महासतियों के संपर्क में आने से परस्पर की अभिन्नता विशेष बढ़ी। अवधानी पं. श्री केवल मुनिजी के साथ थोड़े दिनों ही रहे। अवधानी मुनिजी एवं पं. श्री माणक मुनिजी उन्ही दिनों स्वर्गवासी हो गए, उनका साहचर्य भाव आज भी भूलाए नहीं भुलता। थान्दला दीक्षा प्रसंग पर

मंत्री पं. श्री किशनलालजी म., वक्ता पं. श्री सोभाग्यमलजी म., पं. श्री सागर मुनिजी, पं. श्री नगीन मुनिजी, पं. श्री विनय मुनिजी आदि से पूर्ण परिचय हुआ। इन्दौर के दीक्षा प्रसंग पर वहां बहुत मुनिवरों का विराजना रहा, सभी की गौचरी का उत्तरदायित्व मंत्रीजी म. ने मेरे पर रख दिया था। तभी से मंत्रीजी म. के साथ जब-जब भी रहा वे गौचरी का कार्य मेरे जिम्मे कर देते थे। वे अन्य मुनियों के सामने मेरे द्वारा गौचरी की सुव्यवस्था के सम्बन्ध में अपनी विशेष प्रसन्नता प्रकट करते रहते थे। इस प्रकार मंत्रीजी म. से व उनके शिष्य-समुदाय से मेरी अभिन्नता इतनी हो गई कि हम आज भी अपने को अपृथक् ही माने हुए हैं।

मंत्रीजी महाराज के साथ सं. २०११ के साल इन्दौर में साहित्य रत्न के अध्ययन के लिये चातुर्मास साथ रहा। चातुर्मास में मंत्री जी म. ने आज्ञा की कि तुमसे हम दूसरा काम नहीं कराएगें किन्तु गौचरी तो तुम्हें ही लानी होगी। मंत्रीजी म. की आज्ञा का पालन करना ही पड़ा। मैं दीक्षा व वय से बहुत छोटा होते हुए भी कभी भी तुकारात्मक तथा एक वचन का उपयोग करते मैंने नहीं सुना। अन्य मुनियों के प्रति भी पूरा समादर का व्यवहार रखते थे। आपके वचनों में बहुवचन का प्रयोग ही विशेष होता था। उल्लास और प्रसन्नता के तो भण्डार थे। छोटा बालक या बड़ी वय का कोई भी गृहस्थ वन्दना करता तो 'दया पालो-पुण्यवान इस शब्द को बड़े लहके से बोलते। यह शब्द उन्हीं के मुंह पर अधिक शोभता था।

उस चातुर्मास में श्री मनोहर मुनिजी साहित्य रत्न के दूसरे खण्ड में थे, मैं प्रथम खण्ड में था। हम दोनों मुनि व पं. श्री विनय मुनिजी महावीर भवन के अगले हिस्से में रहते थे। अध्ययन में किसी भी प्रकार का विक्षेप नहीं आने दिया जाता था। व्याख्यानादि प्रवृत्ति से भी हम मुक्त थे।

मंत्री म. के हृदय में सभी के प्रति स्नेह था। सभी की पूछ-परछ करते रहते थे। यदि संयोगवश किसी का चित्त वे क्षोभित देखते तो अपने वचन माधुर्य से उसी समय उनके हृदय कमल को प्रफुल्लित कर देते थे। वे संयम भीरु थे। यदि किन्हीं मुनियों की वचन शिथिलता देखते तो भी उन्हें दुःख होता था और प्रसंग पर टकोर भी कर देते थे। जब भी संयम सम्बन्धी न्यूनता मुनियों में उन्हें मालूम हुई तो वे घबरा जाते और संकोचता का अनुभव करते। वे वक्ता पं. श्री सौभाग्यमलजी म. को 'सौभाग' ही कहा करते थे, ऐसे समय 'अरे सौभाग्य देखतो उन्हें इस बाबत कुछ कह, नहीं तो व्यवहार अच्छा नहीं लगेगा।' उन्हें संयम न्यूनता पसन्द नहीं थी। संयम क्रिया में वे स्वयं अधिक सावधान रहते और दूसरों को भी सावधान रहने का आदेश दिया करते थे। उनमें संयम जागरुकता उत्तम व प्रशंसनीय थी।

प्रवर्तक श्री ताराचन्द्रजी म० के स्वर्गवास के बाद उस परिवार के वे ही स्थविर थे। आपने अपने संयम काल में महाराष्ट्र, मद्रास, मैसूर, सौराष्ट्र आदि दूर-दूर के देशों का विहार किया। आपको छोटी साइज की पुस्तकें अधिक पसन्द थी। आपके पास गुटकों के आकार की कई पुस्तकें सदा साथ रहती थी। आप कवि थे, आपका कंठ सुरीला था। गाने में व कविता बनाने में कुशल थे। आपके बनाए हुए काव्य, गायन, कविता प्रकाशित है। आप वक्तृत्व शक्ति धारक थे। आपका व्याख्यान हास्य-रस प्रधान रहता था। शास्त्र-अर्थ समझाने में आप अच्छे निपुण थे। अर्थात आध्यात्मिकता कवित्व तथा वक्तृत्व आदि गुण संपन्न थे।

सादड़ी सम्मेलन के समय मंत्रियों के चयन में आपका नाम भी आया और श्रमण संघ में मंत्रीत्व का बहुमान आपको दिया गया। आपके दो शिष्य हैं, प्र वक्ता पं. श्री सौभाग्यमलजी म० तथा प्रिय वक्ता पं.

श्री विनय मुनिजी, दोनों प्रखर वक्ता है। मंत्रीजी म० को कई वर्षों से रक्त चाप की व्याधि थी। व्याधि होते हुए भी आप विहार करते रहे किन्तु अन्तिम दो तीन वर्ष से आप में विहार की शक्ति नहीं रही होने से आप इन्दौर में विराजे रहे। आपने अन्तिम दिनों आलोचना करके सर्व प्राणियों से क्षमत क्षमापना किया। निःशल्य भावों को धारण कर समता भाव से अपने शेष श्वासों को पूर्ण कर सं. २०१७ के चातुर्मास के बाद माघ मास में आप इस नश्वर देह का त्याग कर स्वर्गवासी हुए। जैन धर्म में मृत्यु को दुःखद रूप से नहीं माना है। प्रत्येक प्राणी को मृत्यु प्राप्त होना अनिवार्य है। जब तक सर्व कर्म रहितता नहीं होती तब तक जन्म और मृत्यु सभी प्राणियों के साथ लगा रहता है। जैन मुनियों में मृत्यु भय त्याज्य है और मृत्यु के बाद अन्य मुनियों के लिये आर्तध्यान भी त्याज्य है। अतः मंत्री मुनिश्री के स्वर्गवास के बाद उनकी अनुपस्थिति के लिये दुःख मनाया नहीं जा सकता, किन्तु उनके गुणों का स्मरण अपने विकास के लिये करना आवश्यक भी है एतदर्थ मुझे अपने अनुभव के आधार पर कहना होगा कि स्व० मंत्री मुनिजी स्था. समाज के एक सुदृढ़ अंग थे अथवा तो महान सन्त थे।

महामालव के इतिहास में विक्रम का नाम अधिक ख्यात है, वे परदुःख भंजक थे। राजा भोज उदार तो थे ही परन्तु वे महाविद्वान भी थे। उनने अपने पास अनेकों विद्वानों को सन्मान के साथ स्थान दिया था। पूज्य श्री धर्मदासजी म० तथा पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० ये दोनों महातपस्वी मालव में अपनी अपनी संप्रदाय के आदि पुरुष के रूप में प्रख्यात हुए हैं। मालव में प्रख्यात राजा तथा तपस्वी सन्त हुए किन्तु महामालव के 'कृष्ण' रूप में मन्त्रीजी म० ने ही स्थान पाया। अर्थात् मंत्री श्री किशनलालजी म० मालव के 'कृष्ण' थे। उनके पवित्र जीवन में कृष्ण की तरह गुण ग्राहकता तथा गुणीजनों के सन्मान की विशेषता थी। ऐसे महान सन्तों का आदर्श सभी को प्राप्त हो यही हार्दिक प्रार्थना!

मंत्रीजी म. के स्वर्गवास के दो माह बाद ही पं. श्री नगीन मुनिजी म० का इन्दौर ही में स्वर्गवास हो गया। श्री नगीन मुनिजी, मंत्रीजी म. की सेवा करने वाले विनयी आज्ञाकारी मुनि थे। वे बाह्य व आभ्यंतरिक परिग्रह से प्रायः रहित थे। संयम भाव में सदानिरत रहने वाले आदर्श त्याग स्वभाव के त्यागी सन्त थे। अन्तिम समय के २-३ दिन पहले रात्रि में विशेष व्याधि हो जाने पर भी आपने डाक्टर को लाने की मनाही करदी। आपने स्पष्ट कह दिया कि-रात्रि में इंजक्शन लगवाना दोष है, मैं इंजक्शन नहीं लगवाऊंगा। उग्र व्याधि सहन की परन्तु रात को किसी भी प्रकार का उपचार नहीं करवाया। इस प्रकार के व्रत निष्ट सन्त का स्वर्गवास मंत्री म० के बाद तत्काल ही हो जाने से स्था. मुनि परिवार को बहुत ही क्षोभ हुआ। स्व. मंत्रीजी म. एवं स्व पं. श्री नगीन मुनिजी दोनों की पवित्र आत्मा को निर्वाण लाभ प्राप्त हो यही शासनेश से हार्दिक प्रार्थना है।
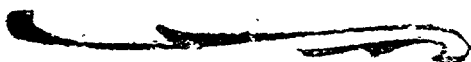
जीवन वाटिका का—

एक महकता पुष्प

(लेखिका—श्री ललितकुमारीजी जैन साध्वी (साहित्य रत्न)

उस दिन उपवन में देखा, सैकड़ों पुष्प हवा के मादक झोंकों से अठखेलियाँ कर रहे थे। विहँसता गुलाब, अपनी गुलाबी आभा और मधुर सौरभ से सहस्रों नेत्रों के आकर्षण का केन्द्र बन रहा था। इस गुलाब की मीठी महक में न जाने क्या जादू भरा है जो बरबस मन को बाँध लेता है। सुवास और सौन्दर्य का मेल सोने में सुगंधि सा प्रतीत होता है। इसीलिए तो इसे फूलों का राजा कहते हैं। पर सुन्दरता और सुवास में कमल, चमेली, बेला कोई भी तो इससे कम नहीं। फिर गुलाब को ही फूलों का राजा क्यों कहते हैं?

गुलाब काँटों की डाली पर खिलता है। तीखे काँटों की शय्या पर भी उसका कोमल शरीर मस्ती से झूम उठता है। काँटों की दुनिया में रहकर भी उसने मुस्कराना सीखा है, रोना नहीं। अपने अस्थिर जीवन की परवाह न करते हुए वह मुक्त हस्त से सौरभ-दान करता है। नुकीले काँटे उसके पथ का रोड़ा बनकर नहीं आते अपितु सहायक बन कर आते हैं। महापुरुषों का जीवन भी पुष्प इसी प्रकार का होता है। कठिनाइयाँ उनके साधना-पथ का परिमार्जन करने के लिए आती हैं। कहा भी है—

"जितने कष्ट कण्टकों में है जिनका जीवन सुमन खिला,
गौरव-गन्ध उसे उतना ही यत्र तत्र सर्वत्र मिला।"

काँटों से ही गुलाब की महत्ता बढ़ती है और कष्टों से व्यक्ति की। कठिनाइयाँ ही व्यक्ति के जीवन को आदरणीय बनाती है। और महापुरुषों का जीवन तो जनमन के हृदय में सन्मान की भावना जागृत कर देता है। ऐसे व्यक्ति जब कर्म क्षेत्र में आते हैं तो उनका अपना महत्वपूर्ण स्थान है।म नस्वियों की वृत्ति पर प्रकाश डालते हुए एक संस्कृत कवि ने कहा है—

"कुसुमस्तबकस्येव द्वे वृत्ती तु मनस्विनः,
सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेद्विशीर्येत वनेऽथवा।"

और सचमुच इन महान् आत्माओं का जीवन सुन्दरतम होता है। ऐसी ही एक पुण्यात्मा का अवतरण हमारे बीच हुआ था। कौन जानता था कि एक साधारण बालक विश्व के असाधारण व्यक्तियों की श्रेणी में जा पहुँचेगा। बचपन प्रायः खेल कूद की अवस्था है, पर हमारे चरित्र नायक ने बाल्यकाल में ही साधक जीवन को स्वीकार कर लिया था। अपने प्रबलतम पुण्योदय से उनके पूर्व संस्कारों ने उन्हें प्रेरणा दी और वे पूज्य प्रवर श्री नन्दलालजी म. सा. के श्री चरणों में पहुँच गये। होनहार बालक की धर्मरुचि देखकर पूज्य श्री के हृदय में भी हर्ष का संचार हुआ। एक दिन वह भी आया, जब आपने नन्हे किन्तु शक्तिशाली कदमों से साधना पथ की ओर बढ़ने का साहस किया। पूज्यश्री के समीप रतलाम में आपने भगवती दीक्षा ग्रहण की। आपका नाम श्री कृष्णमुनिजी रखा गया। बस, यहीं से आपके नये और वास्तविक जीवन का सूत्रपात हुआ। गुरुदेव की स्नेहल छत्रछाया में रहकर आपने आन्तरिक लगन से ज्ञानाभ्यास किया एवं कुछ ही समय में योग्य विद्वान बन गये। ज्ञानार्जन के साथ ही आपमें विनयादि सदगुणों का भी विकास होता चला गया।

सन्तों का विकास स्व-पर कल्याण के लिए ही होता है। आपकी रुचि आत्मोद्धार के साथ धर्म-प्रचार में भी विशेष थी। आपने मालवा, मारवाड़, मेवाड़, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, मद्रास, मैसूर आदि क्षेत्रों में पर्यटन करके समाज को नव जागृति का सन्देश दिया।

आपकी वाणी अतीव मधुर थी। वाणी में अदभुत शक्ति होती है। वाणी की मधुरता सामने वाले व्यक्ति का मन मोह लेती है, चाहे वह सज्जन हो या दुर्जन। आप जब बोलते थे तो मन का माधुर्य वाणी में साकार हो उठता था, मानों मुख से फूल बरस रहे हों। मिश्री सी मीठी वाणी विरोधियों को भी विनम्र बना देती थी। आचरण की सरलता और वाणी की मधुरता के कारण आप उपदेश के क्षेत्र में काफी सफल रहे। जहां भी आप पहुँचते वहीं भक्तों की भीड़ सी लगी रहती। जैनों के अतिरिक्त जैनेतर वर्ग में भी आपका गहरा प्रभाव था। जो भी एक बार सम्पर्क में आया वह उनका बनकर ही लौटा। उनके सहवास को पाकर विरोधी का हृदय भी श्रद्धा से भर जाता था। आपका उपदेश श्रवण करते समय तो ऐसा प्रतीत होता था मानों कर्णेन्द्रिय में अमृत की बूँदे प्रविष्ट हो रही हों। अमीर या गरीब का भेद भाव उनके पास नहीं था। इस छुआछूत की बीमारी से वे कोसों दूर थे। सबके लिये उनके एक से शब्द रहते थे, वह चाहे बालक हो या वृद्ध। कोई वन्दना करता तो वे बड़े प्रेम और मिठास से कहते 'दया पालो पुण्यवान ! भाग्यवान् !' कितना विशाल हृदय पाया था उन्होंने। ऐसे ही व्यक्तियों के लिए कहा गया है–

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।'

उनके मानस में विश्व के प्रति परिवार का सा स्नेह भरा था।

प्रकृति आपकी शान्त थी और साथ ही विनोद पूर्ण भी। उदास और खिन्न व्यक्ति को भी वे जरा सी बात से हँसा देते। उनकी वाणी

लाप की शैली ही कुछ इस प्रकार थी कि वह बात अन्तरतम तक पहुँच जाती। उनके पास बैठने वाले को ऐसा अनुभव होता था मानों वह विनोद की शुभ सरिता के किनारे बैठा हो। आप ज्ञान के रत्नाकर थे और साथ ही अनुभवी भी। अतः जब कोई उनके पास जाकर बैठता तो वे अपने अनुभव की बातें सुनाने लगते या ज्ञान-चर्चा छेड़ देते। बैठने वाले कुछ न कुछ लेकर ही उठते। सरल भाषा में सुन्दर ढंग से कही हुई बातें जन–जीवन में रस–सञ्चार करने वाली होती थीं।

आप एक सफल कवि भी थे। अपने आध्यात्मिक विचारों को पद्यात्मक रूप देने की उनमें अद्‌भुत क्षमता थी। कवित्त, सवैया, लावणी एवं चरित्रों के रूप में आपने समाज को बहुत कुछ दिया है। भाषा आपकी सरल और सुगम रहती थी, साथ ही विषय प्रतिपादन की शैली भी सुन्दर थी।

सांप्रदायिक मोह तो आपको छू भी नहीं गया था। श्रमण-संघ के प्रति आपके विचार बड़े उदार थे। पद प्राप्ति की कामना उनमें न थी। वे चाहते थे कि हमारा समाज ऐक्य के सूत्र में बंधकर परस्पर की विरोधी भावनाओं को कुचल दे और विकासोन्मुख बना रहे। उन्हें सामाजिक कार्यों में रुचि थी। सोजत सम्मेलन में आपको 'महाराष्ट्र मंत्री' के पद से विभूषित किया गया था।

आपका जीवन मध्याह्न के सूर्य की भांति देदीप्यमान होता चला गया। जिस स्वपर कल्याण की भावना को लेकर उन्होंने साधक-जीवन ग्रहण किया, उस भावना का अन्त तक निर्वाह करते रहे। जीवन के अन्तिम वर्षों में आपको व्याधि ने आ घेरा था। फिर भी जब तक उनमें शक्ति थी, उन्हेंने विहार न छोड़ा। एक दिन शक्ति ने जबाब दे दिया और इन्दौर में स्थविर रहना पड़ा।

आपने अपने जीवन में केवल दो ही शिष्य बनाये थे। प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म. सा. तथा मधुर व्याख्याता श्री विनयचन्द्रजी म. सा.। ये दोनों आज समाज के जगमगाते रत्न हैं। वे कहते थे 'मेरे तो दो शिष्य ही केशरी-सिंह से हैं। मुझे अब और संख्या नहीं बढ़ानी है।' उनके मुख पर सदैव गुलाब की सी एक मधुर मुस्कान खेलती थी, जिसने रोग-शय्या पर भी उनका साथ न छोड़ा। चाहे जितनी वेदना हो, कोई उनसे पूछता कि आपका स्वास्थ्य कैसा है तो फौरन जवाब मिलता—'अब ठीक है।' उनके अन्तर में अपार-शांति का सागर लहरें ले रहा था। आपका जीवन एक रत्नाकर की भाँति था। जो जितनी गहराई में पहुँचता उसे उतने ही शिक्षात्मक अनमोल मोती मिलते। उनका तन व्याधिग्रस्त था पर मन नीरोग था। स्वस्थ मन की आभा सदैव उनके मुखमण्डल पर छाई रहती थी। दुःसह वेदना को भी उन्होंने समभाव से सहन किया किन्तु मुंह से उफ तक न निकाली।

यद्यपि समीपस्थ शिष्य रात-दिन सेवा में जुटे थे किन्तु वे कभी किसी को कष्ट देना नहीं चाहते थे। श्री सौभाग्य मुनिजी म० सा० एवं स्व. नगीनचंद्रजी म० सा० ने तो उनके चरणों में रातें जगकर बिताई थी। बीमारी में चिकित्सकों ने उन्हें नमक देना भी बन्द कर दिया था। गरम या ठण्डा जैसा भी उनके सामने आता, बिना कुछ कहे उसे शान्ति से सेवन कर लेते। दवा पिलाते तो पी लेते। उन्हें स्वयं की कोई परवाह न थी। अपने जीवन में उन्होंने कभी हाय विलाप न किया। जीवन से उन्हें मोह भी तो नहीं था। कहते थे 'तुम लोग इस शरीर को कब तक सुरक्षित बनाये रखोगे। अब इसमें कोई दम भी तो नहीं है। कई बार लोगों से कहते-'यह शरीर तो जीर्ण पिंजरा है। पक्षी अब इसमें कितने दिन रहेगा। जाने कब उड़कर अन्यत्र चला जाय, इसका कोई भरोसा नहीं है।

३-१- सन ६१, माघ महीना था और द्वितीया मंगल का दिन। व्याधि ने पहले कुछ जोर पकड़ा पर धीरे धीरे स्थिति सुधरती सी प्रतीत होने लगी। क्योंकि मरने से पहले व्यक्ति को एक विचित्र शांति का अनुभव होता है। सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहे थे और इधर गुरुदेव की सूर्य सी तेजस्वी आत्मा महाप्रयाण की तैयारी में थी। अम्बर विहारी दिनेश के अस्ताचल पहुँचने से पूर्व ही विश्व की एक महान ज्योति बुझ गई। उस ज्योतिर्धर आत्मा को अपने बीच न पाकर शिष्य समुदाय के हृदय दुःखान्धकार से परिपूर्ण हो गये। मृत्यु भी कितनी शानदार थी ! चेहरे पर निराशा का तो नामो निशान भी नहीं था। ओठों पर वही हल्की सी मुस्कान खिल रही थी। मृत्यु से पहले उनकी भावना उच्चकोटि पर पहुँच चुकी थी। इसीको तो शास्त्रीय परिभाषा में पण्डित मरण कहते हैं।

हम लोगों को जब गुरुदेव के स्वर्गवास के समाचार मिले तो सहसा कानों पर विश्वास न हुआ। पर सत्य को कभी झुठलाया नहीं जा सकता। विधि का विधान ही कुछ ऐसा है कि जो जन्म लेता है उसका मरण भी निश्चित है, भले ही वह तीर्थंकर भी क्यों न हो। आज गुरुदेव हमारे बीच में नहीं है पर उनकी स्मृति को हम भूला नहीं सकते उनका जीवन आज भी चित्रपट की भांति स्मृति में साकार हो उठता है। वे मरकर भी अमर हैं। युग युग तक उनकी कीर्ति अक्षुण्ण बनी रहेगी। गुरुदेव का जीवन श्रद्धनीय एवं प्रशंसनीय तो है ही; साथ ही मननीय और अनुकरणीय भी है। उनका जीवन युगों तक हमारे लिए आलोक-स्तम्भ बना रहेगा।
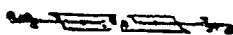
जीवन के महान् कलाकार

लेखक:—महास्थविर श्री ताराचन्दजी महाराज के सुशिष्य
श्री हीरामुनिजी महाराज "सिद्धांतप्रभाकर" "मरुस्थलीय"

मेरे मन की प्याली जब श्रद्धा से लबालब भर जाती है तब उसे कलम के सहयोग से प्रगट में ले आता हूं। बीच-बीच में परिहास न हो ऐसा आभास होता है। फिर भी अन्तर प्रेरणा हो तो ठहरी वह उपरी दबाव से कहां रुकने वाली? प्रश्न है-जीवन क्या है? उत्तर में साधक बोला—बीज।

संस्कारी उर्वरा भूमि पै यदि मनस्वी किसान बीज डाले तो वह आशातीत फलता है फूलता है। प्राणी मात्र की यही परम्परा रही है। यही चराचर संसार का अमिट सिद्धांत है। हमारे जीवनरूपी पौधे को भी सजाने संवारने में भी संतजन सफल कलाकार माने जाते हैं।

जैन संस्कृति के महान आचार्यों ने कला कलाके लिये नही मानकर कला जीवन के लिये मानी है। विश्व में जितनी भी कलाएं हैं, उन सब में संसार सागर को तैरने की कला प्रमुख है। स्वयं आगमकार के शब्दों में-*जं तरंति महेसिणो।*

संत महर्षिजन ही इस नश्वर देह नौका से संसार पार होते हैं। स्वर्गीय मंत्री श्री किशनलालजी म. ने जब भाव पूर्वक आलोचना की उसकी सूचना समाचार-पत्रों से पढ़ने में आई तो, हमारा दिल व दिमाग अतीव प्रभावित हो गया। यह आलोचना

क्षमापना जीवन की सबसे वड़ी कला है। आलोचना द्वारा परिमार्जन कर जीवन का पुनरुद्धार किया जाता हैं। दिवंगत महात्मा ने इसमें भारी सफलता प्राप्त की। यह जीवन की वहुत भारी विजय हैं।

हमारे स्वर्गीय पूज्यगुरुदेव महास्थविर मरुधर मंत्री श्री ताराचन्दजी म. ठाणा ४ से विक्रम सं. २००३ में इन्दौर पधारे तब वहां परम श्रद्धेय स्थविर पद विभूषित मालव प्रांतीय वयोवृद्ध श्री ताराचंदजी म०, श्री किसनलालजी म० प्रसिद्धवक्ता श्री सौभाग्यमलजी म० आदि संतगण वहाँ विराजमान थे नके सन्दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज भी मेरे दिल की दीवारों पर वह दृश्य चित्रपट की तरह अंकित है। आपश्री का वह गेहूँ वर्ण मझलाकद भव्य ललाट, लंबी भुजा युक्त कंचनवर्णी काया, वड़ी ही लुभावनी थी। यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति की उक्ति के अनुसार जब आपका शरीर सुन्दर था वहां आपके जीवन में सरलता भद्रता आदि सद्‌गुण भी पर्याप्त मात्रा में थे। परदुःख में आप फूल से कोमल और स्वदुःख में वज्रादपि कठोर थे। शत्रु पर प्रेम वर्षा व अपराधी पर क्षमा प्रगट करना आपका सहज स्वभाव था। इसीलिये संत पुरु ों को किसी कवि ने धरती का वास्तविक रत्न कहा हैं।

स्वर्गीय श्री किशनलालजी म. श्रमणसंघ के मंत्री थे उनकी प्रतिभा व पुण्यवानी उल्लेखनीय है। जिसकी वदोलत ही प्रसिद्धवक्ता श्री सौभाग्यमलजी म. जैसे संत रत्न प्राप्त हुए थे। उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार कहा जा सकता हैं, विनयी शिष्य पुण्यवानी का स्पष्ट प्रतीत है। विनयी शिष्य ही सदगुरुओं के नाम को रोशन करते हैं। जिन गुणों को सद्‌गुरु देखना चाहता हैं वे गुण सौभाग्यमलजी म. सा. में पूर्ण रूप से दृष्टि गोचर होते हैं उन्होंने जीवन की सांध्य वेला में मंत्री मुनिश्री की जो सेवा भक्ति की वह सभी के लिये एक प्रकाश स्तंभ के रुप में है।

कहा जाता है कि जाने वाला जाता है; किन्तु जाना उसीका सार्थक है जो फूल की तरह अपनी महक पीछे छोड़ जाते हैं। जिनकी सौरभ को लेने के लिये बाद में भी भक्त भ्रमर छटपटाते रहते हैं। उनका भौतिक देह चला गया किन्तु यशश्शरीरेण वे आज भी विद्यमान हैं। उनके सद्गुणों की सौरभ को ग्रहणकर हम अपने जीवन को महान् बनाए यही महापुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

अन्त में मैं उस तप.पूत महात्मा के चरणारविंदों में अपनी भावांजलि समर्पित करता हुवा यह आशा करता हूँ कि हे महामहिम आपके सुयोग्य शिष्य समुदाय दिन प्रतिदिन तप और संयम में ज्ञान और दर्शन में आगे बढ़े और श्रमण सघ सदा फलता फूलता रहे हम भी आपके जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर संयम के महामार्ग पर प्रतिपल प्रतिक्षण बढ़ते रहे।
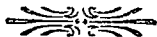
स्वर्गीय महाराष्ट्र-मंत्री मुनिश्री किशनलालजी म. सा. के प्रति

श्रद्धा के दो शब्द

प्रस्तुतकर्त्ता—स्व. उपाध्याय पंरत्न श्री प्यारचंदजी महाराज के सुशिष्य—
व्याख्यानी मुनि श्री गणेशीलालजी महा० सा० सिद्धान्त-प्रभाकर'

"जन्म धारण करना और मृत्यु वरण करना" संसारी जीवों की एक अनादिकालीन प्रवृत्ति है"; इसमें अपवाद नहीं हो सकता है। परन्तु मृत्यु-मृत्यु में भी अन्तर है। एक पापों की पोट लेकर मरता है; जबकि दूसरा अनन्त पुण्यों का संग्रह करके स्वर्गवासी होता है; एक स्वार्थी और भोगी बनकर काल-कवलित होता हैं; जबकि दूसरा निर्मल-चारित्र-शील बनकर एवं पर-उपकारी होकर देवत्व धारण करता है। प्रथम कोटि का प्राणी अधम कहलाता है; जबकि द्वितीय कोटि का महापुरुष "महात्मा" रूप से विख्यात होता है।

महाराष्ट्र-मन्त्री मुनि श्री १००८ श्री किशनलालजी महा. सा. की आत्मा पवित्र, उच्च-चारित्र-संपन्न एवं अलौकिक गुणों से परिपूर्ण थी। आपका मधुर-भाषण, शीतल-व्यवहार, श्रमणोचित सहिष्णुता और निष्काम-शांति दर्शनार्थियों का ध्यान आकर्षित कर लेती थी।

आपने सं. १९५८ में पूज्य श्री नन्दलालजी म. सा. के पास रतलाम में दीक्षा ग्रहण की थी। मुझे आपश्री के सर्व-प्रथम दर्शन सं. २००० के साल में रतलाम में हुए थे; जबकि मैं स्वर्गीय बड़े गुरुदेव जैन-दिवाकर, प्रसिद्ध-वक्ता पं. रत्न मुनिश्री १००८ श्री चौथमलजी महा. सा. की सेवा में उपस्थित था।

दूसरी बार दर्शन सं. २००६में नागदा में हुए थे, जबकि मै अपने स्व. परम पूज्य श्रद्धेय गुरुदेव, उपाध्याय पं० रत्न श्री १००८ श्री प्यारचंदजी

म० सा० की सेवा में रहते हुए ज्ञान-ध्यान-चरित्र की आराधना करने में संलग्न था। उस समय में आप श्री ने गुरुदेव के साथ "श्रमण-संघ के एकीकरण" के संबन्ध में परम उपयोगी विचार विमर्श किया था। आपने फरमाया था कि—"संघ का एक ही सूत्र में संगठित होना परम आवश्यक है, आप श्री—(याने उपाध्याय श्री) का यह शुभ प्रयत्न सफल हो, यही मेरी हार्दिक इच्छा है।

इस प्रकार स्वर्गीय मंत्री मुनि श्री जी के दर्शन करने का और व्याख्यान सुनने का मुझे सत्संयोग अनेक बार प्राप्त हुआ है।

आप एक सफल कवि थे, आप द्वारा रचित कवित्त आदि अत्यधिक रसीले और भाव पूर्ण हैं आपकी भाषा-शैली मधुर तथा भाव-पूर्ण होती थी। आर जब कभी किसी से बोलते थे तो "पुण्यवान-भाग्यवान्" जैसे पुण्योपम शब्दों का प्रवाह प्रवाहित होता था। ऐसे शब्दों को सुन करके श्रोतागण गद्गद् हो जाया करते थे।

आपने मध्य-प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, बम्बई, गुजरात, हैदराबाद-प्रदेश, कर्नाटक, एवं मद्रास क्षेत्र आदि भारतीय-प्रान्तों में विहार करके अपनी चरण-रज से इन्हें पावन बनाया था। अपनी शारीरिक अस्वस्थता वश कुछ वर्षों से आप इंदौर शहर में ही विराजते थे, अन्त में तारीख ३-१-६१ को इस औदारिक-शरीर का परित्याग करके इन्दौर में ही आप स्वर्गवासी हुए। आपके सच्चारित्र से हमें विनय आदि गुणों की सत्शिक्षा प्राप्त होती है।

अन्त समय में आपकी सेवा में आपके सुशिष्य प्रसिद्ध वक्ता पं० रत्न श्री सौभाग्यमलजी महाराज सा० सुप्रसिद्ध व्याख्यानी श्री विनय मुनिजी महाराज सा० एवं कविवर्य मुनि श्री सूर्य मुनिजी महाराज सा० आदि शिष्य मण्डली समुपस्थित थी। उक्त मुनिराजों ने अंत समय में अपने गुरुदेव की सेवा-शुश्रूषा का लाभ उठाकर अपने आपको "धन्य-धन्य" बना लिया है। तथास्तु।

मैं श्रद्धा के सुमन चढाता

लेखक-श्री गणेश मुनिजी म. साहित्य रत्न, शास्त्री

कहां चला वह पथिक आज
धर्म का सुन्दर संबल लेकर
कृष्ण मुनि तुम छोड चले
जीवन की मधुरिमा देकर

जो आता वह निश्चित जाता
कह गये शास्ता-ज्ञानीजन
हम भी हैं उसी पथ के पथिक
पर पाना है कुछ जीवन दान

तुम थे अद्‌भुत ज्योतिधर
पाई मैंने कुछ जीवन रेखा
विषमता मे भी समता रखता
यह प्रत्यक्ष आंखों ने देखा

बूढा तन था, जर्जरित फिर भी
संयम में कडा कदम बढाता
तेरे जीवन की इस वेदी पर
में श्रद्धा के सुमन चढाता

स्व. मंत्री मुनि के प्रति श्रद्धांजलियाँ

कृष्ण मुनि इसलिये स्वर्ग सिधायो है

रचयिता- मंत्री पं. प्रवर पुष्कर मुनिजी म०

अदभुत वयोवृद्ध, संयम 'रू श्रुत वृद्ध
विनय विवेकी विज्ञ, मंत्री पद पायो है।
शासन को सिनगार, सौभाग्य हिया को हार
दिल को बड़ो उदार जनमन भायो है।

दूर दूर देशों में धरम प्रचार कियो
परिषह सहे खूब, नहीं घबरायो है।
प्रखर प्रतिभा युत, चाहना थी तेरी अब
छोड़ हु क्यों कृष्ण मुनि स्वर्ग सिधायो है ॥

स्वर्ग सिधायो है

संसद के सदस्यों का चुनाव हुआ स्वर्ग में,
प्रखर प्रतिभावान एक भी न आयो है।
सौधर्म सभा में द्वन्द्व, परस्पर हुआ अति
शान्त करन उसे, कोई न दिखायो है।

तब भेजा इन्द्रपुरी, इन्द्र ने तो एक सुर
यही व्याधि रूप कृष्ण तन, प्रकटायो है।
करने को समाधान महाविदी द्वितीया को
कृष्ण मुनि इसीलिए, स्वर्ग सिधायो है ॥

॥ स्थविरपदभूषित महामुनि कृष्णलालाष्टकम् ॥

(रचयिता-बहुश्रुत पं. मुनि श्री घासीलालजी महाराज)

(१)

यदीयो विहारः सदा सौख्यकारी,
यदीयोपदेशस्तु कल्याणधारी
यदीया च दीक्षा जगत्तारिणी ते,
भजध्वं भजध्वं मुनि कृष्णलालम् ॥ १ ॥

(२)

यथा शारदीयः शशी खे विभाति,
तथा धर्मदासस्य गच्छे सुभाति।
सदा भद्रभावैः सुशोभान्वितस्तं,
भजध्वं भजध्वं मुनि कृष्णलालम् ॥ २ ॥

(३)

यदीया सुकीर्तिर्दिशं द्योतयन्ती,
यदीया च बोधिर्जगद्बोधयन्ती।
यदीयः स्वभावः सदा कोमलस्तं,
भजध्वं भजध्वं मुनि कृष्णलालम् ॥ ३ ॥

(४)

सदा शान्तिरूपे गते श्री मुनीशे,
विखिन्नाः सदा भव्यजीवा विना त्वाम्।
गुरो ब्रूहि त्वत्तुल्यता नास्ति यस्तं,
भजध्वं भजध्वं मुनि कृष्णलालम् ॥ ४ ॥

(५)

गुरौ देवतुल्ये गते देवलोके
गुणा शान्ति क्षान्त्यादयः क्व प्रयान्तु ।

वद त्वं गुरो त्वां च पृच्छामि यं तं,
भजध्वं भजध्वं मुनि कृष्णलालम् ॥५॥

(६)

अनेकैरसौख्यैर्युते पञ्चमारे,
इदानीं जनानां स्वदाधार आसीत्।
गतो नान्यमाधार मानीय यस्तं,
भजध्वं भजध्वं मुनि कृष्णलालम् ॥ ६ ॥

(७)

वयं प्रार्थयामो जिनेशं स दद्या-
दनन्तां विशुद्धां च शान्ति भवद्भ्यः।
यशो राशिभिः स्वर्गति याति यस्तं,
भजध्वं भजध्वं मुनि कृष्णलालम् ॥ ७ ॥

(८)

भवद् दृष्टिपातः शुभः सघमध्ये,
पतेत्सौम्यकारी सुधांशोः सुधेव।
वदान्यं च मत्वा सदा याचयेयं,
भजध्वं भजध्वं मुनि कृष्णलालम् ॥ ८ ॥

(९)

अष्टकं घासिलालेन, निर्मितं सारगर्भितम्
भावेन यः पठेद् भव्यः, स याति परमां गतिम् ॥ ९ ॥

सुखद वे मुनि कृष्ण कहां गये ?

[रच०—श्री उमेश मुनिजी म० 'अणु']

(द्रुतविलंबित छंद)

नयनमें बसता मधु धैर्य का, वदन पर रमता नित स्थैर्य था,
वचन थे जिनके मृदुता भरे, वरद वे मुनि कृष्ण कहां गए ? १
मधुर मूरत वो मनमोहनी, हृदय में जिनकी स्मृति सोहनी,
विरह आकुल हो जन पूछते–सुखद वे गुरु कृष्ण कहां गए ? २
मृदुगिरा जिनकी मधु घोलती, हरस से सुख में मन वोरती
छवि सदा जिनकी स्मित धारिणी, सुखद वे गुरू कृष्ण कहां गए ? ३
पकड़ थी तन में अति रोग की, पर रहे लड़ते समभाव से
कर सकी नहीं अन्तिम भी घड़ी, चलित अंतर की शुभ शांति को ४
शयित यों तृण संस्तर पे लखी, स्मृत हुई छवि थी जनु भीष्म की
अयन–उत्तर–सूर्य विलोकता, तन टिका जिनका शर सेज पे ५
गत हुई जब पूनम पोष की, वरत दूज रही जब माघ की
अयन उत्तर में रवि राजता, तन तजा तब था मुनि कृष्ण ने ६
रह सका नहीं भास्कर भी अरे ! तिमिर घूंघट में मुख को छिपा
सिसकते जन को तज के हटा, खिसक पश्चिम में वह हा ! गिरा ७

नयन साश्रु सुशिष्य समूह ने, स्थित किया तन ध्यान समाधि में
विलपते नव मानव पूछते, सुखद वे गुरु कृष्ण कहां गए ? ८
नहि रुचा तन क्या यह जीर्ण था, चल दिये धरने नव देह को
नहि कभी नहि जो जिनमें रमा, नव पुरातन क्या उसके लिए ९

(मालिनी छंद)

तज तज विरथा ही शोक की तू कथा को,
हतबल करने को, है तुम्हारी व्यथा को
रमण कर रहे जो याद मेरे ? मनों में
रम रम उन प्यारे दिव्य धामी गुणों में १०

दोहा—संवत ऋषिशशि नभ युगल, कृष्ण गए सुरधाम
मुनि ग्यारह 'अणु' वंदना, जय जय कलित ललाम ११

[रच०—श्री मरुधर केसरीजी पं. मिश्रीमलजी म०]

(छन्द-कुण्डलिया)

संयमश्रुत वय स्थविर थे, महामान्य मतिमंत,
वैरागी त्यागी निपुण, सत साधक भलसंत।
सत साधक भलसंत, कंत कविता कामिन के,
उग्र विहारी आप पाप संताप शमन के।
दक्ष रक्ष षट्काया नित परमोदार्द पयय,
विमल वुद्धि सिद्धि सदन सुंदर तास प्रणम्य ॥१।

गीतारथ गंभीर गुनी सहन परीसह सूर,
वचन सुकोमल निकसते, त्यक्त किये वच कूर।
त्यक्त किये वच कूर, नूर मुसकान भरा था,
प्रबल करी परचार भव्य अज्ञान हरा था।
मानव जीवन ज्योतिधर कर लीनो सारथ्य,
जिनवाणी के आप थे, नामी गीतारथ्य ॥२॥

धर्मदास अनुयायी नभ, चावो चन्द्र चकोर,
तज भौतिक तन एकदम, गये सुरालय दौर।
गये सुरालय दौर, भक्त दिल चोट लगी है,
सौभाग्यचन्द्र के जिगर विरह की आग जगी है।
किन्तु काल कराल है धृष्ट महा वेशर्म,
बिलखानन कर भक्त गण वुझगो दीपक धर्म ।३॥

कवित्त—तेरे जैसो दिव्य गुणी हाय हेरे जाय कित,
गेरे घाव करी डारे मोम सो पिघलगो।
मिलवे की आस प्यास खास उर बीच रही,
बीच में ही कलि काल आयके निगलगो।

दूनी कहे भूल जाओ किन्तु ना भुलायो जात,
आपको अथाह प्रेम भूत सो बिलगगो।
ऐसो अंतराय आय हाय क्यो दिखाई हमें,
आओ मिलो शीघ्र याते शोक सो सिलगगो ॥४॥

सोरठा—श्रमण संघ मणीय कृष्ण मुनि करहो करी
तात्त्विकता तंत्रीय कहदो सूंपी है किने ॥५॥
संघ स्थिति प्रतिकूल, अधुना दाखें सब दूनी।
क्यों कुम्हलायो फूल, संघ सरोवर बीच में ॥६॥
व्यथित हृदय ने एह श्रद्धांजलि अर्पित करूं।
स्वीकारो गुनगेह "मिश्रीमल" मुनिवर मणें ॥७॥

[कवि कोविद मुनि रूपचन्द्रजी म. सा. रजत द्वारा]

(मनहर छन्द)

साम्य को कलाप कुंज पुंज 'रूप' आनन को
ध्यानन को धीर पुंज तरी [illegible] तारगो।
सरल सरोज सर पर मन संजम को
समद गजेन्द्र गज अद मग टारगो ।
"मिश्री" मिलन टुक झुकन [illegible] पद
[illegible] पीर निज दृग को उतारगो
दिव्य दिर देवन [illegible]
"इन्दौर" ते इन्द्रलोक [illegible] सिधारगो ॥ १ ॥

छप्पय

मं—[illegible] मुनिवर
श्री— [illegible]

कृष—क तनु अति पीर सही तुम धन्य धीर धर
न— हि आन्यो उर शोक तू रोग की अणियों पर
सु— सीवत आई अडिग रहे सत्य वही मुनि पेख लो
नि— रमल जल गंगा सरिस प्रमथ वरण जन देखलो ॥२॥

सवैया मदिरा

शांत छटा मुख सोभ रही थी,
गही कित नैन निहारत हैं।
मालव आज उदास भयो,
मुनि मण्डल चित्त चितारत है।
संघ सहायक लायक लोग,
मिली जप आप उचारत है।
कंसक वंशक औगुण चारत,
'रूप' 'हरी' गुण भारत हैं ॥ ३ ॥

दोहा—गोचरि हित गोगांव में परयो कटुक वच कान,
'कृष्ण' मुनि कल्याणयुत परभव किंयो प्रयान ॥ ४ ॥

क ल त्र.राल कुटिल कल छलयुत जलगति कीन
नर मित रत्न अमोल को सटके लियो तू छीन ॥ ५ ॥

सोरठा—आगम ज्ञान अथाग, थाग लेवत थाकी गयो
कृष्ण मुनि वड़ भाग दुनिया मुख यों भाखती ॥ ६ ॥

आतम सुख लह लीन रहे 'कृष्ण मुनि' राज की
यह शुभ कामना कीन, श्रद्धा सुमन सप्तक रच्यो ॥ ७ ॥

स्व० मंत्री मुनि श्री किशनलालजी महाराज सा० की
देहोत्सर्ग यात्रा का एक दृश्य
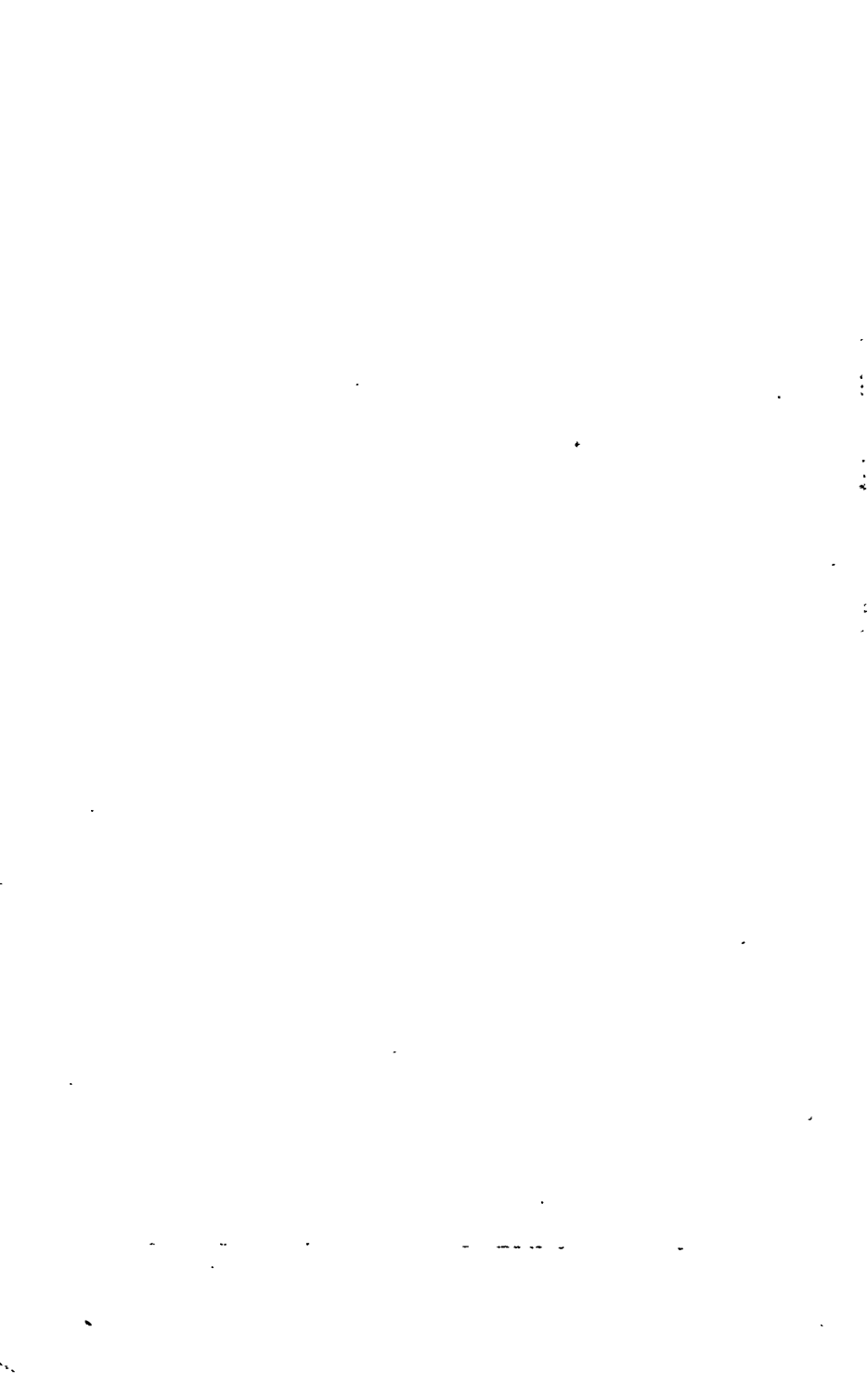
गुरुजी मारा..........

रचयिता:– हीरालाल त्रंबकलाल दोशी, बोटाद

(राग–टोपी वाला ना टोला उतर्या)

गुणियल गुरु किसनलालजी, वर्धमान श्रमण संघ नी मझार रे
गुरुजी मारा आपनो वियोग अमने सालशे १
पिता केसरीमलजी माता नन्दीबाई
श्रेष्ठ कुल माहि अवतार रे····गुरुजी मारा····२
मोरगंठ गामे जनम आपनो
बालपणा माँ मात पिता नो वियोग रे····गुरुजी मारा····३
सोल वर्षनी उमर आपनी
कड़वा लाग्या संसार ना दुःख रे····गुरुजी मारा····४
पुज्य श्री नन्दलालजी मुनि पास माँ
संयम लीधो गुरुजी सुखकार रे····गुरुजी मारा····५
पंडित आप गुरु पास थी
वध्याँ छे शासन माँ घणां मान रे····गुरुजी मारा····६
रतलाम शहर माँ संयम आदर्यो
श्रावण वद बारस शुभ दिन रे····गुरुजी मारा····७
गुरुभाई सूर्य मुनि आपने
विनय मुनि सौभाग्यमुनि शिष्यनी जोड़ रे····गुरुजी मारा····८
चिरकाल भूमितल आप विचर्या
आपे कर्यो संघ पर उपकार रे····गुरुजी मारा····९
साठ वर्ष चारित्र पालीयु

दीपाव्युं छे निज गरुजी नुं नाम रे....गुरुजी मारा....१०
आप तणा गुण घड़ी न विसरे
आपे कर्यो सफल अवतार रे....गुरुजी मारा....११
छियोत्तर वर्ष पूरी उमरे
कीधो छे देहपुरी नो नास रे....गुरुजी मारा....१२
इन्दोर शहरे आप सिधाविया
गुणमणि ए स्वर्ग तणी मोझार रे....गुरुजी मारा....१३
पडी खोट खरेखर आपनी
चतुर्विध संघ नी मोझार रे....गुरुजी मारा....१४
कुटिल कृति छे सदा काल नी
करे अणचार्यो ए संहार रे....गुरुजी मारा....१५
एम जाणी धर्म जिनराज नो
करीए तनमन थी उल्लास रे....गुरुजी मारा....१६
संवत बे हजार सत्तर साल मां
गुरुजी पहोंच्या स्वर्गपुरी ने द्वार रे....गुरुजी मारा....१७
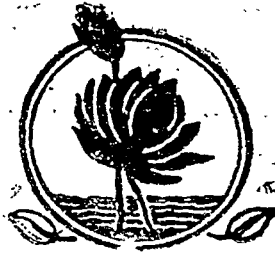
मंत्री मुनि श्री के निधन पर आये हुए संवेदना तथा श्रद्धांजलि-पत्र

आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज सा०

मंत्री श्री किशनलालजी म. के स्वर्गवास के समाचार पाकर यहां के श्री संघ को हार्दिक खेद हुआ। आचार्य श्री जी म तथा यहां विराजित मुनि मण्डल को भी विशेष ख्याल हुआ। स्वर्गीय आत्मा को शान्ति प्राप्त हो, एवं शेष मुनि मण्डल को धैर्य की प्राप्ति हो, यही हमारी हार्दिक कामना है।

मंत्री मुनि श्री के स्वर्गवास से जो क्षति पहुंची है, उसकी पूर्ति अशक्य है। ता. ९-१-६१

प्यारेलाल जैन सेक्रेटरी, लुधियाना

उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म० पं. समर्थमलजी म. एवं मानमुनिजी महाराज

वयोवृद्ध पं. मंत्री मुनि श्री किशनलालजी म० के आकस्मिक स्वर्गवास के समाचार पाकर श्रद्धेय उपाचार्य श्रीजी म० ने चार लोगस्स का ध्यान किया और मुनिवरों को आज्ञा फरमाई कि व्याख्यान बन्द कर दिया जाय। तदनुसार व्याख्यान बन्द कर दिया गया और चतुर्विध संघ ने ध्यान किया।

मंत्री मुनीश्री के जीवन पर प्रथम पं. मुनि श्री मानालालजी म. ने बाद में तपस्वी श्री मानमलजी म ने एवं तत्पश्चात पं. रत्न समर्थमलजी म० ने कुछ फरमाया।

उक्त मुनिवरों ने तथा पारस मुनि ने जो उद्गार व्यक्त किए उनके भाव निम्न प्रकार हैं:-

स्थविर मंत्री मुनि श्री किसनलालजी महाराज श्री के स्वर्गवास के समाचार पाकर हृदय को आघात पहुँचा। मुनि श्री सरल, शान्त, हँसमुख, संयम रुचि, मधुर भाषी सरल व्याख्यानी जिन वाणी के रसिक भद्र परिणामी सबको निभा लेने व सब से निभ जाने की वृत्ति वाले, उदार आदि गुणों से अलंकृत थे। मुनिश्री ने दीर्घकाल तक संयम का पालन किया। ऐसे मुनिराज का वियोग चतुर्विध संघ के लिए खटकने जैसा है, किन्तु आयुष्य की गतिविधि को जानकर पिछले सभी को धैर्य धारण करना एवं उनके गुणों का अनुकरण करना ही श्रेयस्कर है।

६-१-१९६१ तख्तसिंह पानगड़िया, उदयपुर

उपाध्याय अमरचन्द्रजी म. सा.

काशी पहुँचने पर पता लगा कि श्रद्धेय मंत्री श्री किसनलालजी म. अब हमारे मध्य में नहीं रहे हैं। विकराल काल की कहानी एक ऐसी कहानी है, जिस पर विश्वास न करके भी विश्वास करने को विवश होना ही पड़ता है।

आपका जीवन कितना सरल, सादा और सीधा था। मधुर जीवन की वह मधुरिमा अब एक इतिहास की प्रकाश-रेखा बन कर रह गई है। यह जानकर, सुनकर और अनुभव करके मानस वेदना से परेशान है।

संयम, संस्कृति एवं सरलता की उस महान ज्योति में से यदि हम और आप एक भी सद्गुण की प्रकाश रेखा प्राप्त कर सके तो फिर हम और आप उस दिव्य विभूति को भूलकर भी भूल न सकेंगे।

४-२-६१ सेक्रेटरी जैनाश्रम, बनारस

उपाध्याय पं. हस्तिमलजी म. सा.

पं रत्न श्री हस्तिमलजी म. सा. ने प्रार्थना के बाद दो शब्द कहते हुए फरमाया कि जैतारन के आस पास जैन प्रकाश व तरुण जैन द्वारा मालूम हुआ कि वयोवृद्ध प. मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म. सा. का स्वर्गवास ता. ३-१-६१ को हो गया है, जानकर मन को बड़ा खेद हुआ। मंत्री मुनि श्री पूज्य धर्मदासजी म. की सम्प्रदाय के वयोवृद्ध एवं शास्त्रज्ञ अनुभवी सन्त थे। आपने दूर दूर तक विहार कर जिन शासन की प्रभावना की। आपके स्वर्गवास से स्था. जैन साधु समाज में बड़ी क्षति पहुँची है। आप बाल्यकाल से ही दीक्षित होकर संयम धर्म पालन करते हुए स्थविर पद पा चुके थे। मरुभूमि में विचरने वाले साधु साध्वी जो पू. भूधरजी म. के परिवार में है अपने मूल पुरुष पू. धर्मदासजी म. की शाखा में होने से स्वर्गीय मंत्री मुनि श्री के अवसान को विशेष रूप से खटकने लायक समझ रहे हैं। पं. रत्न मुनि सौभाग्य मुनिजी म. आदि मुनिवरों के साथ समवेदना प्रकट करते हुए म. श्री ने श्रावक संघ को निर्वाण कायोत्सर्ग करने को फरमाया। तदनसार चतुर्विध सघ ने लोगस्स का ध्यान कर स्वर्गीय मुनि श्री के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

१९-१-६१ हीरालाल कांकरिया, पीपाड़

पं. रत्न श्री घासीलालजी म. की ओर से

यहां पं. रत्न श्री घासीलालजी म. आदि ठा. विराजित हैं उन्हें पंडित रत्न मुनि श्री किशनलालजी म. के स्वर्गवास से बहुत खेद हुआ वे समाज के एक महान् रत्न थे उनका वियोग समाज के लिये बहुत दुःखद हैं। नये रत्न तैयार होते नहीं हैं और पुराने अपने हाथ से चले जाते है। कल उनकी स्मृति में उपवास आदि किये गये और शोक प्रस्ताव पास किया गया। यह संदेश पंडित वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म. की सेवा में पहुंचा दें।

८-१-६१ हिम्मतलाल सरसपुर

जैन भूषण श्री प्रेमचन्दजी म.

जैन भूषण श्री प्रेमचन्दजी म. को मंत्री मुनि किसनलालजी म. के स्वर्गवास का दुःखद समाचार पाकर दिल को बहुत आघात पहुँचा।

मंत्री मुनि का स्वर्गवास जैन समाज में क्षति-रूप है। आप बड़े मिलनसार तथा प्रसन्न चित्त आत्मा थे। जो भी एक बार आपके सम्पर्क में आ जाता वह आपका ही बन जाता। देश-देशांतर में कष्टों को सहते हुए आप जिनवाणी के प्रचारार्थ विचरण करते रहे इसे जैन समाज नहीं भूल सकता। आपकी लम्बी साधु जीवनयात्रा बड़े सुन्दर ढंग से पूर्ण हुई यह गौरव की बात है। समीपस्थ मुनिवरों पर से आपका हाथ उठ-जाना उनके लिए तो दुःखद है ही पर समस्त जैन समाज के लिए यह घटना कम दुःखद नहीं है। काल कराल ऐसा निर्दयी है कि यह सबको एक दृष्टि से देखता है। तीर्थंकर, चक्रवर्ती, स्वर्गाधिपति देवेश भी इससे अछूते न रह सके। ज्ञान दर्शन एवं चारित्र से अपनी आत्मा को समुज्जवल बनाने वाली आत्माओं ने ही इस पर विजय प्राप्त की है।

ऐसी महान आत्माओं का अनुसरण करके हमें जैन शासन की उन्नति करनी चाहिए।

१३-१-१९६१ नारायणदास रतनचन्द, समाना

मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म०

इन्दौर संघ का तार पाकर ज्ञात हुआ कि वयोवृद्ध स्वामीजी मंत्री मुनि १००८ श्री कृष्णलालजी म० इस भौतिक शरीर को त्यागकर स्वर्ग को सिधार गए। यह वृत्तान्त श्रवणगोचर होते ही हृदय को बड़ी ठेस पहुंची। कारण स्वामीजी समाज में एक रत्न थे, निकट भविष्य में उसकी पूर्ति होनी कठिन है। किन्तु कुटिल काल की कुचाल से भौतिक-देहधारी कोई बच नहीं सकता। अतः विवश हो असह्य भी सहन करना पड़ता है।

७-१-६१ हीराचन्द भीकमचन्द, जोधपुर

श्री ज्ञानमुनिजी म०

श्रद्धेय श्री स्वामी किसनलालजी म० के आकस्मिक स्वर्गवास से महान खेद हुआ। समाज का दुर्भाग्य है कि समाज की दिव्य विभूतियाँ समाज से दूर होती जा रही हैं।

१६

सेक्रेटरी, लुधियाना

पं० रत्न मंत्री श्री पन्नालालजी म०

इन्दौर संघ का तार पढ़ते ही संघ में शोक की लहर फैल गई। तार क्या था, एक वज्राघात था। स्था. जैन समाज के रत्न एवं हमारे आराध्य मंत्री श्री किसनलालजी म० आज हमारे चरम चक्षुओं से तिरोहित हो गये हैं। यह समाचार मिलते ही मुनिवृन्द ने निर्वाण कायोत्सर्ग करके स्वर्गस्थ आत्मा के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पण की तथा स्वर्गीय मंत्रीजी म० के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका जीवन दिव्य सौम्य और अनेक गुणों का पुंज था।

वे संत समुदाय के लिये एक आदर्श थे। आपके दीर्घ अनुभव की श्रमण संघ को पूर्ण आवश्यकता थी। ऐसे समय में आपकी क्षति केवल आपके शिष्य समुदाय के लिये ही नहीं वरन् संपूर्ण श्रमण संघ के लिये खटकने वाली है। निकट भविष्य में इसकी पूर्ति असम्भव है। दिवंगत आत्मा को अक्षय शान्ति प्राप्त हो, यही अभ्यर्थना है।

६-१-६१ मिश्रीमल कोठारी, विजयनगर

मंत्री श्री हजारीमलजी म०

मंत्रीवर श्री १००८ किसनलालजी म० के निधन समाचार से मंत्री मुनि श्री को बहुत खेद हुआ। स्वर्गीय मंत्रीजी म० सा० एक कुशल शास्त्रवेत्ता, वक्ता, मिष्टभाषी व मिलनसार महापुरुष थे। उनके

स्वर्गवास से समाज को महान हानि हुई है। यहां से मंत्री मुनि श्री ने समवेदना प्रकट की है। तथा संघ ने श्रद्धांजलि दी है। दिवंगत आत्मा को शांति मिले, यही शुभ कामना है।

२२-१-६१

लूणकरण लोढा, फुचेरा

पं. कस्तूरचन्दजी म०

महाराष्ट्र मंत्री मुनि श्री १००८ श्री किशनलालजी म० सा० के स्वर्गवास का तार पाकर समस्त मुनि मण्डल एवं महासतीजी म० को बहुत दुःख पैदा हुआ। काल कराल के सामने किसी का जोर नहीं चलता म० सा० बहुत विद्वान और व्यवहार कुशल, मिलनसार तथा गुण सम्पन्न थे। संघ में आपकी पूर्ण ख्याति थी! आपके स्वर्गवास से समाज को जो क्षति पहुंची, उसकी पूर्ति मुश्किल है।

७-१-६१

मदनलाल जैन कुकड़ेश्वर

श्री प्रतापमलजी म०

मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म० के निधन का तार पाकर यहां शोक की लहर फैल गई। मंत्रीजी म० सा० का जीवन बहुत मधुर, सीदा और सरस था। आपने दूर-दूर विचर कर जो धर्म प्रचार किया है, उसे भुलाया नहीं जा सकता। आप श्रमण संघ के एक माने हुए रत्न थे। आपका निधन जैन समाज के लिए असह्य है। शासनदेव से प्रार्थना है कि स्वर्गीय आत्मा को शान्ति एवं चिन्तित को आत्मा धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें।

४-१-६१

जैन श्वे. स्था. संघ, मनासा

उपा. श्री आनन्द ऋषिजी म. सा. तथा पं. मुनिश्री श्रीमल्लजी म०

सरल स्वभावी स्थविरपदालंकृत, श्रमण संघीय मंत्री मुनि श्री किशनलालजी म० का स्वर्गवास होने के समाचार जैन प्रकाश में पढ़कर खेद हुआ। क्योंकि एक अनुभवी और पुराने संत थे। उपाध्यायजी म० को दर्शन करने का जब जब सौभाग्य मिला, उस समय का वात्सल्यप्रेम हृदय में स्थान कर गया है। अब तो उनके गुणों का स्मरण करने में ही संतोष करना पड़ता है। छत्र स्वरूप गुरुदेव का वियोग-जन्य-दुख हृदय में खटकना पं० मुनि श्री जी के लिये स्वाभाविक हैं, परन्तु जितने दिन की सेवा का योग था, वह आप श्री ने आन्तरिक भावना से लाभ लिया। अब तो उनके सद्गुणों का संस्मरण करते हुए जिन शासन की सेवा करने में ही मुनि जीवन की सार्थकता है।

विद्या भूषण त्रिपाठी, पूना

श्री मथुरा मुनिजी म०

पूज्य गुरुदेव श्री किसनलालजी म० सा० के निधन का तार पाकर हृदय को बड़ा आघात पहुंचा। उनकी यश सुगन्धि सारे विश्व में सदैव विद्यमान बनी रहेगी। स्वर्गस्थ आत्मा शान्तिलाभ करे, यही कामना है।

४-१-६१ बाबूलाल वैरागी, जावरा

श्री पं. धनचन्द्रजी म० सा०

मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म० सा० के निधन के समाचार से मुनिवृन्द एवं श्री संघ को बहुत दुख हुआ। आप श्री स्थानकवासी समाज

के महान रत्न थे। भयंकर वेदना का भी उन्होंने सौम्यता पूर्वक सामना किया। आज वे महापुरुष संसार में नहीं हैं, पर उनकी चिर-यशोकीर्ति सदैव बनी रहेगी।

६-१-६१ पन्नालाल सुराणा, मगदड़ा

श्री सज्जनकुमारीजी म० सा०

वयोवृद्ध श्री १००८ श्री मंत्री मुनि किसनलालजी म० सा० के स्वर्गवास के समाचार पाकर महासतीवृन्द एवं श्री संघ में शोक की लहर व्याप्त हो गई। आप श्री जैन समाज के एक दिव्य रत्न थे। आपके निधन से समाज में काफी क्षति हुई है। शासनदेव से प्रार्थना है कि दिवगंत आत्मा को पूर्ण शान्ति प्राप्त हो।

५-१-६१ चन्दनमल ललवट आष्टा

श्री गुलाब कुंवरजी म०

गुरुदेव श्री किसनलालजी म० के स्वर्गवास के दुःखमय समाचार पाकर हार्दिक खेद हुआ। काल कराल के आगे सभी विवश हैं। उनकी यश कीर्ति आज भी संसार में व्याप्त है। समाज की यह क्षति पूर्ण होनी मुश्किल है। स्वर्गस्थ आत्मा को शांति मिले, यही कामना है।

१०-१-६१ सेक्रेटरी, नासिक

श्री चांदकुंवरजी म०

गुरुदेव श्री किसनलालजी म० के निधन के समाचार ,पाकर बहुत दुःख हुआ। आप श्री ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की आराधना में

निरंतर संलग्न बने रहे। स्वर्गस्थ आत्मा को शान्ति मिले, 'यही भावना है।

१०-१-६१.   के. एन. जैन. धार

श्री पन्यास प्रवर हीरमुनिजी म. तथा राजेन्द्र मुनिजी

महाराष्ट्र मंत्री श्री किसनलालजी म० सा० का दुखपूर्ण अवसान जानकर बहुत खेद हुआ। शासन में से एक चमकता हुआ सितारा चला गया। उनकी श्रद्धांजली निमित्त नवकार मंत्र के जाप किये हैं। शासनदेव उनको आत्मा को शांति प्रदान करें।

२५-१-६१   सेक्रेटरी, विसनगर

श्री वर्धमान जैन स्था० श्रावक संघ, बम्बई

श्री मंत्री मुनि किशनलालजी म० के स्वर्गवास का तार पाकर बहुत दुःख हुआ। मंत्री मुनि के जितने भी गुणगान किये जाय, थोड़े ही हैं। आप क्रिया में मजबूत एवं उच्चकोटि के विद्वान थे। उनकी व्याख्यान शैली सरल और भावपूर्ण थी। दर्शनार्थ आने वाले व्यक्तियों को कहे जाने वाले अनेक मीठे शब्द हम कभी नहीं भूल सकेंगे। अमीर और गरीब सभी के लिये उनके एक ही प्रकार के मिष्ट शब्द होते थे। पू. ताराचंदजी म० के बाद में धर्मदासजी म० की संप्रदाय को विकसित करने में आपका विशेष हाथ रहा। सत्ता और पद की प्रबल इच्छा आपको थी ही नहीं श्रमण संघ ने उन्हें मंत्री पद प्रदान किया किन्तु उसके लिये उन्होंने कभी भी उत्कंठा न दिखाई। वास्तव में उन्हें पदवी का मोह नहीं था। शासनदेव उनकी पवित्र आत्मा को शान्ति दे। और श्री सौभाग्यमुनिजी म. आदि मुनिवरों को धैर्यता तथा श्रमण संघ को मजबूत बनाने की शक्ति प्रदान करें, यही कामना है।

४-१-६१   गिरधरलाल दामोदर दपतरी, बम्बई

पू० गुरुदेव श्री किशनलालजी म० सा. के स्वर्गवास के समाचार मिले। हमें हार्दिक खेद है कि समाज में से एक रत्न उठ गया। हम लोगों पर तो उनका बहुत ही उपकार था। शासनदेव उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें, यही प्रार्थना है।

६-१-६० गंभीरचन्द उमेदजी
हुकमीचन्द अंदरजी } माटुंगा

पूज्य महाराज सा० श्री किसनलालजी म० के स्वर्गवास के समाचार जानकर बड़ा दुःख हुआ जैन शासन का एक सितारा चला गया। उसकी पूर्ति कठिन है। जैन समाज इस घाव को नहीं भूल सकेगा। महावीर प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

६-१-६१ हरीलाल जेचंद दोशी, घाटकोपर

परम पूज्य गुरुदेव श्री किशनलालजी म० के स्वर्गारोहण के समाचार पाकर हमारे पूरे संघ में शोक की छाया फैल गई। जैन समाज पर उनके अगणित उपकार हैं। उनके जानें से बड़ी भारी क्षति हुई है, पर कालचक्र के सामने विवश हैं। समाज ने एक तेजस्वी और प्रचारक साधु खो दिया है।

५-१ ६१ वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ, रतलाम

परम पूज्य गुरुदेव श्री किशनलालजी म. सा. के निधन के समाचार पाकर पूरा संघ शोक-सागर में निमग्न हो गया। जैन समाज ने एक महान् छत्र खो दिया है। इस क्षति की पूर्ति असम्भव है। उनकी महान् पवित्र आत्मा हमारे लिये एक पथ-प्रदर्शक एवं प्रेरणा रूप बनी रहेगी।

५-१-६१ छोटालाल कामदार, बम्बई

गुरुदेव श्री किशनलालजी म. के निधन के समाचार पाकर हार्दिक दुःख हुआ। पवित्र आत्मायें जब-जब भी हमारे बीच में से चली जाती हैं, तब-तब दुःख होना तो स्वाभाविक ही है। महापुरुषों का वियोग दुःख रूप ही है। महावीर प्रभु के निर्वाण पर गौतम स्वामी जैसे ज्ञानी का हृदय भी भारी हो गया था। गुरुदेव की स्मृति तो सदैव बनी रहेगी।

६-१-६१ नटवरलाल बम्बई

पूज्य गुरुदेव श्री किसनलालजी म. के निर्वाण का समाचार सारे जैन समाज के लिये दुखद है। गुरुदेव उच्च कोटि के विद्वान्, बड़ पवित्र और महान् व्यक्ति थे। उनके जाने से समाज ने एक धर्म प्रचारक खोया है। मेरा ख्याल है कि यह कमी कमी पूर्ण न हो सकेगी। जिसका आगमन उसका निर्वाण निश्चित है। पर जब समाज के उद्धारक ज्ञानी पुरुष का निर्वाण होता है तो विशेष दुखद होता है। महावीर प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

२०-१-६१ नाथालाल पारेख, बम्बई

परम पूज्य गुरुदेव श्री किशनलालजी महाराज के स्वर्गारोहण के समाचार पाकर बहुत दुःख हुआ। उनकी मधुर वाणी तथा धर्म प्रचार को समाज नहीं भूल सकेगा। इतनी भंयकर बीमारी को भी पूण शान्ति से सहन करते हुए जीवन के अन्तिम क्षणों तक वे अध्यात्मिकता से ओत-प्रोत बने रहे। बच्चे से लेकर वृद्ध तक प्रत्येक व्यक्ति के मानस-पटल पर गुरुदेव को स्मृति अंकित रहेगी।

११-१-६१ मणीलाल वीरचन्द, बम्बई

परम् पूज्य गुरुदेव श्री किशनलालजी म० के स्वर्गवास के समाचार से हार्दिक खेद हुआ। उनका निर्दोष चारित्र, उत्तम भद्रिक और

स्नेहपूर्ण स्वभाव क्षण-क्षण याद आता हैं वे अपना जीवन सार्थक बना गये है। उनके गुणों का अनुसरण ही उनके प्रति सच्ची भक्ति और श्रद्धांजली है। प्रकृति के नियमानुसार प्रत्येक की मृत्यु निश्चित है, पर महान् आत्माओं का वियोग दुखदायी होता हैं शासनदेव उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

७-१-६१ मगनभाई डोसी, बम्बई

परम् पूज्य गुरुदेव श्री किसनलालजी महाराज के स्वर्गवास के समाचार पाकर हार्दिक दुःख हुआ। गुरुदेव का जीवन बहुत पवित्र एवं सरल था। उनकी मधुर वाणी सदैव मानस में गूंजती रहेगी। शासनदेव उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

१६-१-६१ बाबूलाल भाई, बम्बई

परम कृपालु गुरुदेव श्री किसनलालजी म. के निधन के समाचार पाकर बहुत खेद हुआ। उनका निर्वाण कायोत्सर्ग किया। शासनदेव से अभ्यर्थना हैं कि पवित्र आत्मा को शांति मिले।

८-१-६१ पोपटलाल पानाचन्द, राजकोट

प्रातः स्मरणीय परम पूज्य गुरुदेव श्री किशनलालजी म० के निधन के समाचार पाकर दुःख हुआ। उनकी व्याख्यान शैली और शासनोन्नति का उत्साह भूलते नहीं बनता। काल-बल के सामने कोई उपाय नहीं है। पिछले वर्षों में समाज ने कई अनुपमेय रत्न खो दिये हैं। गुरुदेव तो आत्म कल्याण करके अमर हो गये हैं।

१३-१-६१ स्था. जैन संघ बोटाद

५७ गुरुदेव किसनलालजी म. का स्वर्गारोहण जानकर बहुत खेद हुआ। धर्म-धुरंधर त्यागी पुरुषों का विरह तो असह्य होता है। किन्तु अपने उत्तम गुणों के बल पर वे अमर हैं। वे अपने त्याग एवं चारित्रमय जीवन की सुगंधि बिखेरते गये हैं।

१३-१-६१ हीरालाल मंचकलाल दोशी, बोदाव

पू० गुरुदेव श्री किसनलालजी म० के स्वर्गवास का समाचार जानकर बहुत दुःख हुआ। आप श्री शांत स्वभावी एवं सरल प्रकृति के व्यक्ति थे। काल बली के सामने अपना कोई उपाय नहीं चल सकता। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

१०-१-६१ कानजी पानाचन्द, कलकत्ता

गुरुदेव मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म० सा० के स्वर्गवास का समाचार पढ़कर हार्दिक दुःख हुआ। गुरुदेव की मीठी वाणी हम नहीं भुला सकते हैं। एकबार उनके सम्पर्क में आने पर कोई भी व्यक्ति उनका भक्त बन जाता है। उनकी वाणी में तो मानो जादू भरा था। मद्रास में सर्वप्रथम वे ही पधारे थे। अन्य साधु-सन्त बाद में आने लगे हैं। वह अमूल्य वस्तु आज हमारे बीच नहीं है। गुरुदेव के प्रति हम श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।

२४-१-६१ जयचन्द व मोहनलाल चोरड़िया, मद्रास

महाराष्ट्र मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म. के निधन के समाचार पढ़कर हम विचलित व मुनि श्री हीरालालजी म० सा० ठा० ३ को तथा श्री संघ को बहुत खेद हुआ। काल की विचित्र गति है। आप श्री के स्वर्गवास से समाज को भारी क्षति पहुँची है। शासन देव से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

१४-२-६१ द्वारकाप्रसाद जैन, [illegible], [illegible]

श्रद्धेय महाराष्ट्र मंत्री श्री १००८ श्री किसनलालजी म० के देहावसान के समाचार पढ़कर अत्र विराजित श्री मन्नालालजी म० ठा० ४ को एवं श्री संघ को हार्दिक दुःख हुआ। व्याख्यान बन्द रहा। निर्वाण कायोत्सर्ग के साथ मन्त्री जी म० के जीवन पर दो शब्द भी कहे।

२१-४-६१ श्री वर्धमान स्था. जैन संघ, कोप्पल

महाराष्ट्र मंत्री श्री किसनलालजी म० सा० के स्वर्गवास के समाचार पढ़कर बहुत दुःख हुआ। काल के आगे किसी का वश नहीं चलता।

१०-१-६१ कपूरचन्द सुराना, दिल्ली

महाराष्ट्र मंत्री श्री किसनलालजी म० के निधन के समाचार पाकर बहुत दुःख हुआ। इस समाचार से हृदय को बहुत चोट पहुँची है। उनकी स्मृति तो सदैव विद्यमान रहेगी।

१३-१-६१ चन्द्रभानु, मंत्री जैन श्रावक संघ भरतपुर

महाराष्ट्र मंत्री गुरुदेव श्री किसनलालजी म० सा० के निधन के समाचार पढ़कर हार्दिक खेद हुआ। दो रोज आहार भी नहीं लिया जा सका। उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करते हुए हृदय भर आया। उनके देहोत्सर्ग की घटना से सबके मन को आघात पहुँचा है। पर जो बात टाली नहीं जा सकती उसके लिये क्या किया जाय? उनकी शिक्षा भरी मीठी बातें सबके मन को हर लेती थी। आगम के अथाह सागर के पास बैठकर आनन्द प्राप्त होता था। कितना प्रेम और कितना माधुर्य भरा था उनमें? जब जब उनकी स्मृति होती है तो आंखें सजल हो उठती हैं। शासनदेव उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

१२-१-६१ निर्मलकुमार यति, बम्बई

पूज्य गुरुदेव श्री किसनलालजी म. के निधन के समाचार पढ़कर बहुत दुःख हुआ। एक रोज शांतिपाठ रख कर सन्मति प्रचारक संघ की ओर से स्वर्गीय गुरुदेव को श्रद्धांजलि समर्पित की गई है।

और ऐसा विचार भी किया गया है कि उनकी स्मृति में "श्रीकृष्ण पुस्तकालय" कायम किया जाय।

१७-१-६१ हैद्राबाद

श्रीमान् पं. मुनि श्री १००८ श्री किसनलालजी म. के स्वर्गवास के समाचार सुन कर स्थानीय संघ में शोक छा गया। मुनिश्री महान त्यागी, तपस्वी एवं सरल परिणामी मुनि थे। आपके स्वर्गवास से समाज को गहरा आघात लगा है।

५-१-६१ चाँदमल अध्यक्ष, रतलाम.

तपस्वी मोहनलालजी म०

मंत्री, वयोवृद्ध, स्थविर गुरुदेव श्री किसनलालजी म. के स्वर्गवास के समाचार से अवगत होने पर तपस्वी मोहनलालजी म. को अत्यंत दुःखानुभूति हुई। स्वर्गीय मंत्री मुनि ने अंतिम क्षणों तक चतुर्विध संघ की सेवा और संगठनात्मक वृत्ति का निभाव किया। संयम पथ के परीषहों को सदैव ही आपने बहती हुई एक लहर की संज्ञा दी। आपने राजहंसवत् आदर्श गुणों के मूल्यांकन में ही अपना जीवन बिताया हर व्यक्ति के उचित अधिकारों का समर्थन आपकी नपी तुली निष्ट वाणी द्वारा होता। भविष्य में भूल न होने के लिये कठोर अनुशासन तथा क्षमा के आप प्रवाहमान स्रोत थे। आपके जितने गुणगान किये जाय थोड़े ही है। स्वर्गस्थ आत्मा को शांति मिले, यही कामना है।

६-१-६१ अजितकुमार जैन, रतलाम.

मंत्री श्री किसनलालजी म० के निधन के समाचार से अत्र विरा० जित मुनिवृन्द को एवं श्री संघ को हार्दिक खेद हुआ। जैन समाज की इस क्षति की पूर्ति मुश्किल है। दीर्घकाल तक संयमाराधना एवं धर्म० प्रचारादि शुभ कार्यों में उन्होंने जीवन लगाया। उनके प्रति हम भाव० भीनी श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं।

१०-१-६१

जैन संघ, बड़ी सादड़ी

श्री पुष्करमुनिजी तथा समीरमुनिजी म०

स्थविर मंत्री श्री किसनलालजी के स्वर्गवास के समाचार से हृदय खिन्न हो गया। समाज की एक महान् विभूति चली गई है। संघ की सभा में दिवगंत आत्मा का परिचय देकर ध्यान कराया। विविध प्रत्या० ख्यान भी हुए। उनकी वाणी से प्रेमामृत बरसता था। उनके जीवन में प्रत्येक के प्रति सहिष्णुता व हमदर्दीपन था। हम स्व. मंत्री श्री के शिष्य परिवार के प्रति समवेदना प्रकट करते हुये शासनेश से दिवंगत आत्मा के लिये अमर-अमरत्व की प्रार्थना करते हैं।

१८-१-६१

मांगीलाल दौलतराम भड़कतिया, चित्तौड़

प्रातः :स्मरणीय श्री किसनलालजो म के निधन के समाचार से श्री संघ को बहुत आघात पहुंचा। स्व. म. सा. ने ज्ञान दर्शन एवं चारित्र की आराधना करके समाज का पथ-प्रदर्शन किया। उनकी व्याख्यान शैली तो अपूर्व थी। चार लोगस्य का ध्यान कर म. सा० को श्रद्धांजली अर्पित की है। उनकी आत्मा को चिरशांति मिले, यही कामना है।

९-१-६१

किशनलाल मालु, मालेगांव

महाराष्ट्र मंत्री श्री किसनलालजी म० सा० के निधन से संघ में शोक की लहर फैल गई। समाज पर से एक विशाल छत्र उठ गया है। स्वर्गीय आत्मा को चिरशांति मिले, यही भावना है।

१६-१-६१

हेमराज गोठी, नासिक
मंत्री स्था. जैन संघ

महाराष्ट्र मंत्री श्री किसनलालजी म० के निधन के समाचार से बहुत दुःख हुआ। स्वर्गीय आत्मा के प्रति निर्वाण कार्योत्सर्ग कर संघ ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। शिष्यगण के प्रति समवेदना।

१०-१-६१

घेवरचंद छाजेड़, सेक्रेटरी इगतपुरी

पूज्य गुरुदेव श्री किसनलालजी म. के स्वर्गवास का समाचार वज्राघात की तरह लगा। वृद्धावस्था होते हुए भी आपने स्थानकवासी श्रमणसंघ की खूब सेवा बजाई। आपश्री की आत्मा को चिर शांति मिले यही अभ्यर्थना है।

७-१-६१

बाबूलाल बागरेचा
मंत्री, स्था. जैन संघ, धार (राजस्थान)

वयोवृद्ध मंत्री श्री किसनलालजी म. का स्वर्गवास जानकर चित्त में खेद हुआ। आपश्री जैन समाज के महान संत थे। स्वर्गीय आत्मा को चिरशांति मिले, यही कामना है।

१८-१-६१

हीरालाल जैन, उज्जैन

वयोवृद्ध मंत्री श्री किसनलालजी म. सा. के निधान से सभी को हार्दिक खेद हुआ। स्वर्गीय आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करें।

४-२-६१

छगनलाल चौधरी, बड़नगर

महाराष्ट्र मंत्री श्री किसनलालजी म० के स्वर्गवास के समाचार से बहुत दुख हुआ। दिवंगत आत्मा को शांति मिले यही कामना है।

५-१-६१ सुजानमल, आगर

महाराष्ट्र मंत्री श्री किसनलालजी म० के दुखद अवसान से अवगत होने पर बहुत दुःख हुआ। काल की गति विचित्र है। जैन समाज का एक सितारा अस्त हो गया।

२२-१-६१

नेमीचन्द सुखलाल टांटिया

वयोवृद्धि मंत्री मुनि गुरुदेव श्री किसनलालजी म. सा. के स्वर्गवास का समाचार सुनकर अतीव दुःख हुआ। परमात्मा उनकी पवित्र आत्मा को शांति प्रदान करें।

३०-१-६१ सेक्रेटरी, अशोक नगर

परम श्रद्धेय गुरुदेव मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म० सा० के स्वर्गवास पर आये हुए तार

Bombay

- Shocking news of sad demise of Pujya Gurumaharaj Kishanlalji Maharaj Saheb received all much distressed Praying Almighty may his holy soul rest in eternal Peace stop his holiness sponsored of Sangh we all are under his unbounded obligations cant express our feelings in words his inspitious love towards all human also animals and readiness for services to society will gliter for ages.

President, vice President
Secretaries and all Members.

पूज्य गुरु महाराज किशनलालजी म० सा० के निधन के हृदय विदारक समाचार प्राप्त हुए। सबको बहुत दुःख हुआ। परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि पवित्र आत्मा शाश्वत शांति में रहे। महाराज श्री ने संघ की स्थापना में प्रेरणा दी। हम सब उनके अत्यन्त ऋणी हैं। शब्दों में हम हमारी भावना व्यक्त नहीं कर सकते हैं। उनका प्रोत्साहन मनुष्य एवं पशुओं के प्रति प्रेम तथा समाज की सेवा के लिए तत्परता शताब्दियों तक चमकती रहेंगी।

संघ के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री तथा समस्त सदस्यगण

Received telegram today deeply regret reading the demise of Mantrimuni Shri Kishanlalji Maharaj Sthanakuasi Samaj lost very pious and highfinger Sadhu please give Pachhedi of Rupees one hundred on our behalf.

–Bombay Sangh

आज तार मिला। मंत्री मुनि श्री किशनलालजी म के देहावसान को पढ़कर बहुत दुःख हुवा। स्थानकवासी समाज ने बहुत पवित्र और उच्च कोटि के एक साधु को खो दिया है। कृपया एक सौ रुपये की पछेवड़ी (चद्दर) हमारी ओर से दें।

वम्बई संघ

Ghatkopar Sthanakvasi Jain sangh expresses its deep sorrow at sudden and sad demise of pujya kishanlalji Maharaj saheb and pary Vir Prabhu that his soul may rest in peace.

Hiralal Jaichand

घाटकोपर स्थानकवासी जैन संघ पूज्य श्री किशनलालजी म. सा. के आकस्मिक अवसान के लिए गहरा दुःख प्रकट करता है, तया वीर प्रभु से स्वर्गस्थ आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता है।

हीरालाल जयचन्द, घाटकोपर

Extreemly sorry for sad demise of pujya Gurumaharaj Kishanlalji Maharaj saheb praying God may rest his holy soul in eternal peace our condolences to all grieved pujya Maharaj saheb and pujya

Mahasatijis stop His rememberances teachings literatures and noble nature will ever remain amongst us as shining torch.

Maganbhai Doshi and family

पूज्य गुरुमहाराज किसनलालजी महाराज के निधन से अत्यन्त दुःख है। परमेश्वर से प्रार्थना है कि उनकी पवित्र आत्मा को शाश्वत शांति में रखे। पू० महाराज सा० एवं महासती वृन्द से नम्रता पूर्वक निवेदन है वे इस गहरे दुःख को भुला दें। उनका सिखाया हुआ साहित्य एवं उनका न्दर स्वभाव हमारे बीच सदैव प्रकाश फैलाता रहेगा।

मगनभाई डोसी परिवार, बाम्बे

Very sorry to hear news of sad demise of pujya Gurumaharaj Kishanlalji Maharaj Saheb may his holy soul rest in peace my condolences to all pujya maharaj sahebs.

Nirmal kumar yati

पू० गुरु महाराज किसनलालजी म. सा. के निधन के समाचार सुनकर अत्यंत दुःख हुआ। उनकी पवित्र आत्मा को शान्ति प्राप्त हो। सब पू० महाराज साहबों को मेरी ओर से समवेदना।

निर्मलकुमार यति

Param pujya 1008 Kishanlalji Maharaj expired great loss to Jain samaj our pranams.

Poratlal Panachand

परम पूज्य १००८ किसनलालजी महाराज के निधन से जैन समाज को बड़ी भारी क्षति हुई है। हमारी वन्दना।

पोपटलाल पानाचन्द राजकोट

Jodhpur sangh felt irreparable loss of demise of Mantri Muni Kishanlalji

Madhomal

मंत्री मुनि किसनलालजी म० के निधन से जोधपुर संघ वह क्षति महसूस करता है जिसकी पूर्ति असम्भव है।

माघोमल

Sangh deeply regrets sad demise of Maharashtra Mantri Pujya Kishanlalji Maharaj and share calamity fallen on Jain sangh.

Sthanakvsi Jain Sangh Amalner

महाराष्ट्र मंत्री, पूज्य किसनलालजी म. के दुखपूर्ण निधन से संघ बहुत दुःखी है। और जैन संघ पर आई हुई विपत्ति में भाग लेता है।

स्थानकवासी जैन संघ, अमलनेर

Grieved to hear Gurudeos demise.

Pyarchand Ranka, Sailana

गुरुदेव के निधन के समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ।

प्यारचन्द रांका, सैलाना

Received demise of holiness with heavy heart pray God offer departed soul eternal peace.

Sthanakvasi sangh, Mehidpur

पविशात्मा के निधन के समाचार बड़े दुःखपूर्ण हृदय से सुने। परमेश्वर से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

स्थानकवासी संघ, महिदपुर

Extremely grieved for Maharaj Kishanlalji sad demise pray for eternal peace to his soul accept our condolences.

Limadi sangh

किसनलालजी म. के दुखपूर्ण निधन से गहरा दुःख हुआ। स्वर्गस्थ आत्मा को शान्ति प्राप्त हो। हमारा प्रणाम स्वीकारें।

लीमड़ी संघ

मरुधर केसरीजी मन्त्री मिश्रीमलजी म. मंत्री मुनि श्री किसनलालजी के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

हीराचन्द, भीकमचन्द, जोधपुर

गुरुदेव किसनलालजी महाराज के स्वर्गवास का समाचार सुनकर हार्दिक दुःख हुआ परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे।

सन्मति प्रचार संघ और नानकराम हैदराबाद

मंत्री श्री किसनलालजी म. सा. के देहोत्सर्ग पर पत्रों में निकली हुई टिप्पणियाँ

नई दुनिया ४-१-६१

जैन मुनि किसनलालजी म. का स्वर्गवास

आज सायं स्थानकवासी श्वेतांबर जैन समुदाय के मुनि श्री किसनलालजी म. जिनकी आयु लगभग ८० वर्ष की थी, ४-४ वर्ष की अस्वस्थता के पश्चात स्वर्गवास हो गया। मुनिजी पिछले ८ दिनों से अधिक अस्वस्थ थे। शवयात्रा राजमोहल्ले से कल सुबह ११ बजे निकलेगी।

नई दुनिया ५-१-६१

जैन मुनि श्री किसनलालजी का शव-यात्रा-जुलूस

इन्दौर ४ जनवरी। जैन मंत्री मुनि श्री किसनलालजी महाराज, जिनका कल सायं यहाँ स्वर्गवास हो गया था, आज शवयात्रा जुलूस राजमोहल्ले से निकाला गया।

मुनिश्री का शव एक शानदार सजी हुई पालकी में बिठाकर निकाला गया था। हाथी, घोड़े, बेंड, बाजे, भजन मण्डलियों के अतिरिक्त भक्तजन जय-जयकार कर रहे थे। आध मील लंबे इस अपूर्व जुलूस में बेलास, धार, खाचरोद, रतलाम, उज्जैन तथा आस पास के दो हजार

भक्तों ने भाग लिया था। महाराज श्री के शोक में आज क्लाथ मार्केट, सराफा व अन्य बाजार बन्द रहे। महाराजश्री का स्मारक एक छात्रावास के रूप में बनवाने का भी सोचा जा रहा है।

नवभारत—५-१-६१

श्री जैन मुनि का दाह संस्कार

शवयात्रा में हजारों ने भाग लिया

जैन मुनि श्री किसनलालजी म. की शवयात्रा आज नगर में काफी धूमधाम के साथ निकाली गई। शवयात्रा के आध मील लम्बे जुलूस में नगर के हजारों नागरिकों के अलावा देवास, धार, रतलाम, उज्जैन व आस पास के लगभग २ हजार भक्तों ने भाग लिया।

जुलूस मंथर गति से नगर के प्रमुख मार्गों पर बढ़ा चला जा रहा था, जिसमें भक्तगण जय जयकार लगा रहे थे। हाथी घोड़े, और बेण्ड ने जुलूस की शोभा बढ़ा दी थी। मुनिजी का दाह संस्कार देवास घाट पर किया गया।

रात्रि को महावीर भवन में श्री हस्तीमल जैन की अध्यक्षता में एक शोक सभा हुई, जिसमें मुनिजी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर भी श्री मनोहरसिंहजी मेहता, बद्रीलालजी एडवोकेट एवं मोतीलालजी मुराणा ने स्वर्गवासी मुनि के जीवन पर प्रकाश डाला।

जागरण—५-१-६१

जैन मुनि को श्रद्धांजलि

इन्दौर, ४ जनवरी। जैन मुनि श्री किसनलालजी महाराज का दाह संस्कार आज देवास घाट पर भजन कीर्तन के साथ किया गया।

शवयात्रा में ३००० से अधिक नर नारियों ने भाग लिया। आपके शोक में आज क्लाथ मार्केट, सराफा व अन्य बाजार बन्द रहे। रात्रि को महावीर भवन में सार्वजनिक सभा के रूप में आपको श्रद्धांजलि अर्पित की गई। जैन समाज द्वारा महाराज श्री का स्मारक छात्रावास के रूप में बनाये जाने का विचार किया गया।

नई दुनिया—६–१–६१

गीता भवन में जैन मुनि को श्रद्धांजलि

इन्दौर, ५ जनवरी। गीता भवन मनोरमागंज में आज प्रातः साढ़े नौ बजे महात्मा स्वामी श्री सर्वानन्दजी महाराज के सान्निध्य में एक शोक सभा हुई। सभा में जैन मुनि श्री किसनलालजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

मंत्री मुनि किसनलालजी म. के निधन पर की गई शोक सभायें

आज दिन मेरी अध्यक्षता में श्री अ. भा. श्वे. स्था. जैन कान्फ्रेन्स (बम्बई) तथा बम्बई के ग्यारह संघों की एक सभा मंत्री मुनि श्री किसनलालजी महाराज साहेब को श्रद्धांजलि देने के लिये की गई। महासती प्रभाकुंवरजी ने मंत्रीजी के जीवन पर सुन्दर ढंग से प्रकाश डाला। बम्बई के प्रत्येक संघ के प्रतिनिधियों ने तथा अ. भा. श्वे. स्था. जैन कान्फ्रेन्स (बम्बई) के सेक्रेटरी–गण ने म. सा. को श्रद्धांजलि अर्पित की। साथ ही उनके जीवन पर बोलते हुए सर्वसम्मति से एक शोक प्रस्ताव–पारित किया:—

'अ. भा. श्वे. स्था. जैन कान्फ्रेन्स तथा बम्बई एवं उपनगर के सकल संघ की यह सामान्य सभा श्रमण संघ के मंत्री मुनिश्री किसनलालजी

महाराज के शोकास्पद अवसान के लिये हार्दिक खेद प्रदर्शित करती है। श्री किसनलालजी म. एक प्रखर वक्ता, शास्त्रज्ञ, शान्त और सरल स्वभावी मुनिराज थे। आपश्री के दुःखद अवसान से जैन समाज तथा श्रमण संघ को बड़ी भारी क्षति पहुंची है। शासनदेव उनकी आत्मा को चिरशांति दे, यही प्रार्थना है।

८-१-१९६१ प्राणलाल इंदरजी, प्रमुख (बम्बई)

उदयपुर—६-१ ६१ वयोवृद्ध पं. रत्न श्री किसनलालजी म. सा. के स्वर्गवास के समाचार पाकर एक शोक सभा की गई। संघ की इस आम सभा में निम्नांकित शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

श्री व. स्था. जैन श्रावक संघ उदयपुर की यह आम सभा वयोवृद्ध श्रद्धेय पं. रत्न मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म. सा. के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती हुई, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है, व शासनदेव से दिवगत आत्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना करती है।

तख्तसिंह पानगड़िया
मंत्री, श्री. व. स्था. जैन श्रावक संघ
उदयपुर

नासिकः—वयोवृद्ध मंत्री श्री किसनलालजी म. के निधन पर यहां एक शोक सभा की गई। जिसमें निम्न प्रस्ताव पारित किया गया।

'परम पूज्य स्थविर मुनि श्री १००८ श्री किसनलालजी म. सा. के निधन पर यह सभा उन्हें श्रद्धा भक्ति एवं भाव पूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करती है। तथा स्वर्गीय आत्मा को चिर-शांति सौख्य प्राप्त हो, ऐसी शासनेश से प्रार्थना करती है।'

हेमराज गोठी

धूलिया:—महाराष्ट्र मंत्री मुनि श्री १००८ श्री किसनलालजी म सा० के निधन का समाचार पाकर संघाध्यक्ष श्रीमान मिश्रीलालजी छाजेड़ के सभापतित्व में संघ ने एक सभा का आयोजन किया। श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद निम्न प्रस्ताव सर्वानुमति से पास किया गया।

'यह सभा स्व, मंत्री किसनलालजी म. के स्वर्गवास पर अपना शोक प्रदर्शित करती है। शासनेश उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें, यह प्रार्थना करती है।'

स्वर्गीय गुरुदेव जैन शासन के एक अत्यन्त प्रभावशाली, शांति-प्रिय, मधुरभाषी और प्रखर पंडित थे। आप श्री ने संघ ऐक्यु हेतु महान परिश्रम किया था आपके जाने से समाज को वड़ी भारी क्षति हुई है।

मोतीलाल रूणवाल
मंत्री, स्था, जैन संघ धूलिया

रतलाम—ता. ४-१-६ को प्रात:काल में शोक सभा की गई। सभा में अनेक वक्ताओं ने मुनि श्री के जीवन, आदर्श सेवा, व त्याग पर प्रकाश डालते हुए निम्न प्रस्ताव पास किया।

'श्री वर्द्धमान स्था. जैन श्रावक संघ, रतलाम की यह सभा श्री व. स्था जैन श्रमण संघ के मंत्री पं. मुनि श्री किसनलालजी म. सा. के इन्दौर में स्वर्गवासी हो जाने पर गंभीर शोक का अनुभव करती है। मंत्री मुनि प्रवर का सरल दीर्घ संयमी जीवन, लाक्षणिक व्यख्यान छटा तथा भाषा की मधुरता आदि अनेक विशेषताओं की अमिट छाप श्रावकों के हृदय पर अंकित है, और रहेगी। लगभग साठ वर्ष के संयमी जीवन में आपने जो जैन शासन की प्रभावना की है, वह चिर-स्मरणीय रहेगी। ऐसे महान संत के स्वर्गवास से समाज का एक चमकता सितारा ..स्त

हुआ है। यह संघ स्वर्गस्थ मुनि प्रवर के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ उनकी आत्मा के लिए शाश्वत शांति की कामना करता है।

उक्त प्रस्ताव के साथ नमोषकार मंत्र के ध्यान के पश्चात सभा समाप्त की।

अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष

रतलाम—आज दिनांक ४-१-६१ को, जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में एक शोक-सभा, विद्यालय के आचार्य श्री कोमलसिंहजी मेहता की अध्यक्षता में हुई। जिसमें निम्नलिखित शोक-प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया।

'श्री जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों और विद्यार्थियों की यह सभा श्री किशनलालजी म. सा. के स्वर्गवास पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

वे एक अच्छे वक्ता और तपस्वी तथा मनस्वी व्यक्ति थे। वे मालव प्रांत के प्रतिष्ठित सन्तों में से एक थे। आपके निधन से अध्यात्मिक जगत की, समाज की बड़ी क्षति हुई है।

दिवंगत आत्मा जहाँ कहीं भी हो, उसे शांति प्राप्त हो, यही भगवान महावीर से प्रार्थना है।

प्रिंसीपाल, जैन हाई स्कूल, रतलाम

रामपुरा—मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म. के निधन के समाचार पाकर श्री संघ द्वारा एक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें निम्न शोक प्रस्ताव पास किया गया:—

'प्रांतीय वयोवृद्ध मंत्री मुनि श्री किशनलालजी महाराज सा० के स्वर्गवास के समाचार तार द्वारा इन्दौर से प्राप्त होते ही यहां के संघ में

गहरा शोक छा गया है। आप श्री जैन समाज के अग्रगण्य सन्त थे। श्रमण संघ के मुख्य अधिकारी थे तथा शास्त्रों के ज्ञाता थे। उनका स्वभाव भद्रिक व भाषा मधुर थी। उनके स्थान की पूर्ति निकट भविष्य होनी मुश्किल है। शासनेश से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को अपूर्व शान्ति प्राप्त हो।

हस्तीमल कीमती
अध्यक्ष, स्था. जैन संघ

भरतपुर—महाराष्ट्र मंत्री वयोवृद्ध श्री १००८ श्री किसनलालजी महाराज के निधन के शोक समाचार पढ़कर श्री जैन महावीर भवन में शोक सभा का आयोजन किया गया और निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास किया गया।

'श्री १००८ श्री महाराष्ट्र मंत्री सरल स्वभावी वयोवृद्ध मुनिश्री के निधन के समाचार पढ़कर संघ को बड़ा दुःख हुआ। ऐसे मुनिराजों का निधन समाज के लिए महाक्षति रूप है, जिसका पूर्ति होना असम्भव हो जाता है। परन्तु कालचक्र के सामने किसी की नहीं चलती। श्री शासन देव से प्रार्थना है कि स्वर्गीय आत्मा को शांति प्राप्त हो।'

चन्द्रभानु
मंत्री श्री व० स्था० जैन संघ

कोप्पल—श्रद्धेय महाराष्ट्र मंत्री मुनि श्री १००८ श्री किसनलालजी म० के देहावसान पर कोप्पल संघ में शोक की लहर दौड़ गई। स्थानक में शोक सभा हुई। पं. मन्नालालजी म० तथा मुनिवृन्द ने एवं संपतरायजी आदि श्रावकों ने मंत्री मुनि को श्रद्धांजलि अर्पित की। उपस्थित श्रावक श्राविकाओं ने कायोत्सर्ग किया। एवं प्रत्याख्यान ग्रहण किये। दिवंगत आत्मा को शांति लाभ हो, यह शुभ कामना है।

श्री व. स्था. जैन संघ

मैलापुर (मद्रास)—महाराष्ट्र मंत्री पं. र. मुनि श्री किसन-लालजी म० सा० के स्वर्गवास के समाचार सुनकर यहां के श्री संघ में शोक छा गया। श्रीमान श्रावकजी रूपचंदजी की उपस्थिति में शोक सभा हुई और दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा चार लोगस्स का ध्यान किया। मुनिश्री के गुणग्राम के बाद सभा समाप्त हुई।

जयवन्तमल चोरड़िया

कोशीथल—महाराष्ट्र मंत्री श्री किसनलालजी म. के स्वर्गवास के समाचार पाकर यहां शोक सभा की गई और व्याख्यान भी बन्द रहा। उनके गुणानुवाद किये गये। तथा मौन ग्रहण करने के बाद श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

सेक्रेटरी, स्था. जैन संघ

रायपुर—४-१-६१—मंत्री मुनिश्री के इन्दौर में हुये स्वर्गवास के समाचार से समाज में शोक छा गया। स्थानक में शोक सभा हुई जिसमें चार लोगस्स का ध्यान किया गया और दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये चिरशांति की प्रार्थना की गई।

पूनमचन्द धूपिया

लासलगाँव—महाराष्ट्र मंत्री मुनिश्री किसनलालजी म० सा० के स्वर्गवास का समाचार सुनकर संघ के अध्यक्ष श्री सुगालचन्द जसराजजी की अध्यक्षता में शोक सभा करके गुरुदेव के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आपकी प्रशांत मुद्रा और गुणों का स्मरण कर जीवनी पर प्रकाश डालते हुये कामना की गई कि स्वर्गस्थ आत्मा को शाश्वत शान्ति प्राप्त हो।

मिश्रीलाल डूंगरवाल, गृहपति

स्था. जैन संघ इन्दौर की श्रद्धांजलि

इन्दौर ६-१-६१। आज की इन्दौर श्रावक संघ की यह आम सभा महानत्यागी, शांतमूर्ति, वैराग्य रस से ओतप्रोत व्याख्याता, सरल-स्वभावी, श्रमण संघीय महाराष्ट्र मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म० सा० के स्वर्गवास पर अपनी हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित करती हैं।

महाराज श्री एक अच्छे व्याख्याता तो थे ही पर कवि भी थे। आपने मालवा मारवाड़ के अतिरिक्त लगातार ६० वर्ष तक महाराष्ट्र हैदराबाद तथा गुजरात आदि प्रान्तों में जैन धर्म का झण्डा फहराया एवं जैन व जैनेतर में धर्म का खूब प्रचार व प्रसार किया।

ऐसे अनेक गुणालंकृत विद्वान् महापुरुष का आज निधन हो गया है, उसकी निकट भविष्य में पूर्ति होना असम्भव है।

आपके प्रधान शिष्य प्रसिद्ध वक्ता पं. मुनिश्री सौभाग्यमलजी म. सा. आदि सन्तों को महाराजश्री के निधन से जो दुःख हुआ है, उसके प्रति श्रावक संघ समवेदना प्रकट करते हुये धैर्य धारण करने का निवेदन करता है।

मंत्री, व स्था. जैन संघ, इन्दौर

महिदपुर—५-१-६१-महाराष्ट्र मंत्री मुनिश्री किसनलालजी म. सा. के इन्दौर में हुए स्वर्गारोहण के समाचार से स्थानीय समाज में शोक छा गया। ता. ४-१-६१ को प्रातः ९॥ बजे स्थानक में श्री सागरमलजी बुरड़ की अध्यक्षता में शोक-सभा हुई, जिसमें दिवंगत आत्मा के लिये श्रद्धांजलि अर्पित की गई और व्यापार आदि कार्य बन्द रखे गये।

बालचन्द नाहटा

मनासा—४-१-६१ महाराष्ट्र मंत्री श्री किसनलालजी म. सा. के स्वर्गारोहण पर आज यहाँ शोक सभा की गई। सभा में इन्दौर का तार पढ़कर सुनाया गया जिससे उपस्थित जनता में शोक छा गया और चार लोगस्स का ध्यान किया गया। श्री प्रतापमलजी म. ने मुनिश्री की जीवनी पर प्रकाश डालते हुये कहा कि श्रमण संघ के मान्य रत्न का निधन जैन समाज के लिये असह्य है।

अन्त में शासनदेव से प्रार्थना. की गई कि स्वर्गस्थ आत्मा को चिर शांति प्राप्त हो।

जैन श्वे. स्था. संघ

वलि —१३-१-६१, मंत्री, मुनि श्री के इन्दौर में हुए देहावसान से समाज को हार्दिक दुख हुआ। शोक सभा हुई, जिसमें दिवंगत आत्मा के गुणानुवाद पूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा चिरशांति के लिए प्रार्थना की गई।

हिम्मतमल जैन

इगतपुरी—१०-१-६१, मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म. सा. के इन्दौर में हुए देहावसान से संघ को हार्दिक दुख हुआ और धर्मस्थानक में शोक सभा कर श्रद्धांजली अर्पित की गई।

घेवरचन्द कुन्दनमल छाजेड़, मंत्री

दिल्ली—धर्म स्थानक सदर बाजार में मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म. सा. के स्वर्गवास होने पर शोक सभा की गई। जिसमें श्री कुंजलालजी ओसवाल आदि वक्ताओं ने दिवंगत आत्मा का गुणानवाद करते हुये अपनी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अन्त में शोक प्रस्ताव पारित करते हुए चिरशांति के लिये कामना की गई।

राजगढ़—१२-१-६१, इन्दौर में मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म. के स्वर्गवास के समाचार ज्ञात होते ही श्रावक संघ के सदस्य इन्दौर रवाना हो गये और आप श्री की अन्तिम यात्रा में सम्मिलित हुये थे। शोक सभा कर, स्वर्गीय आत्मा की चिरशांति की कामना करते हुये श्रद्धांजलि अर्पित की गई थी।

मंत्री, बाबूलाल बागरेचा

सादड़ी (मारवाड़) श्रमण संघीय महाराष्ट्र मंत्री १००८ श्री किसनलालजी म. सा. के स्वर्गवास को पढ़कर उसी दिन श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल सादड़ी के समस्त परिवार की एक शोक सभा का आयोजन संध्या को किया गया और स्वर्गस्थ मुनिश्री के लिये गुणानुवाद किया गया। तत्पश्चात एक शोक-प्रस्ताव पास करके मुनिश्री की आत्मा को चिरशांति प्राप्त हो, ऐसी मंगल कामना की गई।

निवेदक-अनोपचन्द्र पुनमिया

इन्दौर—श्री श्वे. जैन पद्मावती पोरवाल संघ इन्दौर की एक आम सभा दिनांक ४ जनवरी को स्वर्गीय महाराष्ट्र मंत्री श्री किसनलालजी म. सा. को श्रद्धांजलि अर्पित करने के हेतु हुई। इस प्रसंग पर उपस्थित स्वधर्मियों ने ४ लोगस्स का ध्यान किया। उक्त संघ की ओर से दिनांक १५ जनवरी को ६००-७०० गरीबों को भोजन कराया गया व पशु पक्षियों को घास जुवार आदि डलवाया।

उपरोक्त सभा कार्यक्रम राजमोहल्ला स्थित जैन भवन में किया गया।

उत्तमचन्द जैन, मंत्री
श्री श्वे. जैन पदमावती पोरवाल संघ

जावरा - ३-१-६१, श्रमणसंघीय महाराष्ट्र मंत्री श्री किसनलालजी म. सा. के स्वर्गवास के समाचार पाकर यहां सन्नाटा छा गया। उसी समय बाजार भी बन्द हो गया एवं श्री मथुरा मुनिजी महाराज के नेतृत्व में एक शोक सभा हुई। मुनि श्री के जीवन की प्रशंसा की गई। मुनि श्री शांत स्वभावी एवं सदय हृदय थे। सभा में चार लोगस्स का ध्यान किया गया।

सौभाग्यमल कोचेटा

हरमाड़ा -श्रमण संघ के मंत्री श्री किसनलालजी म. सा. के स्वर्गवास के समाचार पाकर यहां शोक की लहर दौड़ गई, समाज ने एक सभा का आयोजन किया, जिसमें मिश्रीलालजी म. सा. ने स्वर्गीय आत्मा के जीवन पर प्रकाश डाला। शासनदेव स्वर्गीय आत्मा को शांति प्रदान करें।

धर्मीचन्द लूणावत

जोधपुर—मंत्री मुनिश्री मिश्रीमलजी म. सा. ने मंत्री मुनिश्री किसनलालजी म. के स्वर्गवास के समाचार पाकर दूसरे दिन व्याख्यान बन्द रखा और स्वर्गीय आत्मा के जीवन पर प्रकाश डाला। तथा भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई।

वृहद् बम्बई में आयोजित जाहिर सभा

श्रमण संघीय मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म. सा. को श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिये ता. ८-१-६१ के दिन रविवार को सुबह ९ बजे मेघजी थोभण जैन धर्म स्थानक कांदावाड़ी बम्बई में एक जाहिर सभा थी रखा. जैन कान्फ्रेन्स बम्बई और कांदावाड़ी संघ, चीचपोकली संघ माटुंगा संघ, दादर संघ, कोट संघ, विले पारले संघ, घाटकोपर संघ, मलाड़ संघ, बोरीवली संघ, कांदीवली संघ, तथा अंधेरी संघ के आश्रय

में, कांदावाड़ी धर्मस्थानक में विराजिता महासतीजी माणककुंवरबाई तथा प्रभावतीबाई ठा. ३ की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी। सभा के प्रमुख सेठ प्राणलाल इंदरजी थे।

सर्व प्रथम प्रभाकुंवर बाई महासती जी ने मंत्री मुनि को काव्य में श्रद्धांजलि अर्पण की। इसके बाद उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुये कहा कि जो सम्राट संग्राम में दस लाख योद्धा पर विजय पाता है, वह क्या सच्चा विजेता कहलायेगा ? नहीं। सच्चा विजेता तो वही है, जो अपनी आत्मा एवं कषायों पर विजय हासिल करता है। मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म. सच्चे विजेता थे। वे अपने हृदय की सरलता भावों की निर्मलता और चारित्र की शुद्धता से संसार पार कर गये हैं।

महासती जी के वक्तव्य के बाद श्री खीमचन्द भाई वोरा ने सभापति की ओर से मंत्री मुनि के लिए श्रद्धांजलि का प्रस्ताव रखा और कहा कि स्थानकवासी समाज में से क्रमशः महापुरुष विदा लेते जा रहे हैं। उनकी कमी पूर्ण करने के लिए समाज को गम्भीर विचार करने की जरुरत है।

श्री गिरधर भाई दफ्तरी ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया और मंत्री मुनि के बम्बई पर किये हुये उपकारों का प्रसंगानुसार उल्लेख किया।

माटुंगा श्री संघ की ओर से सेठ श्री गंभीरभाई कोट श्रीसंघ की ओर से मगनभाई दोशी, घाटकोपर श्रीसंघ की ओर से हरिभाई दोशी, दादर श्रीसंघ की ओर से गिजूभाई मेहता, मलाड श्रीसंघ की ओर से श्री काननीभाई पतु, कांदीवली संघ की ओर से रतिभाई नेणसीभाई ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया। तथा प्रासंगिक दो शब्द कहे।

तत्पश्चात् सब सभाजनों ने खड़े होकर महासतीजी से मांगलिक श्रवण की और निम्न प्रस्ताव पारित किया।

प्रस्ताव

"श्री अ. भा. श्वे. स्था. जैन कान्फ्रेन्स बम्बई तथा उपनगर के सकल संघों की यह सामान्य सभा श्रमण संघ के मंत्री मुनिश्री किसनलालजी म. के शोकास्पद अवसान पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। स्व. मंत्री मुनि एक प्रखर वक्ता, शास्त्रज्ञ, शांत और सरल स्वभावी मुनिराज थे। आपके दुःखद अवसान से जैन समाज तथा श्रमण संघ को बड़ी भारी क्षति पहुँची है। शासनदेव उनकी आत्मा को चिरशांति दे यही प्रार्थना है।"

बृहद् बम्बई पर अनहद उपकार

मंत्री मुनिजी ने बृहद् बम्बई पर जो उपकार किये हैं, उन्हें विस्मृत नहीं किया जा सकता। बम्बई कांदावाड़ी संघ को जब भी जरुरत होती तब चातुर्मास के लिये कोई न कोई मुनिराजों को अवश्य भेजते। माटुंगा के नवीन उपाश्रय में सर्व प्रथम उन्हीं का चातुर्मास हुआ था। कोट-उपाश्रय, दादर उपाश्रय, मलाड जैन शाला- तथा समाज जागृति उन्हीं की प्रेरणा और सम्पर्क का फल है।

'विशिष्ट गुण—मन्त्रीजी म. के जीवन में जो विशिष्ट गुण थे वे अन्यत्र बहुत कम मिलते हैं। महासतीजी प्रभाबाई के शब्दों में "वाणी सभ्यता का थर्मामीटर है।" मन्त्रीजी म. का वाणी-माधुर्य नहीं भुलाया जा सकता। "महान पुण्यवान, महान भाग्यवान, दया पालो" ये शब्द तो आप इतने स्नेहपूर्ण ढंग से कहते थे कि सभी के हृदय में म. श्री के प्रति पूज्य भाव की धारा बह निकलती।

आपश्री ने कषाय पर अद्भुत विजय पायी थी। आपश्री का स्वास्थ्य गत वर्षों में गंभीर था। फिर भी आपकी शांत मुद्रा में कभी भी अन्तर नहीं दिखाई दिया। जब आपके पैर में फोड़ा हुआ था और डाक्टर

पैर में पट्टी बांधने आते तो आपके मुख से आह भरी कराह तक न निकली। वे स्वभाव से शांत, प्रकृति से सरल, वाणी से मधुर और विचार से शुद्ध थे। ये उनके विशिष्ट गुण थे।

शिष्यों की आदर्श सेवा और त्याग

मंत्री मुनि श्री किसनलालजी म. के शिष्य प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजा म., मधुर व्याख्यानी श्री विनयमुनिजी म. ने सेवा और त्याग के जो अनुपम उदाहरण विश्व के सामने रखे हैं, वे अनुकरणीय है। पूज्य श्री ताराचंदजी म. के स्वर्गवास बाद आचार्य पद देने की समस्या उपस्थित हुई। अपनी परंपरानुसार ओसवाल जाति में जन्म लेने वालों को ही पूज्य पदवी दे सकते हैं, किन्तु मन्त्री मुनि किसनलालजी म. ने ब्राह्मण जाति में जन्म लिया था। इसलिए पूज्य पदवी सौभाग्यमलजी म. को दी जानी चाहिए थी पर उन्होंने पूज्य पदवी लेने से इन्कार कर दिया और परिणाम स्वरूप जब तक श्रमण संघ का निर्माण नहीं हुआ तब तक इस संप्रदाय में किसी को भी पूज्य पदवी न दी गई। मंत्री मुनि के प्रति शिष्य द्वारा कृत यह सम्मान एवं त्याग का उदाहरण अनुपम है।

साधारण तौर पर दीर्घकाल की बीमारी में सभी घबरा जाते हैं। मन्त्री मुनिजी भी दीर्घकाल से बिछौने पर थे, फिर भी उनके शिष्यों ने अंतिम घड़ी तक बिना किसी आनाकानी के सेवा बजाई। आज के युग में ऐसी सेवा एक पुत्र अपने पिता की भी नहीं कर सकता। प्र. व. पं. श्री सौभाग्य मलजी म. रात के एक बजे से प्रातः छः बजे तक नियमित रुप से सेवार्थ उपस्थित रहते। उसी प्रकार अन्य मुनिराज भी सच्चे हृदय से नियमित सेवा करते थे।

दुर्बल बनता हुआ समाज—

स्थानक वासी समाज भौतिक क्षेत्र में भले ही प्रगतिशील हो पर आध्यात्मिक क्षेत्र में तो वह दिनोंदिन दुर्बल बनता जा रहा है। गत कुछ

वर्षों में ही हमने उच्च कोटि के विद्वान् एवं चारित्रशील मुनिराज खो दिए हैं। अभी थोड़े समय में ही पू. श्री माणकचंदजी म पं. श्री प्राणलालजी म पू. आ. श्री पुरुषोत्तमजी म. और अन्त में श्री किसनलालजी म. हमारे बीच में से विदा हो चुके हैं। दूसरी ओर नवदीक्षित साधुओं की संख्या बहुत कम है। हां, साध्वियों की संख्या जरूर बढ़ रही है और १६-१८-२० वर्ष की बा. ब्र. बहनें इस संसार को त्यागकर भगवती दीक्षा ग्रहण कर रही हैं। समाज के लिए यह गौरव का विषय है। किन्तु इतने में ही स्था. समाज सन्तोष नहीं मान सकता। मुनियों की संख्या कम हो रही है, इसलिए समाज के अग्रगण्य व्यक्तियों के लिए गंभीर विचार की जरूरत है।

वृहद बम्बई में श्रीसंघ और उपाश्रयों की संख्या बढ़ रही है। किन्तु समय ऐसा आ रहा है कि चातुर्मास के लिए साधु सन्त मिलनें मुश्किल हो रहे हैं। अतः श्रावक श्राविका शास्त्रों के ज्ञाता बनें तथा निश्चित समय पर आकर उपाश्रय खोलते रहें; इसलिए शास्त्राभ्यासार्थ विद्यालय स्थापित करने आवश्यक हैं। उत्तराध्ययन या अन्य सूत्रों का क्रमशः अभ्यास श्रावक श्राविकाओं को उपाश्रय में आकर करना चाहिए। इस प्रकार होने पर ही उपाश्रयों की सार्थकता सिद्ध होगी।

एक बात और समझने की है। शास्त्रों में हमें बहुत से उदाहरण ऐसे मिलते हैं कि महान् समृद्धिशाली व्यक्तियों ने क्षण भर में वैभव का परित्याग करके तप संयम के कठिनतम मार्ग से प्रयाण किया है। किन्तु आज की परिस्थिति बिल्कुल विपरीत है। आज तो एक साधन सम्पन्न व्यक्ति के पुत्र प्रपौत्र अच्छी तरह कमाने लग जायें तो भी परिग्रह पर से उसकी ममत्व भावना दूर नहीं होती। वह सेवा के क्षेत्र में आगे नहीं आता। एक तरफ तो हम संस्थाओं की वृद्धि करते चले जा रहे हैं और दूसरी ओर यदि ऐसे सेवाभावी व्यक्ति सेवा-क्षेत्र में न उतरें तो कैसे काम चलेगा।

मगरमच्छ के आंसू या अंतर के उद्‌गार

पं० मुनि श्री किसनलालजी म. को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आयोजित सभा में अनुभवी वक्ताओं और श्रोताओं ने अपने विचार प्रदर्शित किये। किन्तु वक्ताओं और श्रोताओं के मन में एक प्रश्न तो रह २ कर उठ रहा था कि ये सब बातें साकार रूप में सामने आयेगी या मगरमच्छ के आंसुओं जैसी बनी रहेंगी। इस बात का उत्तर समय पर दिया जायेगा, ऐसा सोच कर सभाजन "भगवान महावीर के जय जयनाद" के साथ विसर्जित हुए।

महाराष्ट्र मंत्री मुनिश्री किसनलालजी म. का देहावसान

हमें समाज को अवगत कराते हुए हार्दिक दुःख हो रहा है कि ज्ञानी, ध्यानी और संयम की आराधना में सदैव तत्पर वयोवृद्ध मंत्री मुनिश्री किसनलालजी म. सा. का ता. ३-१-६१ को इन्दौर में देहावसान हो गया है।

आप बहुत दिनों से अस्वस्थ थे परन्तु अपनी संयम की आराधना में सदैव तत्पर रहते थे। आपका शास्त्रीय ज्ञान सुविशाल था। कठिन से कठिन विषय को सरल सुबोध रीति से समझाने की शैली थी।

आप स्व. मुनिश्री नंदलालजी म. सा. के शिष्य थे। आपकी शिष्य परम्परा में मुनिश्री सौभाग्यमलजी म सा. आदि शास्त्रीय ज्ञान में पारगत वक्तृत्व कला में निपुण, और साहित्य सेवी शिष्य हैं।

आपका निधन श्रावक एवं श्रमणवर्ग के लिए गहरी क्षति है। आपके निधन से एक शास्त्रज्ञ प्रभावक वक्ता का ही अभाव नहीं हुआ परन्तु श्रमण वर्ग के ज्ञान दर्शन चारित्र की आगमानुकूल–परम्परा के संरक्षक का अभाव हो गया है।

आपके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये कामना करते हैं कि स्वर्गस्थ आत्मा चिरशांति, सुख को प्राप्त करें एवं हम में इतनी शक्ति हो कि आपके द्वारा प्रदर्शित ज्ञान दर्शन चारित्र की सम्यग् आराधना के मार्ग पर चल सकें।

संपादक–जैन प्रकाश

श्रमण संघ के एक मंत्री का वियोग

यह समाचार पढ़कर किसको शोक न होगा कि अपनी अस्वस्थता के कारण अनेक वर्षों से इन्दौर में विराजित श्रमण संघ के मंत्री मुनिश्री किसनलालजी म. का स्वर्गवास माघ कृष्णा २ मंगलवार को हो गया। आप बड़े ही शांत स्वभावी सन्त थे। आपने अपने जीवन में भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक धर्म प्रचार हेतु परिभ्रमण किया। शासन देव से प्रार्थना है कि दिवगंत आत्मा को शांति दे। आपके सुशिष्य श्री सौभाग्यमलजी म० बड़े विद्वान् और प्रसिद्ध वक्ता है। आपने मंत्री मुनि की जो सेवा की वह अनुकरणीय है।

संपादक, तरुण जैन

मंत्री मुनिश्री किसनलालजी म. सा. की अन्तिम यात्रा का शाही जुलूस

इन्दौर—मंत्री मुनिश्री किसनलालजी म. सा. के शांत होने की खबर सुनते ही ४ जनवरी को सैंकड़ों की संख्या में नर नारी प्रात:काल से ही दर्शनार्थ राजमोहल्ला स्थानक में जाने लगे। दिनाँक ३ जनवरी को ही स्थानीय श्रीसंघ के तार टेलीफोन द्वारा सब स्थानों पर सूचना कर देने से दिनांक ४ को ११-१२ बजे तक बाहर के आगत हजारों भाई बहनों ने भी दर्शन कर श्रद्धांजलि अर्पित की। ठीक ११॥ बजे राजमोहल्ला से महाराज श्री की शवयात्रा का जुलूस निकला। आगे सजे सजाये घोड़ों की कतारें चल रही थी, फिर हाथी पर केशरिया झण्डा था, उसके बाद बैंड थे, जो धार्मिक गीतों को बजा रहे थे। उसके बाद जुलूस था जिसमें हजारों की संख्या में स्वधर्मी भाई सम्मिलित थे। उसके बाद महाराश्री की वैकुण्ठी थी, अन्त में हजारों की संख्या में महिलायें चल रही थी।

यह जुलूस राजमोहल्ला से रवाना होकर इतवारिया, क्लाथ मार्केट, सीतलामाता बाजार, छोटा, बड़ा सराफा, राजवाड़ा, कृष्णपुरा, तोपखाना, जेलरोड़ होता हुआ देवास घाट स्मशान में ३ बजे पहुँचा। मार्ग में सैकड़ों बार रेजगी की बौछार हुई। यह जुलूस १ मील से भी लम्बा था। मारोठिया, छोट सराफा, बड़ा सराफा, कृष्णपुरा, क्लाथ मारकेट बन्द रखे गये, तथा स्वधर्मी बन्धुओं ने अपना अपना कारोबार बन्द रखा। मार्ग के दोनों बाजू जहां से भी जुलूस निकला हजारों की संख्या में दर्शकों ने महाराजश्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। करीब ३॥ बजे महाराजश्री के शव की दाह क्रिया सम्पन्न की गई।

मा० नाहर, इन्दौर

मंत्री मुनिश्री किसनलालजी महाराज

जैन जगत् के उज्ज्वल रत्न, भारत के महान संत श्रमण संघ के मंत्री श्री किसनलालजी महाराज का ता. ३-१-६१ को सायं ५-४५ पर देहावसान हो गया। वृद्धावस्था के कारण आप विगत चार वर्षों से इन्दौर में विराजित थे किन्तु विगत १० महीनों से काफी अस्वस्थ थे और तीन बार तो बीमारी ने प्रबल आक्रमण किया। फिर भी शासनदेव की कृपा से आप इससे बच गये। किन्तु ता. ३-१-६१ को प्रातः ९ बजे से आपकी शारीरिक स्थिति बिगड़ती चली। शीत और कफ की प्रबलता के कारण श्वास लेना भी दूभर हो गया अतः आपको सागारी संथारा करा दिया गया। पश्चात् संध्या को चार बजे फिर श्वास का प्रबल दौरा चालू हो गया और सूर्य अस्त होने के साथ जैन जगत का ज्योतिर्मान सूर्य अस्त हो गया। इधर समाचार मिलते ही इन्दौर संघ के प्रमुख कार्यकर्तागण आ पहुँचे। कुछ ही क्षण में यह घटना सारे शहर में बिजली सी फैल गई। और इन्दौर के नागरिक गुरुदेव के अंतिम दर्शन करने के लिए उमड़ पड़े।

इन्दौर संघ ने तार और टेलीफोन द्वारा मध्य भारत एवं दूसरे प्रमुख नगरों में इस दुःखद घटना की सूचना दे दी। सूचना मिलने के दो घंटे बाद से ही लोगों का आवागमन चालू हो गया। सूर्योदय होते-होते तो बहर के एक हजार नर नारी एकत्रित हो गये और ग्यारह बजने के साथ वह संख्या दो हजार तक पहुँच गई। इधर स्थानीय नरनारी भी प्रातःकाल से दर्शनों के लिए चले आ रहे थे। साढ़े ग्यारह बजते ही गुरुदेव के भौतिक देह को करीब डेढ़ हजार के खर्च से तैयार की गई जरी की पालकी में बिठाया गया। शव यात्रा बड़े ठाट बाट से निकाली गई (देखने वाले बड़े बूढ़ों के मुँह से भी निकल पड़ा कि ऐसी शवयात्रा इन आंखों से कभी नहीं देखी।

क्लाथ मार्केट, सराफा, चांदी बाजार एवं नगर के अन्य प्रमुख बाजार बन्द रखे गये।

रात्रि को महावीर भवन में श्री हस्तीमलजी सा. भटेवरा की अध्यक्षता में शोक सभा हुई। जिसमें भंडारीजी सुगनमलजी सा. एवं नगर के प्रतिष्ठित सज्जनों के साथ सैकड़ों नर नारी उपस्थित थे। मध्य भारत के भूतपूर्व शिक्षा मंत्री श्री मनोहरसिंहजी मेहता, श्री बद्रीलालजी वकील आदि ने गुरुदेव के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक प्रस्ताव पास किया। पश्चात् श्री हस्तीमलजी सा. भटेवरा ने घोषणा की कि जैन भवन जहाँ कि श्रद्धेय गुरुदेव विराजित थे, गुरुदेव की स्मृति में उसका नाम आज से "श्रीकृष्ण जैन मन्दिर" रहेगा।

स्वर्गवास के समय प्रवर्तनीजी श्री राजकुंवरजी म. श्री धनकुंवरजी म. श्री केसर कुंवरजी म. एवं गुजराती व्याख्यात्री सती श्री आनन्दीबाई कुल ठा. १५ उपस्थित थे। प्रसिद्ध वक्ता पं. श्री सौभाग्यमलजी म. ठा. ७ तो चातुर्मास में थे ही। इधर कविरत्न श्री सूर्यमलजी म. भी उज्जैन से पधार गये थे। साथ ही पं. नगीनचंद्रजी म. प्रियवक्ता विनय मुनिजी म शास्त्री मनोहर मुनिजी म. ठा. ३ बम्बई का चातुर्मास समाप्त कर शीघ्र विहार करते हुये डेढ़ मास में गुरुदेव के पास पहुँच गये थे।

मंत्री मुनिश्री किसनलालजी म. स्वर्गीय शांत मूर्ति आचार्य श्री नन्दलालजी म. के प्रमुख शिष्य थे। आपने बाल्यावस्था में उनके पास चारित्र ग्रहण किया था। प्रवचनों में आपका आगमिक अध्ययन बोलता था। इसलिए आपके शास्त्रीय शैली के प्रवचन इतने सुन्दर और मधुर होते थे कि श्रोता हिल उठते थे। आगमों का अध्ययन जितना गंभीर था स्वभाव इतना ही मधुर था। आपके विनोदी स्वभाव में वह जादू था कि कोई भी व्यक्ति आपके निकट भारी मन लिए नहीं बैठ सकता था।

स्वाध्याय आपको काफी प्रिय थी। जब तक आँखों ने साथ दिया तब तक हर समय कोई न कोई पुस्तक आपके पास अवश्य रहा करती थी।

वर्द्धमान श्रमण संघ के सादड़ी अधिवेशन ने आपको मंत्री का पद दिया था और सोजत सम्मेलन ने आपको महाराष्ट्र मंत्री का पद दिया था। वयोवृद्ध होते हुए भी आपने जिस कुशलता पूर्वक पद भार वहन किया समाज और संघ की वह सेवा सचमुच अनुकरणीय है। आपने ६० वर्षों तक संयमी जीवन व्यतीत किया। संयम का रस आपके जीवन में ओतप्रोत हो गया था। संयम साधना इतनी प्रखर थी कि आपके उज्ज्वल चारित्र में एक भी काली रेखा नहीं थी। साथ ही साधना का सहज रस कषाय की मन्दता भी आपने काफी प्राप्त की थी। क्रोध तो इतना अल्प था कि शिष्यों को भी याद नहीं पड़ता कि आपने कभी क्रोध किया हो। सरलता और निष्कपटता की आप मानों प्रतिमूर्ति थे। आपका सौम्य चेहरा और दिव्य ललाट दर्शक के मन में सरलता की छाप अंकित कर देता था।

स्वभाव का माधुर्य वाणी में उतर आया था। पुण्यवान और गुणवान शब्द तो उनकी जीभ पर थे। सब के लिए उनके ये ही मधुर संबोधन थे। कष्ट सहिष्णुता आप में काफी थी। गत १० वर्षों से आप पाकर की व्याधि से तो पीड़ित थे ही किन्तु गत १० महीनों से तो आप पथारीवश थे। इन दिनों पैर में फोड़े भी हो गये थे। रोजाना ड्रेसिंग होता था। मार्मिक पीड़ा होने पर भी मुंह से उफ तक नहीं करते थे। जब कभी कोई आपसे पूछता तबियत कैसी है ? तो आप बोल पड़ते "अच्छी है, कोई तकलीफ नहीं है।" आपकी सहनशीलता चरम सीमा पर थी।

आपकी चारित्रिक उज्ज्वलता एवं स्वाभाविक मधुरता ने सबको आकर्षित कर लिया था। ऐसे तो आपने साठ वर्ष की दीक्षा पर्याय में

मालवा, राजस्थान, पंजाब, दक्षिण और महाराष्ट्र में आपकी प्रमुख विचरण भूमि रही। मद्रास में सर्व प्रथम आपका ही चातुर्मास हुआ। बम्बई में भी आपके नौ चातुर्मास हुए।

इस तरह श्रद्धेय शांतमूर्ति पं० मंत्री श्री किसनलालजी म० ने अपनी चारित्रिक प्रतिभा द्वारा भगवान महावीर के सन्देश को घर घर पहुँचाया और जीवन के अंतिम क्षण तक वीतराग के शासन की प्रभावना करते रहे। आज यद्यपि उनका भौतिक देह इस संसार में नहीं रहा किन्तु उनका अपार्थिव यशोमय देह प्रकाश किरण बन कर अमर है और जन जन के मन में प्रकाश किरण फैला रहा है।

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, इन्दौर

जैन समाज के महान सन्त का स्वर्गवास

ले०—मंत्री बाबूलाल वागरेचा श्रावक संघ, राजगढ़ (धार)

शांत स्वभावी, महान् गंभीर आत्मा, कवि काव्य कला विशारद, महाराष्ट्र मंत्री वयोवृद्ध पं. रत्न श्री किसनलालजी म. सा. का मध्य-प्रदेश के प्रमुख नगर इन्दौर में माघ कृष्णा २ ता. ३-१-६ , को मंगलवार के दि न सायंकाल को ६ बजे सूर्यास्त होते होते स्वर्गवास हो गया। पूज्य गुरुदेव के स्वर्गवास के समाचार सारे शहर में विजली की भाँति शीघ्र ही फैल गये। दर्शनार्थियों के आवागमन का तांता सा लग गया। मंत्री श्रीजी म. सा. के प्रधान शिष्य प्रसिद्ध वक्ता पं. श्री सौभाग्यमलजी म. सा. जो कि संवत २०१३ से ही आपकी सेवा मे लीन थे। आपका सेवा कार्य अवर्णनीय है। आप गुरु को सदैव ईश्वर कहकर पुकारते थे। मंत्री श्रीजी म. की तबीयत दिन व दिन खराब होती गई। आपने बीमारी में काफी परीषह सहन किया। आपश्री ने इतनी लंबी बीमारी

होते हुए भी कभी आह तक न निकाली। आप सदैव यही कहते कि तबियत ठीक है, कर्म बलवान है। आप दर्शनार्थी को हमेशा गुणवान पुण्यवान आदि मीठे शब्दों से सम्बोधित करते थे। आपने स्व० पूज्य श्री नंदलालजी म. सा. से सं. १६५८ में भगवती दीक्षा अंगीकार की थी और करीब ६० वर्ष तक संयमी जीवन आदर्श रूप से व्यतीत किया। आप शास्त्रों के ज्ञाता थे। आपकी श्रमण संघ-सेवा प्रशंसनीय है। आपकी हालत गंभीर देख कर कविवर्य पं० श्री सूर्य मुनिजी म. सा. आपके पास पधार गये थे। तथा बम्बई का चातुर्मास पूर्ण करके पं० श्री नगीन.मुनिजी व्याख्याता श्री विनय.मुनिजी आदि भी आपके पास शीघ्रता से पधार गये थे। सभी संतों ने खूब २ सेवा बजाई। आपश्री की मांडवी का दृश्य अनोखा था। करीब १५ हजार जन समूह शव-यात्रा में था। इंदौर शहर में यह पहला ही दृश्य था।

श्रावक संघ राजगढ़ को खबर मिलते ही मोटर द्वारा इन्दौर रवाना हो गये। हमारे यहां विराजित श्री चांदकुंवरजी म. ठा. ५ ने गुरुदेव के स्वर्गवास के समाचार पाकर काफी शोक प्रकट किया।

मंत्री श्रीजी म. सा. के स्वर्गवास से स्था. जैन समाज में बड़ी भारी क्षति हुई हैं जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में होनी मुश्किल है। स्वर्गीय आत्मा को चिरशांति प्रदान करे यही शासनदेव से प्रार्थना है।

श्री किशनलालजी म० की प्रशस्ति

स्रग्धरावृत्तम्

मुक्तो योऽभून्महात्मा विरतिपथधिया बन्धनाद्दुःखमूलान्
मुख्यो यः स्वीयवृन्दे समजनि नितरां स्वैर्गुणैः श्लाघनीयैः
मुक्ति यः पुण्यपुञ्जः करतलकलिताञ्चक्रिवान् ब्रह्मतेजाः
मग्नो यश्चात्मबोधे जयतु स च मुनिः कृष्णलालः श्रियेऽत्र ॥१॥

अर्थः–वैराग्य मार्ग में प्रवृति शील जो महात्मा सांसारिक बन्धन से मुक्त हुये–तथा सर्वजन प्रशंसनीय सुशील विनय औदार्य क्षमा शान्ति आदि जो सद्गुण हैं उनके द्वारा अपने समाज में विशेष रुप से जो मुख्य हैं, जिस मुक्ति प्राप्ति के लिये हरेक जिज्ञासु लालायित रहता है पुण्य पुञ्ज पञ्च महाव्रतधारी महातेजस्वी आपने मुक्ति को मानो अपने सुललित करतल में प्राप्त करली तथा अपने अध्यात्मिक ज्ञान में सदा जो लीन हैं, ऐसे मुनिराज श्री कृष्णलालजी महाराज इस अभिनव विचित्र संसार में सर्व प्राणीहित के लिये चिरकाल तक यशस्वी बनकर जीवत रहैं कीर्ति रूप से जयशील बने ॥१॥

निष्ठा यस्याऽस्ति धर्मे जिनगदिते सर्व जीवाऽवनाढ्ये
निन्दा नो यस्य वक्त्रे क्वचिदपि विमले श्वभ्रदा कर्ममूला
निद्रात्यागी श्रुतार्थऽभ्यसनमतिबलः पुण्यवर्त्म प्रचारी
नित्यं यः स्वक्रियास्थः प्रवचन निपुणो भाति जीयाच्चिरं सः ॥२॥

अर्थ—अहिंसा परमोधर्मः इस सिद्धान्त को परिपूर्ण रूप मानने से सर्व प्राणियों के रक्षा से माननीय तथा जिनेश्वर भगवन्तो से कथित जो अहिंसामय धर्म उसमें आपकी हमेशा विशुद्ध भावना रहती है, तथा कुत्सित कर्मों को बांधने वाली नरक में ले जाने वाली जो परनिन्दा है वह विमल मुखारविन्द में अणुमात्र भी स्पर्श नहीं करती मानो आप पर निन्दा को जानते ही नहीं आप निद्रा विजयी है तथा प्रतिक्षण आगम आदिसत् शास्त्रों के गूढ़तत्वाभ्यास में उनके सूक्ष्मार्थ विचार में बुद्धि का उपयोग करने वाले हैं तथा पुण्य याने पुण्य की भूमिका को समझा कर प्राणियों को पुण्य पथ प्रदर्शक हैं तथा साधु क्रिया में तल्लीन व्याख्यान देने में अतिकुशल जो श्री मुनिराज श्री कृष्णलालजी महाराज है और शोभित हैं आप दीर्घ जीवी बनें ॥२॥

राजत्पूर्णेन्दु–कान्ति–रतिपति–विजयी गुप्तिगोपी प्रतापी ।
रामाऽऽरामशोभी विगत भवभयः स्वान्त–चापल्य–हारी ॥
राजादि–प्राणिवर्गे निहितनिजयशा मानशैलेन्द्रः शाम्बः ।
राष्ट्रन्तः साधुचारी परजन हितषीःकृष्णलालऽस्तु भूत्यै ॥ ३ ॥

अर्थः—मेघादि आवरण दोषो से रहित जो पूर्ण चन्द्र उसके समान प्रकाशमान कामदेव विजयी त्रिगुप्ति रक्षक अतएव महा प्रतापी हमेशा प्रभु की आज्ञारूपी वाटिका में विचरणशील अतएव सर्वथा भय रहित मन के चापल्यादि दोष रहित राजा धनिक रङ्क आदि प्राणी मात्र में अपना समुज्वल यशकारी अभिमान रूपी पर्वत के विदारण में वज्र कल्प समस्त देशो में निर्विघ्न सानन्द सतत विहारी सर्व जन हितकारी श्री महात्मा कृष्णलालजी महाराज विश्व हित के लिये बने रहे । ॥ ३ ॥

जन्माऽऽसीद्यस्य पुण्यात्तरभवचरितात्पावने श्रेष्ठ वंशे
यस्मिं यो बाल–केलि निज–पर मुग्दः पद्मवक्त्र सुहासः

जन्म स्वं येन सद्यो मुनिपदधरताऽकारि साफल्यमेव
जन्मा स्यां भूतयेऽलं भवति च महतां भूतये सोस्तु कृष्णः

अर्थ—पूर्व जन्म मे उपार्जित अपूर्व पुण्य से अहिंसा धर्म शाली पवित्र श्रेष्ठ वंश में आपका जन्म हुआ कमल के समान मुखारविन्द मनोहर हास्य शोभित आप बाल्यवस्था में अपनी बाल लीला से कौटुम्बिक तथा अपर सज्जनों को अत्यंत सुखद हुये तथा मुनि पद को स्वीकार करने से आपने दुर्लभ मानव जन्म को सफल किया।

प्राय: करके इस धरा मण्डल में महापुरुषों का जन्म सर्व कल्याण के लिये होता है अत: श्रीकृष्णलालजी महाराज सर्व कल्याण कारक बने।

श्रीधः श्रीदः स्वयोगाचरणगत जनेभ्योऽत्र यः सिद्ध मन्त्रः
श्रीवांछीत्यागमानी परम गुरुवरः सत्क्रिया त्राणदक्षः
श्री राजच्छ्रेष्ठिऽर्चित चरणकजः स्वपरास्वात्मवृत्तिः
श्रीमान् श्रीकृष्ण योगी ! वितरतु सततं भद्रमस्यां समेषाम् ॥५॥

अर्थ:-आप स्वयं वैराग्य रूपी लक्ष्मी धारण करने वाले हैं परन्तु अपने योग बल से आश्रितजनो को अपार लक्ष्मीप्रद है अत: मन्त्र सिद्ध हैं। आप मुक्ति रूपी लक्ष्मी के अभिलाषी है अतः आप में त्याग की प्रधानता हैं आप शिष्य जनों के अज्ञान अन्धकार को दूर करने से श्रेष्ठ गुरूराज हो समय-समय पर शास्त्रानुकूल प्रदर्शित क्रियाओं के रक्षा करने में परम समर्थ है। लक्षाधीश कोटिपति आदि श्रेष्ठिगण आपके चरण कमलों में भ्रमरायित होते हैं अत: उनसे आप पूजित है सबको अपने आत्म समान मानने वाले हैं। ऐसे महायोगी श्रीकृष्णलालजी महाराज सर्व प्राणियों को निरन्तर कल्याण प्रदान करें ॥ ५ ॥

कृष्णार्थं प्राप्त कीर्तिः कृषति च सकलं यो जनाऽज्ञानराशिं,
कृष्णेऽपि द्वेषबुद्धिर्न भवति कदा तद्गुणादानहेतोः

कृष्णोऽसौ-कृष्ण बुद्धया भवति मतिमतां भेदभावः कदा-न
कृष्णाऽसौ लालयोगी ! सचिव पदयुतः स्याच्छ्रिये शासनस्य ।। ६।।

अर्थः—व्याकरण की रीति से जो अज्ञान को दूर करे उसको कृष्ण कहते हैं अतएव आपका नाम भी कृष्ण है नामार्थ के अनुकूल होने से आप अनेक भव्य प्राणियों को बोध प्रद है अतः अर्थानुकूल आपने सर्वत्र कीर्ति प्राप्त करली तथा सम्प्रदायवाद से भगवान कृष्ण में भी आपकी द्वेष बुद्धि नहीं कारण आप गुण ग्राही है अतः कृष्ण के अन्दर जो गुण हैं उनको आप सहर्ष स्वीकार करते हैं तो गुण ग्रहण हेतु से द्वेष भाव सर्वथा विलीन हो जाता है तथा यह कृष्ण है कृष्ण में कृष्ण बुद्धि होने से बुद्धि-शाली पुरुषों का थोड़ा भी भेदभाव नहीं होता सन्त पुरुष देव रूप होते हैं देवभाव से कोई माने तो अत्युक्ति नहीं । इस समय मन्त्री पद से विभूषित श्रीकृष्णलालजी महाराज शासन के कल्याण हेतु दीर्घ जीवी बने ।। ६ ।।

लाभा भो सन्ति लोके बहुविधविषयास्तत्र नो यस्य चेतो:
लाभश्चेद्यस्य चैको जिनचरणमतिः संघ सेवाऽमृतोकृत्या
लाभे नो यस्य विघ्नस्त्वभिमतविषयस्योच्चवृत्तेः कदाचित्
लाभोऽस्तु ज्ञानरार्दजयतु मुनिवरः प्रत्यहं येन मुक्तिः । ७।।

अर्थ—संसार में प्राणियों के फंसाने के लिये अनेक प्रकार की वस्तु है परन्तु धन धान्य पुत्र दारा यश प्रतिष्ठा आदि वस्तुओं के प्राप्ति में कभी भी आपकी मनोभिलाषा नहीं विशिष्ठ त्याग वृत्ति होने से मोक्ष प्राप्ति के निमित्त श्री जिनेश्वर भगवन्तो के चरणों में बुद्धि का उपयोग है तथा चतुर्विध संघ सेवा की भावना रहती है धन्य जीवन उच्च प्रवृति वाली आप इच्छित वस्तु के लाभ में कभी विघ्न नही होता । मन से जो इच्छा प्रादुर्भाव होती वह सिद्ध हो जाती (वाचि सिद्धिर्महात्मनाम्) महात्मा पुरुषों की वाणी में सिद्धि है आपकी अपने गतुर्मासे में सम्पूर्ण

ज्ञान का लाभ हो तथा आप जयवन्त हो और अन्त में ज्ञान द्वारा मुक्ति का लाभ हो तपोबल से सब वस्तु कर गत हो जाती है ॥ ७ ॥

लब्धा सा जैन दीक्षाऽखिल मलहरिणी येन पुण्यात्मनाऽत्र
लभ्यो यो भव्यभक्तैः शमगुण जलधिः सर्वप्राणि प्रपेयः
लग्नो यो मुक्ति सिद्धयै श्रुत विहित पथे दत्तचेताः सदान्तः
लक्ष्योऽसौ मोक्ष एव प्रभवति मनुजस्तत्रकश्चित् प्रयासी ॥८॥

अर्थः—आप परम पुण्यात्मा हो जो कि पाप विनाश शालिनी दीक्षा आपको प्राप्त हुई तथा शान्ति के समुद्र आप सर्व से दर्शनीय तथा लक्ष्य है सब आपका दर्शन कर सकते हैं देव राजा नेता आदियों का दर्शन तो सर्व को अलभ्य हैं परन्तु आपका दर्शन सबको लभ्य है अतः आप सबसे श्रेष्ठ हैं आप मुक्ति प्राप्ति के लिये हमेशा आगमावलोकन में तत्पर रहते हैं और आपका मुख्य लक्ष्य केवल एक मोक्ष ही है सिद्धि के लिये कोई यत्न करता हैं आप उनमें से एक हैं ॥ ८ ॥

जीवंतं यं जना वै प्रतिदिनमशुभभवच्छेदनाय स्मरन्ति
जीर्णाशा कर्मराशिः शुभ पथ गमनान्मन्त्रिणो यस्य दैवात्
जीर्णोऽपि प्राज्य शक्तिर्विचरति भुवने सर्व जीवोपकृत्यै
जीयात्स ग्रंथकर्ता शतमिह शरदां कृष्णलालो मुनीशः ॥९॥

अर्थः—जीवित अवस्था में भी आपको भव्य प्राणी अपने अशुभ कर्मों के विनाश के लिये हमेशा स्मरण करते हैं। परन्तु सद् भाग्य से मन्त्री मुनि आपकी संपूर्ण आशायें मानो जीर्ण हो गई आशाओं को जीर्ण होने से कर्म राशि का उन्मूलन होना यथार्थ ही है कारण आप हमेशा उत्तम पथ का आश्रय लेते अतः सत्कर्मा होने से पापादि का समाचार कहां ?

श्रीमज्जिनेन्द्र-पथ भावुक-भाव-भाजां,
चारित्ररत्नसुषमा किल भूषितानाम्
श्री कृष्णलाल गुणराजि महामुनीनां,
स्याद्वन्दना मम हृदाचरणाम्बुजेषु ॥ १ ॥

अर्थः—श्री जिनेश्वर भगवन्तों के पथ पर भव्य भाव से चलने वाले तथा चारित्र रूपी उत्तमोत्तम जो रत्न उसकी शोभा से भूषित शरीर वाले तथा उत्तम गुण पंक्ति से सर्वत्र विदित जो श्री कृष्णलालजी महाराज है उनके चरणारविन्द में वन्दना स्वीकार हो ॥ १ ॥